चमकता लाल सितारा

ली शिन-थ्येन

चमकता लाल सितारा

ली शिन-थ्येन

आवरण एवं रेखांकन : रामबाबू

अनुराग ट्रस्ट

मूल्य : 55 रुपये

पहला भारतीय संस्करण : 2005

पुनर्मुद्रण : जनवरी, 2010

प्रकाशक

अनुराग ट्रस्ट

डी - 68, निरालानगर

लखनऊ - 226020

लेजर टाइप सेटिंग : कम्प्यूटर प्रभाग, राहुल फाउण्डेशन

मुद्रक : क्रिएटिव प्रिण्टर्स, 628/एस-28, शक्तिनगर, लखनऊ

चमकता लाल सितारा

एक

मेरा जन्म च्याङशी प्रान्त के पहाड़ी इलाके में ल्यूशी गाँव में हुआ था। मेरा नाम फान चन-शान है। लेकिन मेरे माँ-बाप मुझे प्यार से तुङ-च कह कर पुकारा करते थे। 1932 की बात है। मैं पाँच वर्ष का था। बड़ों के मुँह से सुना करता था कि वे क्रान्ति कर रहे हैं। मेरे पिता फान शिङ-ई भी क्रान्ति करने वालों में शामिल थे। वे एक छापामार-दल के नेता भी थे। मैं बहुत छोटा था, इसलिए नहीं समझ पाता था कि क्रान्ति करने का मतलब क्या होता है। एक दिन मेरे पिता की अगुवाई में तलवारों और लाल फीतों वाली बरछियों से लैस छापामार दल ने हू हान-सान नामक एक ऐसे स्थानीय निरंकुश जमींदार के घर पर धावा बोल दिया जो हमारे गाँव के लोगों पर बहुत जुल्म ढाता था। इस दुष्ट जमींदार को वे लोग घर से बाहर घसीट लाये। उन्होंने उसे रस्सी से बाँध दिया और कागज की ऊँची नुकीली टोपी पहना कर गाँवभर में घुमाया। बाद में, मुझे मालूम हुआ कि उन्होंने हू की जमीन हम गरीब किसानों में बाँट दी ताकि हमारे पास जोतने को जमीन और खाने को काफी अनाज हो जाए। इस घटना से मैंने यह समझा कि क्रान्ति करने का मतलब है जमीन को गरीबों में बाँटना ओर जमींदारों को कागज की ऊँची नुकीली टोपी पहनाकर गाँवभर में घुमाना।

मेरे पिता जी एक साधारण किसान थे। क्रान्ति के बारे में उन्हें ऊ भइया ने बताया था।

ऊ भइया पास के झड़बेरी-टीला गाँव के स्कूल में अध्यापक थे। मगर वे रहते हमारे बिल्कुल पड़ोस में थे। एक दिन दोपहर के वक्त मैं खेत की मुंडेर पर एक पेड़ के नीचे बैठा पिताजी को खेत जोतते देख रहा था कि ऊ भइया वहाँ आ पहुँचे। जुताई के काम में लगे हुए पिताजी को पसीने से तर-बतर देखकर वे बोले : "शिङ-ई चाचा, थोड़ा सुस्ता लो!"

"नहीं, अभी नहीं," पिताजी ने जवाब दिया। "मैंने यह बैल उधार लिया है और दोपहर के भोजन से पहले मुझे इस खेत की जुताई पूरी करनी है।" और वे फिर से जुताई में जुट गए।

"पलभर के लिए रुको तो, चाचा," ऊ भइया ने आग्रह किया। "मुझे आपसे कुछ कहना है।"

पिताजी रुक गए और उनके पास जाकर बोले, "कहो, क्या कहना है?"

"हमने झड़बेरी-टीला गाँव में किसानों के लिए एक रात्रि-स्कूल खोल दिया है। आपको वहाँ जाकर पढ़ना चाहिए।"

"क्या कहा?पढ़ना चाहिए?मुझे?ना बाबा ना!" पिताजी ने हल सम्भालते हुए कहा। "मैं तो अपने परिवार का पेट तक नहीं पाल सकता। भला स्कूल कैसे जा सकता हूँ?"

ऊ भइया पिताजी की बांह पकड़ कर बोले, "वह ऐसा स्कूल नहीं जहाँ सिर्फ पढ़ना-लिखना सिखाया जाता है। वहाँ देश-विदेश के ताजा हालात के बारे में भी बताया जाता है। आप वहाँ क्यों नहीं जाते?हम किसानों के सीखने को वहाँ बहुत-कुछ है।"

पिताजी ने दिलचस्पी लेते हुए पूछा, "क्या वहाँ यह भी सिखाया जाता है कि हम अपना दुख-दर्द कैसे दूर कर सकते हैं?"

"क्यों नहीं, इसीलिए तो यह स्कूल खोला गया है," ऊ भइया ने अपने दोनों हाथ हिलाते हुए कहा। "जिससे मजदूर व किसान उठ खड़े हों और दुनिया को बदल डालें।"

"अब वक्त आ गया है कि दुनिया में तब्दीली लाई जाए।" पिताजी ने कमर सीधी की और अपने माथे से पसीने की बूँदें पोंछ डालीं। पुरजोर आवाज में उन्होंने अपनी बात जारी रखी, "हम खेत पर काम करते हैं, मगर हमारे पास जुताई के लिए बैल तक नहीं, अपने टूटे-फूटे घरों की मरम्मत करने के लिए पैसे तक नहीं। मई का महीना आने से पहले ही हर साल हमें अपनी फसल पकने से पहले जमींदारों के पास रेहन रखनी पड़ती है। ऐसी हालत हमेशा नहीं चल सकती।"

"आप बिल्कुल ठीक कह रहे हैं," ऊ भइया ने सहमति प्रकट की। "कामरेड माओ त्से-तुङ ने एक साथी हमारे यहाँ भेजा है। हमें दक्षिणी पहाड़ के दूसरी तरफ के लोगों की मिसाल पर चलना चाहिए—स्थानीय निरंकुश जमींदारों का तख्ता पलट देना चाहिए और जमीन का बँटवारा कर देना चाहिए। आज रात आप स्कूल जरूर आइए।"

कामरेड माओ त्से-तुङ का नाम सुनते ही पिताजी का चेहरा खिल उठा। "जरूर आऊँगा," उन्होंने वायदा किया, और फिर से जुताई के काम में लग गए।

उस रात पिताजी और ऊ भइया एक साथ रात्रि-स्कूल गए। इसके बाद पिताजी रोजाना स्कूल जाते रहे। जल्दी ही उन्होंने क्रान्ति के बारे में बहुत कुछ सीख लिया और दूसरों को भी बताने लगे। उन्होंने तलवार चलाना और राइफल चलाना भी सीख लिया। कुछ समय बाद उन्होंने हमारे गाँव में लाल रक्षकों का एक दस्ता संगठित

कर लिया। उन्हें इसका दल-नेता चुन लिया गया। इस प्रकार उन्होंने गरीब किसानों का नेतृत्व करके स्थानीय निरंकुश जमींदारो का तख्ता पलट दिया और जमीन का बँटवारा कर दिया।

लाल रक्षकों का दल-नेता बनने के बाद, पिताजी में बड़ी तब्दीली आ गई। माँ हमेशा मुस्कराती रहती थीं और खुशी-खुशी पिताजी की हर तरह से मदद करती रहती थीं। वे बड़ी व्यस्त रहने लगीं। जब भी वे किसी काम से जातीं, मैं हमेशा उनके पीछे-पीछे लगा रहता। कभी-कभी वे कहती थीं, "तुम छाया की तरह मेरे साथ लगे रहते हो। पड़ोस में जाकर या-च के साथ खेलो!" या-च- ऊ भइया का भतीजा था। वह मेरी ही उम्र का था और हम दोनों एक साथ खेला करते थे।

एक दिन की बात है। माँ फौज के वास्ते जूते बनाने के लिए महिलाओं को संगठित करने कहीं बाहर गई हुई थीं। मैं या-च के साथ खेलने चला गया। हम दोनों मिलकर गाना गाने लगे, जिसे हमने बड़ों से सीखा था :

चमकता लाल सूरज आसमान में उग रहा है,
चिङकाङ पहाड़ों में
अध्यक्ष माओ का आगमन हुआ है,
इन्कलाब के लिए,
मजदूरों और किसानों की रहनुमाई करते हुए।
गरीब मेहनतकश लोग उठ खड़े हुए हैं—
निरंकुश जमींदारों का नाश हो!
जमीन का बँटवारा करो!

आज हर चेहरे पर
नई मुस्कान खिल उठी है।

गाना गाते ही मुझे वह घटना याद आ गई जब जमींदार हू हान-सान को कागज की ऊँची नुकीली टोपी पहनाकर गाँवभर में घुमाया गया था।

"तुम जमींदार बन जाओ," मैंने या-च से कहा, "मैं तुम्हें बाँध कर गाँवभर में घुमाऊँगा।"

"इसके बजाय मैं तुम्हें बाँध कर गाँवभर में घुमाऊँगा," या-च बोला।

"नहीं, जमींदार तुम बन जाओ। मैं एक रस्सी लाता हूँ।" मैंने जिद की, दौड़कर भीतर से रस्सी ले आया और अपने दोस्त का बाजू पकड़ लिया।

"मैं जमींदार नहीं बनूँगा, हरगिज नहीं बनूँगा।" या-च ने विरोध किया। उसने रस्सी का एक सिरा खींच कर मुझे बाँधने की कोशिश की। मैंने उसे जोर का धक्का दिया ओर वह धड़ाम से नीचे गिर पड़ा। रोता-चिल्लाता "माँ! माँ!" पुकारता हुआ वह घर की ओर दौड़ा।

गलती मेरी थी। यह मैं जानता था। पिताजी हमेशा मुझे समझाते रहते थे कि दूसरे बच्चों को हरगिज डराना-धमकाना नहीं चाहिए। और तभी पिताजी वहाँ आ गए। या-च के आँसू पोंछते हुए उन्होंने पूछा कि मामला क्या है।

"यह मुझे जमींदार बनाना चाहता है और मैं नहीं बनना चाहता!" या-च ने शिकायत की। पिताजी मन ही मन हँसे और उन्होंने या-च को गोद में उठा लिया। "तुम जमींदार क्यों नहीं बनना चाहते?"

"जमींदार लोग बुरे होते हैं," या-च ने जवाब दिया।

"बिल्कुल ठीक! जमींदार लोग अच्छे नहीं होते," पिताजी ने हँसते हुए कहा।

तभी ऊ भइया भी जा पहुँचे। उनका चेहरा बड़ा गम्भीर था। 'हू हान-सान हमें चकमा देकर निकल भागा है," उन्होंने पिताजी से कहा।

"क्या सचमुच निकल भागा है?" पिताजी की आँखों में गुस्सा झलक उठा। उन्होंने या-च को गोद से उतार दिया और अपनी माउजर पिस्तौल निकाल ली। "कहाँ निकल भागा है वह पाजी?मैं उसे अभी पकड़ लाता हूँ।"

ऊ भइया ने सिर हिलाते हुए कहा, "शायद रात में निकल भागा है। अब तक काउन्टी-केन्द्र में पहुँच गया होगा।"

पिताजी गुस्से में पैर पटकते हुए बोले : "अगर वह भाग गया तो यह हमारे लिए अच्छा नहीं होगा।"

पिताजी की बात का क्या मतलब है, मोटे तौर पर मैं समझ रहा था। जमींदार हू के पास सैकड़ों मू जमीन थी ओर उसके घर में गरीबों के खून-पसीने की कमाई का इतना ज्यादा अनाज था कि उसका सारा परिवार जिन्दगी भर खा सकता था। उसका एक लड़का श्वेत रक्षकों के संगठन में शामिल था। जमींदार हू आसपास के इलाके में सबसे निरंकुश जमींदार था। उसे तो तभी गोली मार दी जानी चाहिए थी जब उसे गाँवभर में घुमाया

7 चमकता लाल सितारा

गया था। उसे आखिर क्यों भाग निकलने दिया गया?"

"हम लोगों ने जबदस्त लापरवाही दिखाई है," ऊ भइया ने स्वीकार किया। "हमने एक भेड़िए को भाग निकलने दिया।"

पिताजी ने अपनी बन्दूक का सेफ्टी-बटन दबाया। "वह चाहे जहाँ भी गया हो, मैं उसे जरूर पकड़ लाऊँगा," यह शपथ होकर वे चलने लगे।

"अब इसके लिए वक्त नहीं है," ऊ भइया ने पिताजी का हाथ पकड़ते हुए उन्हें समझाया। "श्वेत रक्षक फङ्काङ गाँव पर हमला कर रहे हैं। ऊपर की कमान ने हमारे लाल रक्षकों से कहा है कि वे क्वेइशी नामक स्थान पर दुश्मन को रोकें।" उन्होंने आदेश-पत्र पिताजी को दिखा दिया।

"बहुत अच्छा," आदेश-पत्र पढ़ने के बाद पिताजी बोले। "हम लोग फौरन यहाँ से कूच कर देंगे।" और वे सीधे लाल रक्षकों के सदर-मुकाम में जा पहुँचे।

फङ्काङ गाँव पर होने वाली गोलाबारी की आवाज हमारे गाँव में सुनाई पड़ती थी। जब भी गोली चलने की आवाज आती, मैं अपनी माँ से पूछता, "माँ, क्या यह गोली पिताजी ने चलाई है?"

माँ सिर हिलाकर कहतीं "हाँ," और मैं बेहद खुश होकर सोचता : पिताजी अब तक बहुत से श्वेत रक्षकों को मौत के घाट उतार चुके होंगे।

अगले दो दिनों में माँ बहुत व्यस्त हो गईं। वे लाल सेना के घायल सिपाहियों को मोर्चे से गाँव में लाकर उनकी तीमारदारी करने के काम में अन्य महिलाओं का हाथ बटाने लगीं उन्हें खाना खिलाने और उनकी सेवा करने में वे इतनी व्यस्त हो गईं कि रात को घर भी नहीं लौट पाईं।

तीसरे दिन सबेरे मैं और माँ सुबह का नाश्ता कर रहे थे कि ऊ बूआ आ गईं। उन्होंने माँ के कान में कुछ फुसफुसाया जिसे सुनते ही माँ कटोरा छोड़कर झटपट बाहर चली गयी। मैं भी उनके पीछे-पीछे जमींदार हू के अहाते के अन्दर उसकी विशाल हवेली के पूर्वी हिस्से में जा पहुँचा। पिताजी वहाँ एक उखाड़े हुए किवाड़ पर लेटे हुए थे जिसे अस्थायी रूप से पलँग बना दिया गया था। हमें देखते ही वे उठ बैठे। वे बड़े दुबले और कमजोर नजर आ रहे थे।

"क्या ज्यादा चोट लगी हैं?" माँ ने चिन्ता प्रकट करते हुए पूछा।

"ज्यादा नहीं है। बायीं टाँग में एक गोली लग गई है।" पिताजी ने करवट बदली और अपनी घायल टाँग मोड़ ली। पायजामे में खून के धब्बे देखकर मैं रोने लगा।

"रोने की क्या जरूरत है?" पिताजी ने मुझे डाँटा।

मैंने आँसू रोकने की कोशिश की, पर रोक न सका। इसलिए माँ के कपड़े में मुँह ढककर सुबकियाँ लेने लगा। ज्योंही माँ ने पिताजी के पायजामे को मोड़ा, मैंने देखा कि नीचे बँधी हुई पट्टी भी खून से तर हो गई है। लाल सेना के एक डाक्टर ने पट्टी उतारने में माँ की मदद की और घाव का निरीक्षण किया।

"हमें घाव से गोली बाहर निकालनी पड़ेगी, दल-नेता फान," डाक्टर ने कहा।

"निकाल दीजिए," पिताजी ने दर्द के बावजूद फीकी हँसी हँसते हुए कहा। "वहाँ पर यह मेरे किसी काम की नहीं।"

डाक्टर ने घाव पर फुरेरी रखी और गोली निकालने की तैयारी कर ली। तभी बगल के कमरे में एक और घायल साथी लाया गया। मरीज की कराह सुनकर डाक्टर उसे देखने गया। लौटने पर जब पिताजी ने पूछा कि क्या हुआ, तो उसने बताया कि अन्य साथी घायल हो गया है और उसका भी आपरेशन करना पड़ेगा।

"क्या दर्द दूर करने के लिए उसे इंजेक्शन नहीं दिया जा सकता?" पिताजी ने पूछा।

डाक्टर ने सिर हिला दिया। "हमारे पास अब इंजेक्शन का सिर्फ एक ही एम्प्यूल बाकी रह गया है," यह कहते हुए उसने एम्प्यूल हाथ में उठा लिया, जिससे यह मतलब निकलता था कि सिर्फ पिताजी को लगाने के लिए ही इंजेक्शन बाकी रह गया है।

पिताजी ने उसे रोका। "मेरा घाव तो सिर्फ मामूली सी खरोंचभर है। इंजेक्शन की मुझे जरूरत नहीं। यह उस मरीज को लगा दीजिए।"

बगल के कमरे से फिर कराहने की आवाज आई डाक्टर क्षणभर के लिए असमंजस में पड़ गया। "लेकिन आपके आपरेशन में उससे ज्यादा वक्त लगेगा, दल-नेता फान," उसने समझाया। "सुन्न करने वाले इंजेक्शन की आपको ज्यादा जरूरत है।"

"मैं तो साँड़ की तरह मजबूत हूँ," पिताजी ने जवाब दिया, "और चाहे जितनी देर लगे आपरेशन की तकलीफ बर्दाश्त कर सकता हूँ। यह इंजेक्शन उसे दे दीजिए। जल्दी कीजिए!"

डाक्टर ने माँ की तरफ देखा। माँ कुछ न बोलीं और उन्होंने अपना मुँह दूसरी तरफ फेर लिया।

"डाक्टर से कहो कि यह इंजेक्शन उस साथी को दे दें," पिताजी के माँ से कहा। माँ ने पिताजी की तरफ देखा और सिर हिलाकर डाक्टर से कहा, "इसे दूसरे साथी को दे दीजिए।"

इंजेक्शन बगल के कमरे में पड़े घायल साथी को दे दिया गया और शीघ्र ही उसका कराहना बन्द हो गया। जब डाक्टर लौटा तो पिताजी ने माँ से कहा, "तुङ-च को बाहर ले जाओ।"

माँ मुझे लेकर आँगन में एक दालचीनी के पेड़ के नीचे पहुँच गईं। मुझे वहाँ रुकने को कहकर वे खुद अन्दर वापस लौट गईं। उनके आदेश की अवहेलना करने की मुझे हिम्मत न हुई, लेकिन मैं एक नजर देखना चाहता था कि आखिर अन्दर हो क्या रहा है। इसलिए चुपके से दरवाजे पर पहुँच गया, जिसे थोड़ा-सा खुला छोड़ दिया गया था। मैंने झाँक कर देखा, डाक्टर पिताजी की टाँग से गोली निकालने की कोशिश कर रहा है। घाव से खून टपक रहा था और पिताजी ने चेहरे से पसीना बह निकला था। उन्होंने दाँत भींच लिए और साँस रोक ली, लेकिन उनके मुँह से उफ तक न निकली। मैं रोना चाहता था। लेकिन पिताजी ने आँखों से इशारा करके रोने को मना किया। और तब उन्होंने संकेत करके मुझे अपने पास बुलाया। ज्योंही मैं आगे बढ़ा, मैंने तामचीनी की ट्रे में किसी धातु के टुकड़े के गिरने की आवाज सुनी। पिताजी ने हँसते हुए पूछा, "निकल गई?"

"हाँ, निकल गई?" डाक्टर ने पिताजी का हाथ अपने हाथ मे लेते हुए कहा। "आप वाकई बड़े मजबूत हैं दल-नेता फान! आपने एक बार उफ तक न की।"

"जरा मुझे गोली तो दीजिए" पिताजी ने कहा।

डाक्टर ने गोली उठाई और उसे साफ करना चाहा।

"इसे साफ न कीजिए," पिताजी ने कहा। "मैं इसे खून में सनी हुई ही लेना चाहता हूँ।"

डाक्टर ने खून से सनी गोली पिताजी के हाथ में रख दी, उनके घाव की पट्टी की और वह चला गया।

पिताजी ने माँ से कहा कि वे मुझे उनके करीब ले जाएँ। गोली को मेरी हथेली पर रखते हुए उन्होंने पूछा, "जानते हो बेटा, यह गोली कहाँ से आई है?"

"श्वेत रक्षकों की बन्दूक से," मैंने जवाब दिया।

पिताजी ने गोली की तरफ देखा और तब मेरी तरफ देखते हुए बोले, "श्वेत रक्षकों ने हमारा बहुत-सा खून बहाया है। हमें क्या करना चाहिए?"

"बन्दूक उठाकर हमें भी उनके साथ वैसा ही करना चाहिए।"

"बिल्कुल ठीक," पिताजी ने मेरी पीठ थपथपाते हुए कहा। "याद रखो, जब तुम बड़े हो जाओ और अगर श्वेत रक्षक तब भी बचे रहें, तो तुम्हें उनके खिलाफ लड़ाई लगातार जारी रखनी चाहिए।"

मैंने गोली को सावधानी से पकड़ लिया और पिताजी की बात को मन में दोहराने लगा। मैंने पूछा, "जब डाक्टर ने गोली बाहर निकाली तो क्या आपको दर्द नहीं हुआ?"

"क्यों नहीं, दर्द अवश्य हुआ," पिताजी ने जवाब दिया।

"तो आप चिल्लाए क्यों नहीं?"

"अगर मैं चिल्लाता, तो भी दर्द तो उतना ही होता। मगर मैंने अपनी चीख बाहर निकलने ही न दी ओर अपना दर्द भूल गया," पिताजी ने जवाब दिया।

बड़ी मजेदार बात है, मैंने सोचा। अगर आप दर्द को महसूस न करें, तो दर्द गायब हो जाएगा! क्या सचमुच ऐसा हो सकता है?मैंने मन में सोचा। माँ को लगा, मैं पिताजी को ज्यादा परेशान कर रहा हूँ। इसलिए

उन्होंने मुझे वहाँ से हटाते हुए कहा, "इतने ज्यादा सवाल न पूछो। पिताजी को आराम करने दो।"

कुछ दिन आराम करने के बाद पिताजी फिर से चंगे हो गए। और तब ऊ भइया उनके लिए काम लेकर आ पहुँचे। लाल सेना को क्रान्तिकारी आधार-क्षेत्रों से हटना था और पिताजी को लाल सेना के मुख्य सैन्य-दल में शामिल होकर लड़ाई के मोर्चे पर जाना था।*

माँ इन दिनों और ज्यादा व्यस्त हो गईं। वे रोजाना रात को देर तक जूते बनाती थीं। अब तक तीन जोड़े बना चुकी थीं। मैं हैरान था कि इतने ज्यादा जोड़े बनाकर वे क्या करेंगी।

एक रोज रात में माँ और पिताजी की आवाज सुनकर मैं जाग पड़ा। पिताजी कई दिन से घर नहीं आए थे। आखिर आज रात क्यों आए हैं?मैंने माँ को यह कहते सुना, "तुम कब तक बाहर रहोगे?वापस कब लौटोगे?"

"जब तक जापानी हमलावरों को शिकस्त नहीं दे देंगे," पिताजी ने जवाब दिया।

"मुझे और तुङ-च को भी अपने साथ ले चलो। मैं भी कुछ काम कर सकती हूँ।"

"असम्भव। यह हमारी नियमित सेना की लम्बी मुहिम है। रोजाना कूच करना होगा, रोजाना लड़ना होगा।"

"जब लाल सेना यहाँ रहती है, तो हमारे मन में इतमीनान रहता है। जब आप लोग चले जाएँगे, तो हम लोग रहनुमाई के लिए आखिर किसकी ओर देखेंगे," माँ ने कहा।

"लाल सेना जा रही है, लेकिन पार्टी-संगठन और सोवियत सरकार तो नहीं जा रही। तुम लोग क्रान्ति का काम जारी रख सकते हो।" पिताजी ने आगे कहा, "बेशक, परिस्थिति बदलने पर क्रान्ति का स्वरूप भी बदल जाएगा।"

एक क्षण के लिए रुकने के बाद उन्होंने अपनी बात जारी रखी, "मैंने ऊ भइया से तुम्हारे पार्टी में शामिल होने के बारे में बात कर ली है। तुम्हारा नाम तजवीज करने को वे तैयार हैं।"

"क्या वे नहीं जा रहे?"

"नहीं, वे यहीं रहकर पार्टी का काम सम्भालेंगे।"

"जब तक यहाँ पार्टी रहेगी, तब तक हमलोगों को पता रहेगा कि रहनुमाई के लिए किसकी ओर देखें।"

"जब लाल सेना उत्तर की तरफ चली जाएगी, तो यहाँ का संघर्ष शायद पहले से ज्यादा कठिन और तीव्र हो जाएगा," पिताजी ने चेतावनी दी। "तुम्हें बड़ी हिम्मत से काम लेना होगा।"

---

* इसका मतलब था लम्बे अभियान में शरीक होना। अक्टूबर 1933 में च्याङ काई-शेक ने लाल आधार-क्षेत्रों के खिलाफ "घेरा डालने और विनाश करने" की अपनी पाँचवीं प्रतिक्रान्तिकारी मुहिम छेड़ दी जिसमें उसके दस लाख सैनिकों ने भाग लिया। "घेरा डालने और विनाश करने" की पाँचवीं मुहिम के खिलाफ लाल सेना द्वारा एक साल से ज्यादा समय तक वीरतापूर्वक जवाबी मुहिम चलाई गई लेकिन वाङ मिङ की "वामपंथी" अवसरवादी कार्यदिशा के गलत नेतृत्व के कारण, जो अध्यक्ष माओ की सही राजनीतिक व सैनिक कार्यदिशा के विपरीत थी, यह जवाबी मुहिम असफल रही। अक्टूबर 1934 में, लाल सेना क्रान्तिकारी आधार-क्षेत्रों से हट गई, उसने महान रणनीतिक स्थानान्तरण किया और विश्व-विख्यात 25,000 ली लम्बा अभियान शुरू कर दिया।

"मैं सब कुछ झेल लूँगी। आप चिन्ता न करें," माँ ने उत्तर दिया। "पिछले एक वर्ष से मैं पार्टी में शामिल होने की आकांक्षा लिए हुए हूँ, लेकिन जानती हूँ कि अभी मैं इस योग्य नहीं।"

"पार्टी-मेम्बर बनने के लिए तुम्हें कड़ी आजमाइश में से गुजरना होगा।" पिताजी ने दृढ़ता के साथ माँ को बताया। "पार्टी में शामिल होते ही तुम सर्वहारा वर्ग के हिरावल दस्ते की एक योद्धा बन जाओगी।"

"पार्टी जो भी आदेश देगी, मैं उसका अवश्य पालन करूँगी," माँ ने अत्यन्त भावपूर्ण स्वर में वचन दिया।

"और तुम्हारे साथ तुङ-च भी तो है। शायद मैं उसे कई वर्षों तक न देख पाऊँ। उसकी सही परवरिश करना।"

"चिन्ता न करो। मैं उसकी अच्छी तरह परवरिश करूँगी।"

"अगर हमारी मजदूर-किसानों की जनवादी सरकार यहाँ बनी रहे, तो उसे लेनिन प्राइमरी स्कूल में दाखिल करा देना," पिताजी ने कहा। उन्होंने बत्ती उठा कर मेरे मुँह की तरफ देखा और बोले, "जब तुङ-च मेरी उम्र का होगा, तो लोगों की जिन्दगी सचमुच बेहतर हो चुकी होगी।" उनका हाथ मैंने अपने चेहरे पर महसूस किया—एक बड़ा-सा खुरदरा, मजबूत और प्यार भरा हाथ। "जब मैं इसकी उम्र का था," उन्होंने अपनी बात जारी रखी, "तो सोच भी नही सकता था कि आज जैसा अच्छा वक्त आएगा। आज यहाँ मजदूर-किसानों की हमारी जनवादी सरकार है, हमारे लाल रक्षक हैं, कम्युनिस्ट पार्टी है और लाल सेना है।"

"कितना अच्छा होता कि तुम्हें जाना न पड़ता!" माँ ने कहा, "और हम इसी तरह एक साथ रहते!"

"अरे नहीं, अच्छा जमाना तो सिर्फ समाजवाद में आएगा। और उससे बेहतर जमाना कम्युनिज्म में आएगा।"

"किस लिहाज से बेहतर?" माँ ने पूछा। पिताजी की बात का मतलब वह ठीक-ठीक नहीं समझ पाई थीं।

"सभी स्थानीय निरंकुश जमींदारों और बुरे शरीफजादों का तख्ता पलट दिया जाएगा," पिताजी ने जोश में आकर कहा। "गरीबों को नजात हासिल होगी। न किसी का शोषण होगा और न उत्पीड़न। किसान और मजदूर दोनों ही सामूहिक हित में काम करेंगे। सभी मेहनतकश लोग बेहतर जिन्दगी बसर करेंगे। सभी बच्चे स्कूल जा सकेंगे।..."

माँ ने यह सुन कर खुशी जाहिर की।

"यह सब हासिल करने के लिए," पिताजी ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, "हमें लड़ना होगा।"

वे अभी बात कर ही रहे थे कि मेरी फिर आँख लग गई मैंने सपने में देखा कि कन्धे पर बस्ता लटका कर स्कूल जा रहा हूँ। स्कूल की इमारत पक्की ईंट की बनी है, उसकी छत टाइल की बनी है। मेरे साथ बहुत से स्कूल के बच्चे हैं। सभी ने नए-नए कपड़े पहन रखे हैं।...

ढोल-नगाड़ों की आवाज से सुबह मेरी नींद खुल गई पिताजी और माँ पहले ही उठ चुके थे। मैंने झटपट कपड़े पहने और बाहर की तरफ दौड़ पड़ा। पूरब की तरफ के खलिहान में बहुत से लोग जमा थे। गगनभेदी नारों से दिशाएँ गूँज रही थीं। मैं भीड़ को चीरता हुआ सामने जा पहुँचा। लाल सेना को विदाई देने के लिए

समारोह का आयोजन किया गया था। मैंने चारों तरफ पिताजी को खोजने की कोशिश की। लेकिन वे कहीं नजर नहीं आए। अचानक किसी ने मेरे कन्धे पर हाथ रखा। यह माँ थीं। "जल्दी घर चलो, बेटा," उन्होंने कहा, "तुम्हारे पिताजी जाने वाले हैं।"

माँ के साथ मैं घर चला गया। पिताजी एक साफ-सुथरी फौजी वर्दी पहने थे। उनकी पीठ पर एक थैला, बांस का टोप और माँ के हाथ के बने जूते थे। उन्होंने मुझे गोद में उठा लिया और मेरे गाल चूम लिए। "मैं श्वेत रक्षकों से लड़ने दूर जा रहा हूँ," उन्होंने कहा। "तुम्हें एक अच्छा लड़का बनना है और अपनी माँ के कहने पर चलना है।"

मैंने अपनी दोनों बाहें उनकी गर्दन में डाल दीं। "पिताजी आप जरूर जाइए और श्वेत रक्षकों के खिलाफ लड़िए," मैंने जोर से कहा। "जब मैं बड़ा होऊँगा तो मैं भी उनके खिलाफ लड़ूँगा।"

पिताजी हँस पड़े। उन्होंने मुझे फिर एक बार छाती से लगा लिया और गोद से उतार दिया। मेज पर पड़ी एक किताब उठाकर उन्होंने मेरे हाथ में दी और बोले, "बेटा, यह किताब लेनिन प्राइमरी स्कूल की है। इसे तुम पढ़ना।"

किताब की जिल्द पर एक लाल सितारा और हँसिया-हथोड़ा बना हुआ था। "मैं स्कूल कब से जाऊँगा, पिताजी?" मैंने पूछा।

"जब स्कूल खुलेगा तो माँ तुम्हें दाखिल करा देंगी।"

पिताजी ने माँ के कान में कुछ कहा। माँ ने सिर हिला दिया। तब उन्होंने उबले हुए अण्डे पिताजी के थैले में डाल दिए और उनके साथ बाहर चली गईं। मैंने पिताजी के कोट का पल्ला पकड़कर जोर से कहा, "जब आप जीत जायें, तो फौरन लौट आना!"

पिताजी मेरी तरफ मुड़े। क्षणभर के लिए कुछ सोचते हुए उन्होंने अपने थैले पर लगा लाल सितारा उतार कर मुझे दे दिया। "मैं काफी दिनों तक बाहर रहूँगा, बेटा। जब भी तुम्हें मेरी याद आए, तो इस लाल सितारे को देख लेना।"

मैंने लाल सितारे को मजबूती से थाम लिया। मेरी नजरें एकटक पिताजी पर लगी हुई थीं। उन्होंने अन्त में मेरा सिर प्यार से एक बार फिर सहलाया और लाल सेना क साथ कूच करने के लिए खलिहान की तरफ बढ़ गए।...

दो

पिताजी को गए जब महीनेभर से अधिक हो गया, तो मैंने माँ से पूछा, "पिताजी घर क्यों नहीं लौटते?"

"लड़ाई अभी खत्म नहीं हुई, बेटा," माँ ने जवाब दिया। "वे लड़ाई खत्म होने पर ही लौटेंगे।"

एक-एक करके कई महीने बीत गए। लेकिन पिताजी के लौटने के कोई आसार नजर नहीं आए।

"क्या पिताजी अब कभी घर नहीं लौटेंगे?" मैंने पूछा।

माँ ने यकीन दिलाया कि वे जरूर लौटेंग।

"कब लौटेंगे?" मैंने आग्रहपूर्वक पूछा और मेरी आँखों में आँसू छलछला आए।

माँ ने मुझे छाती से लगा लिया और कहा कि मुझे रोना नहीं चाहिए। पिताजी तभी लौटेंगे जब श्वेत रक्षकों का सफाया हो जाएगा। दक्षिणी पहाड़ की तरफ इशारा करते हुए माँ ने कहा, "देखो! जब वहाँ फिर से फूल खिल उठेंगे, तो तुम्हारे पिताजी धर लौट आएँगे।"

"फूल कब खिलेंगे?"

"वसन्त में।"

वसन्त, तुम जल्दी आओ!

चूँकि माँ ने मुझे बताया था कि पिताजी तभी लौटेंगे जब दक्षिणी पहाड़ में फूल खिल उठेंगे, इसलिए मैं अक्सर पहाड़ पर चढ़ कर देखने जाता कि फूल खिले हैं या नहीं। एक दिन पहाड़ की चोटी पर खड़े होकर मैंने सड़क पर दूर तक नजर डाली कि शायद सैनिक और घोड़े हमारी तरफ आते नजर आएं और उनमें पिताजी भी हों। लेकिन सैनिकों के बदले वहाँ सिर्फ दो-एक लकड़हारे ही नजर आए। इस सड़क पर कभी लाल सेना को अनाज देने आने वाले लोगों की भीड़ लगी रहती थी तो कभी लाल सेना के सिपाहियों के दल अभियान करते या किसान खेतों की तरफ जाते दिखाई देते थे। आज वे सब कहाँ गए?

दूर तक नजर दौड़ाने पर मुझे कुछ आकृतियाँ दीख पड़ीं। उनमें से कुछ लोगों के पास बन्दूकें भी थीं। मैंने मन में सोचा, "यह लाल सेना ही होगी जो वापस लौट रही है!" मैं नीचे की तरफ बेतहाशा दौड़ पड़ा। लेकिन पहाड़ की तलहटी पर पहुँच कर यकायक रुक गया। खाकी वर्दी पहने ये लोग हमारे सैनिकों जैसे नहीं लग रहे थे। लाल सेना के सिपाही अठकोनी टोपी पहनते थे, जबकि इन सैनिको की टोपियाँ गोल थीं। लाल सेना की टोपियों पर लाल सितारे लगे होते थे, जबकि इनकी टोपियों पर एक तरह का छोटा सा सफेद बैज लगा हुआ था। मैं हक्का-बक्का रह गया। ये तो श्वेत रक्षक हैं! ज्यादा करीब से नजर डालने पर मैंने देखा कि उनके साथ निरंकुश जमींदार हू हान-सान भी है, जिसे कागज की लम्बी टोपी पहना कर गाँव में घुमाया गया था। श्वेत रक्षक फिर से वापस आ गए हैं! मैं सिर पर पाँव रखकर घर की तरफ भागा।

घर पहुँच कर मैंने देखा माँ सामान बाँध रही हैं। सामान की दो पोटलियाँ बिस्तर पर पड़ी हुई थीं।

"श्वेत रक्षक फिर से लौट आए हैं, माँ," मैंने हाँफते हुए कहा। "हू हान-सान भी! अब हम क्या करेंगे?"

माँ ने मुझे अपने करीब खींच लिया और मेरे कोट के एक सिरे की सीवन खोल कर पिताजी का दिया हुआ लाल सितारा बिस्तर के नीचे से निकाला और कोट के अन्दर सी दिया।

"और उस गोली का क्या होगा?" मैंने पूछा।

"मैंने उसे पेड़ के नीचे गाड़ दिया है," माँ ने हमारे अहाते में लगे अनार के पेड़ की तरफ इशारा करते हुए कहा।

"और मेरी स्कूल की किताब कहाँ है?"

"इसमें है," यह कहते हुए माँ ने एक पोटली की तरफ इशारा किया।

"श्वेत रक्षकों के आ जाने पर हम क्या करेंगे, माँ?" मैंने आग्रहपूर्वक पूछा।

"चाहे जो भी आए और चाहे जो भी सवाल पूछे, तुम हरगिज कुछ न बताना।"

मैंने हामी भर ली।

जब माँ मेरे कोट की सीवन ठीक कर चुकीं तो वे बैठकर सोचने लगीं। वे बाहर जाने ही वाली थीं कि हमारे अहाते में शोर-गुल सुनाई पड़ा। श्वेत रक्षकों के एक गिरोह की अगुवाई करता हुआ हू हान-सान आ रहा था। वह अकड़ता हुआ अन्दर घुस आया और अपनी छड़ी माँ की तरफ उठाते हुए चीख कर बोला, "तुम्हारा पति कहाँ है?"

माँ तनिक भी विचलित न हुईं और जमींदार की तरफ आँख उठाए बिना बोलीं, "वे उत्तर में जापानी हमलावरों के खिलाफ लड़ने गए हैं।"

"डर कर भाग गया है ना, क्योंकि मैं जो वापस आ गया हूँ!" हू त्यौरियाँ चढ़ाकर बोला।

"सिर्फ दुष्ट और कमीने लोग ही डर कर भागते हैं।" यह पहला मौका था जबकि मैंने माँ को गाली देते सुना था, क्योंकि यह हू हान-सान ही था जो गाँव छोड़कर भाग गया था!

हू की कनपटी पर नसें उभर आईं। गुस्से से तमतमाते और दाँत पीसते हुए, उसने माँ को पकड़ लिया और गरजा, "बोल! तेरा आदमी कहाँ चला गया है?" इस पर भी माँ चुप रहीं तो उसने उनके मुँह पर एक तमाचा जड़ दिया। "मुझे तेरे पति से काफी लम्बा-चौड़ा हिसाब चुकाना है," उसने गुर्राते हुए कहा।

माँ ने जमींदार का हाथ झटक कर अलग कर दिया और बिना डरे तन कर खड़ी हो गईं

अचानक हू की नजर मुझ पर पड़ी और वह मेरी तरफ झपटा। "बोल! कहाँ है तेरा बाप?"

मुझे याद आ गया, माँ ने मुझे क्या कहा था। इसलिए मैं बिल्कुल चुप रहा!

मुझे भी माँ की ही तरह अडिग देखकर जमींदार का पारा आसमान पर चढ़ गया। उसने मुझे जमीन पर दे मारा और मेरे पेट में लात मारी। मेरे मुँह से एक हल्की सी चीख निकली, लेकिन मैं रोया नहीं। मैं उठा खड़ा हुआ और एक शब्द भी न बोला।

हू हान-सान ने एक हाथ से मेरी गर्दन दबोच ली और बोला, "बता, तेरा बाप कहाँ भाग गया है?"

एक झपाटे से मैंने अपने दोनों हाथ ऊपर उठाकर जमींदार का हाथ अपनी गर्दन से हटा दिया और अपने दाँतों से उसकी उँगली धर दबाई एक घायल सुअर की तरह चीखते हुए उसने अपनी उँगली छुड़ाने की कोशिश की। लेकिन मैंने अपने दाँत उसकी उँगली में और ज्यादा मजबूती से गड़ा दिए। मैंने सोचा कि उसकी उँगली ही काट लूँ। अपने दूसरे हाथ से हू ने बन्दूक उठाने की कोशिश की और उसके गुर्गों ने मुझे धर दबोचा। हालत बिगड़ती देखकर माँ ने मुझे जमींदार की उँगली छोड़ देने का आदेश दिया और अपने पास खींच लिया। हू हान-सान की उँगली से खून टपकने लगा। दर्द के मारे उसका चेहरा बिगड़ गया था। तभी उसने अपनी पिस्तौल मेरी तरफ तान दी।

माँ तेजी से हम लोगों के बीच आ खड़ी हुई "दुष्ट कहीं का!" वह चिल्लाई, "बस, बहुत हो चुका! बन्द कर मेरे बच्चे को डराना-धमकाना! अगर जवाँमर्द है तो लाल सेना से ताकत-आजमाई करके देख!"

अब तक अहाते में पड़ोसी भी जमा हो गए थे। जमींदार के हाथ में पिस्तौल देखकर वे लोग कमरे में घुस आए।

"खबरदार!" वे चिल्लाए, "पिस्तौल रख दो।"

"लाल सेना अभी ज्यादा दूर नहीं गई"

"अगर तुमने इस बच्चे को चोट पहुँचाई, तो अपनी जिन्दगी से हाथ धो बैठोगे!"

इससे जमींदार की हेकड़ी कुछ कम हुई अपनी उँगली बाँधने के लिए एक रूमाल निकालते हुए उसने बड़ी मक्कारी के साथ चारों ओर देखा, फिर तिरस्कार से बोला, "एक भगोड़ा भिक्षु पूरे मठ को अपने साथ नहीं ले जा सकता! मैं तुमसे एक-एक करके हिसाब चुकाऊँगा!" हू ने अपने गुर्गों को हुक्म दिया कि वे भीड़ में से रास्ता बनाएँ। उँगली पर रूमाल लपेटते हुए वह चला गया। नफरत और गुस्से से उसका चेहरा विकृत हो गया था।

हू हान-सान के गाँव में वापस लौट आने पर, माँ और मैं बुरी से बुरी स्थिति का मुकाबला करने के लिए तैयार हो गए। उस रात अपने पिछले अहाते की दीवार के नीचे हमने एक सुरंग खोद ली, ताकि संकट काल में हमलोग बाहर निकल सकें। सुरंग की निकासी एक सुरक्षित बाँस के झुरमुट में थी और वह हमें एक गहरी खाई में पहुँचा देती थी। सुरंग के प्रवेश-द्वार को हमने एक पत्थर की सिल्ली से ढक दिया, और उस पर घास-फूस बिखेर दी।

कुछ दिनों तक जमींदार की सूरत दिखाई न पड़ी। माँ अक्सर सूरज छिपने के बाद चुपचाप कहीं चली जाती थीं और सुबह पौ फटने से पहले नहीं लौटती थीं। एक बार मैंने उनसे पूछा कि वे रात में कहाँ जाती हैं।

"बड़े लोग क्या करते हैं, इसके बारे में जानने की तुम्हें जरूरत नहीं। ऐसे सवाल नहीं पूछा करते," उन्होंने मुझे बताया। "मैं कहीं भी नहीं गई थी, समझे?अब तुम जाओ और अच्छी तरह सो जाओ।" उसके बाद मैंने समझ लिया कि माँ से इसके बारे में पूछने से कोई फायदा नहीं।

हू हान-सान के लौटने पर ल्यूशी गाँव बिल्कुल बदल गया था। लाल रक्षक पहाड़ी इलाके में चले गए थे और श्वेत "शान्ति रक्षा दल" के गुण्डे गलियों में चक्कर काटने लगे थे। हमारे गाँव में मजदूर-किसानों की जनवादी सरकार अब नहीं रह गई थी; हू श्वेत रक्षकों का "कोर कमाण्डर" बन गया था। उसने अपने गुर्गों को हुक्म दिया कि लाल सेना द्वारा गाँव छोड़ने से पहले दीवारों पर लिखे गए नारों को मिटाकर उनकी जगह लांछनभरे वाक्य लिख दिन जाएं। गाँव के लोग अब गाते हुए या नारे लगाते हुए गलियों में नहीं निकलते थे और चमचमाते लाल झण्डे सबके सब छिपा दिए गए थे। यहाँ तक कि मौसम भी बड़ा नीरस और फीका-फीका सा लगने लगा था।

पिताजी और लाल सेना की याद मुझे पहले से कहीं ज्यादा सताने लगी। मैं चाहता था कि श्वेत रक्षकों को मार भगाने के लिए वे तुरत लौट आएँ। नया साल शुरू होने के बाद मैं वसन्त की प्रतीक्षा करने लगा। तब फूल फिर एक बार खिल उठेंगे। एक रोज शाम के वक्त मैं दक्षिणी पहाड़ पर चढ़ गया, यह देखने कि वहाँ फूल खिल

गए हैं या नहीं। लेकिन वहाँ एक भी फूल खिला दिखाई नहीं दिया। मैंने अपनी आँखें बन्द कर लीं, और मन ही मन कल्पना करने लगा कि जब उन्हें खोलूँ तो फूल खिले नजर आएँ। अचानक किसी ने मुझे पीछे से पुकारा। कौन है, यह देखने के लिए मैंने अपनी आँखें खोल लीं। वह एक लकड़हारा था। लेकिन जब उसने अपना बाँस का टोप पीछे सरकाया तो मेरी खुशी का ठिकाना न रहा। यह तो ऊ भइया थे।

"तुम्हारी माँ घर पर हैं?" उन्होंने पूछा।

मैंने कहा कि वह घर पर ही हैं।

"उनसे कह देना मैं आज आधी रात उनसे मिलने आऊँगा। जब तीन बार दस्तक सुनें तो दरवाजा खोल दें।"

"बहुत अच्छा," मैंने सिर हिला दिया। "लेकिन मेरे पिताजी कब लौटेंगे?"

"वे यहाँ से बहुत दूर एक मोर्चे पर लड़ रहे हैं," उन्होंने कहा।

"हू हान-सान वापस लौट आया है," मैंने उन्हें बताया।

ऊ भइया प्यार से मेरे बाल सहलाने लगे। उनकी आँखें हमारे गाँव पर टिकी हुई थीं। पलभर रुक कर वे बोले, "ये श्वेत रक्षक ज्यादा दिन नहीं टिक पाएँगे।" तब पहाड़ के नीचे से किसी को आता देखकर उन्होंने अपनी आवाज धीमी कर दी। "जो कुछ मैंने तुम्हें अभी बताया है उसे याद रखना। वापस लौट कर अपनी माँ को मेरा सन्देश दे देना। लेकिन किसी और को इस बात की हवा तक न लगे।"

यह कहते हुए वे मुड़े और पहाड़ पर ऊपर की तरफ बढ़ गए।

जब वे मेरी आँखों से ओझल हो गए, तो मैं दौड़ कर घर जा पहुँचा और उनका सन्देश माँ को दे दिया। हू हान-सान के लौटने के बाद यह पहला मौका था जब कि माँ का चेहरा खुशी से चमक उठा था। उस रात जब मैं अपने बिस्तर पर लेटा, तो माँ मेरे पास आ बैठीं और ऊ भइया का इन्तजार करने लगीं। छोटे-से दीये को उन्होंने एक टोकरी की आड़ में कर दिया, जिससे रोशनी बाहर बिल्कुल न जा सके।

मेरी आँख लग गई और मैं सपने देखने लगा। तभी धीमे-धीमे बातचीत करने की आवाज मेरे कानों में पड़ी। ऊ भइया के आने की बात मालूम ही थी। मैंने आँखें खोल लीं। देखा, टिमटिमाते दीये के पास ऊ भइया माँ से बातें कर रहे हैं।

ऊ भइया कह रहे थे, "लाल सेना जापानियों से लड़ने उत्तर की तरफ चली गयी है और कुछ समय तक वापस नहीं लौटेगी। इसका मतलब यह है कि हमलोग जो यहाँ रह गए हैं उन्हें भारी जिम्मेदारी उठानी होगी। गाँव की परिस्थिति कैसी है?"

"हू हान-सान एक हथियारबन्द गिरोह संगठित करने की कोशिश कर रहा है," माँ ने कहा। "वह अनाज, बन्दूकों और आदमियों की माँग कर रहा है, लेकिन कोई भी गाँववासी उसे सहयोग नहीं दे रहा। कल रात मैं कई परिवारों के पास गईं सभी लोग उस शैतान को अनाज, बन्दूकें या आदमी देने के बजाय मर जाना कहीं बेहतर समझते हैं।"

"ठीक है, ऐसी ही भावना होनी चाहिए," ऊ भइया ने कहा। "हमें क्रान्तिकारी जन-समुदाय को संगठित करके दुश्मन का अन्त तक प्रतिरोध करना चाहिए।" एक क्षण रुकने के बाद उन्होंने अपनी बात जारी रखी, "हमारी पार्टी-शाखा ने आपकी पार्टी-सदस्यता की अर्जी मंजूर कर ली है। अब से आप इस गाँव में एक पार्टी-योद्धा के रूप में काम करेंगी। आपको दुश्मन के खिलाफ संघर्ष का नेतृत्व करना चाहिए।"

माँ ने ऊ भइया का हाथ थाम लिया और दृढ़ता से बोलीं, "मैं हर काम में पार्टी के आदेश का पालन करूँगी। पार्टी मुझे जो भी काम सौंपेगी, उसे पूरा करूँगी।"

"अब शपथ लीजिए।" ऊ भइया ने कहा।

और तब रात के सन्नाटे में दोनों ने अपने बाजू ऊपर उठाकर मुट्ठी तान ली। उनकी लम्बी परछाइयाँ दीवाल पर पड़ रही थीं। मैंने अनुभव किया यह एक खास मौका है। इसलिए तनिक भी हिलेडुले बिना चुपचाप पड़ा रहा, हालाँकि मेरे दिल मे भी भावनाओं का तूफान उमड़ रहा था। मैं एकबारगी इस बात को पहले से कहीं ज्यादा अच्छी तरह समझ गया कि क्रान्ति करना क्या होता है, और यह कि ऐसे ही कम्युनिस्ट एक हिरावल दस्ते के रूप में क्रान्ति को आगे बढ़ाते हैं। ऊ भइया और माँ की ही तरह वे भी रात-दिन काम करते हैं, जन-सभाएँ बुलाते हैं, श्वेत रक्षकों के खिलाफ लड़ने के लिए हर मौसम में फौज का नेतृत्व करते हैं—वे जी-जान से गरीबों व उत्पीड़ित लोगों की सेवा में लगे रहते हैं। वे दुश्मन के सामने जरा भी कमजोरी नहीं दिखाते बल्कि बड़ी दृढ़ता से काम लेते हैं, क्योंकि उन्होंने शपथ ली हुई है। मैं भी उन जैसा कब बनूँगा, कब शपथ लूँगा?

कुछ समय तक उन दोनों ने इस बात पर विचार किया कि जन-आन्दोलन का नेतृत्व कैसे किया जाए। तब माँ ने पूछा, "क्या आपको मालूम है, तुङ-च के पिता आजकल कहाँ हैं?"

19 चमकता लाल सितारा

"वे लोग सछ्वान प्रान्त में पहुँच चुके हैं।" और तब बड़े जोरदार शब्दों में ऊ भइया ने अपनी बात जारी रखी; "लम्बे अभियान के दौरान पार्टी की केन्द्रीय कमेटी ने चुनई में एक सम्मेलन बुलाया। इसमें उन्होंने गलत 'वामपंथी' कार्यदिशा को सुधार लिया और केन्द्रीय कमेटी में अध्यक्ष माओ का नेतृत्व स्थापित हो गया। अध्यक्ष माओ की कमान में लाल सेना ने बहुत सी जीतें हासिल की हैं। अब वह सिर्फ बचाव की लड़ाई नहीं लड़ रही।"

"अध्यक्ष माओ हमारे अनन्य नेता हैं!" माँ बड़ी भावना से बोल उठीं।

अचानक बाहर से कुत्तों के भौंकने की आवाज आई। माँ ने तुरत बत्ती बुझा दी। हमलोग कान लगाकर सुनने लगे। पैरों की चाप धीरे-धीरे बढ़ती जा रही थी। माँ ने करीब आकर मुझे हिलाया। मैं झटपट उठ बैठा। कोई हमारे फाटक पर जोर-जोर से धक्के मार रहा था। माँ ने एक पोटली मेरी तरफ बढ़ा दी ओर एक हाथ से मुझे गोद में लेकर दूसरे हाथ से ऊ भइया को रास्ता दिखाती हुई घर के पिछवाड़े की तरफ लपकीं। सुरंग के प्रवेश-द्वार पर उन्होंने मुझे गोद से उतार दिया, घास-फूस हटाई, पत्थर की सिल्ली उठाई और फुसफुसाई, "जाइए, जल्दी जाइए!"

जब ऊ भइया सुरंग के अन्दर चले गए तो माँ ने मुझे भी भीतर धकेल दिया। अन्त में जब वे खुद सुरंग में उतरने लगीं तो फाटक पर किए जाने वाले भीषण प्रहारों की आवाज सुनकर वे ठिठक गईं।

"आप बाहर क्यों नहीं आ रहीं?" ऊ भइया ने दीवाल के बाहर की तरफ से बड़ी आतुरता के साथ माँ से पूछा।

"नहीं, मेरा आना ठीक नहीं," माँ ने कहा। "दुश्मन हमें खोज लेगा। आप तुङ-च को लेकर फौरन सुरंग से होते हुए खाई के रास्त बाहर निकल जाइए। जल्दी कीजिए!"

"लेकिन आपको यहाँ नहीं रुकना चाहिए," ऊ भइया ने कहा। हमारे फाटक पर अब भी भीषण प्रहार जारी थे। माँ ने अपना कोट सुरंग के अन्दर से दे दिया ओर बोलीं, "इसे तुङ-च को पहना दीजिए और आप दोनों जल्दी निकल जाइए!" उन्होंने सुरंग के प्रवेश-द्वार को पत्थर की सिली से फिर ढक दिया और उस पर घास-फूस फैला दी। इसके बाद वे सामने के अहाते में पहुँच गईं। इसी समय मैंने फाटक के टूटने की आवाज सुनी। माँ का क्या होगा?मेरा दिल दहलने लगा। लेकिन मैं लाचार था।

"तुम ने फाटक क्यों नहीं खोला?" किसी ने जोर से पूछा।

मेरा दिल तेजी से धड़कने लगा। काश, माँ भी हमारे साथ आ गई होतीं!

"तुमसे मिलने कौन-कौन आया था?" आवाज जानी-पहचानी थी।

कोई उत्तर नहीं।

"तुम्हारा लड़का कहाँ है?"

फिर भी कोई उत्तर नहीं।

"उस हरामजादे ने मुझे दाँत से काट लिया था," वही आवाज फिर सुनाई दी, "आज मैं उसके दाँत तोड़ दूँगा।"

गुस्से से भरी यह आवाज हू हान-सान की थी।

"बोलो, तुमने उस आदमी को कहाँ छिपा रखा है?तुम्हारा लड़का कहाँ है?"

माँ फिर भी बिल्कुल चुप रहीं।

उन दुष्टों ने जरूर माँ को पकड़ लिया होगा। मैं सुरंग से वापस घर लौटना चाहता था। लेकिन ऊ भइया ने मुझे रोका और धीमे से कहा, "हिलो मत!" मुझे एक चट्टान के पीछे छिपा कर उन्होंने पिस्तौल निकाल ली और फुर्ती से दीवाल पर चढ़ गए।

"यह नहीं बोलेगी, मकान की तलाशी लो!" हू हान-सान चीखा।

हू के गुण्डों ने अहाते की तलाशी लेनी शुरू कर दी। घास-फूस सरसराने लगी। मेरे होश उड़ गए जब ऊ भइया ने पहले एक फायर किया तथा उसके बाद लगाताा तीन और फायर किए। दीवाल के ऊपर से ही ऊ भइया ने जोर से आदेश दिया, "दल नं. एक बायीं तरफ से! दल नं. दो दायीं तरफ से! आगे बढ़ो और घेर लो!"

चारों ओर भगदड़ मच गई ऊ भइया ने दो फायर और किए। मैं बिल्कुल हक्का-बक्का रह गया क्योंकि मैं जानता था कि वे अकेले ही हैं। ये दो छापामार दल आखिर कहाँ से आ टपके?ऊ भइया दीवाल से नीचे कूद पड़े। उसी समय माँ भी सुरंग से निकल कर आ गईं।

"आपने पूरे गिरोह को डरा कर भगा दिया!" माँ ने कहा।

"चलिए यहाँ से, जल्दी चलिए!" ऊ भइया ने मुझे पीठ पर बिठा लिया और माँ को साथ लेकर बाँस के झुरमुट से होते हुए खाई से ऊपर की तरफ बढ़ गए।

दिन निकलने से पहले ही हम लोग पहाड़ पर काफी अन्दर एक जंगल में पहुँच गए। वहाँ मुझे अपने गाँव के लाल रक्षकों के परिचित चेहरे भी दिखाई दिए। साथ ही बहुत से ऐसे लोग भी दिखाई दिए जिन्हें मैं पहचानता नहीं था। मैंने ऊ भइया से पूछा कि ये सब लोग यहाँ क्या कर रहे हैं।

"ये लोग छापामार योद्धा हैं," उन्होंने बताया।

पूरी रात बड़ी सरगरमी में बीती थी ओर मैं बहुत थक गया था। इसलिए ज्यों ही गुफा में लेटा, फौरन आँख लग गई

नींद खुली तो देखा जो पोटली हम लोग घर से लाए थे वह मेरे सिरहाने रखी हुइ है और माँ का कोट मुझे ओढ़ा दिया गया है। मैंने करवट बदली और माँ को पुकारा। लेकिन मैंने देखा गुफा के अन्दर मैं अकेला ही हूँ। मैं उठ खड़ा हुआ और गुफा के बाहर आ गया। चारों तरफ ऊँचे-ऊँचे पेड़ खड़े थे। एक पेड़ के नीचे ऊ भइया कुछ लाल रक्षकों और मेरी माँ के साथ बातें कर रहे थे।

"दुश्मन गाँव-गाँव में प्रतिक्रान्तिकारी हथियादबन्द गिरोह संगठित कर रहा है," ऊ भइया ने कहा। "इस सैन्य-शक्ति के जरिए वह हमारा सफाया कर देना चाहता है। इसलिए हमें जनसमुदाय को जत्थेबन्द करके हू हान-सान और अन्य श्वेत रक्षकों के खिलाफ संघर्ष चलाना चाहिए, उन्हें अनाज, बन्दूकें और आदमी देने से इनकार कर देना चाहिए, जिनकी उन्हें सख्त जरूरत है। दुश्मन के हाथ कुछ न लगे। कुछ साथियों को

झड़बेरी-टीला गाँव, ल्यूशी गाँव और फङकाङ गाँव में जाना चाहिए।'' और उन्होंने हर गाँव में जाने के लिए आदमी निश्चित कर दिए।

''मुझे भी ल्यूशी गाँव में जाने दीजिए,'' माँ ने सुझाव दिया। ''मैं वहाँ के लोगों को जानती हूँ।''

''आप पूरी रात जागती रही हैं। इसलिए आपको आराम करना चाहिए,'' ऊ भइया ने जवाब दिया।

''जितने ज्यादा साथी जाएँगे, उतना ही अच्छा होगा। मुझे आराम की जरूतर नहीं। मुझे जाने दीजिए,'' माँ ने आग्रह किया।

ऊ भइया मान गए। अपने पास खड़े एक साथी से उन्होंने कहा, ''कामरेड छन च्युन, तुम तुङ-च की माँ को अपने साथ ल्यूशी गाँव ले जाओ। अन्धेरा होने के बाद जाना और दिन निकलने से पहल लौट आना।'' ऊ भइया ने छन को एक हथगोला दिया, जिसे उन्होंने अपनी पेटी में बाँध लिया।

माँ मेरे पास आईं और बोलीं, ''तुङ-च, मुझे अभी एक काम से जाना है। कल लौटूँगी। ध्यान रखना, मेरी गैरहाजिरी में इधर-उधर मत घूमना।'' और तब छन च्युन चाचा के साथ वे पहाड़ से नीचे उतर गईं।

अगले दिन सबेरे माँ नहीं लौटीं। दोपहर के वक्त मैं एक चट्टान पर जा बैठा और ल्यूशी गाँव की तरफ टकटकी लगाकर देखने लगा।

जब मैंने किसी को पहाड़ पर चढ़ते देखा तो सूरज डूबने ही वाला था। यह छन च्युन चाचा थे। ''माँ कहां हैं, चाचा?'' मैंने पूछा।

बिना कुछ बोले छन च्युन चाचा ने मेरी तरफ देखा और मुझे अपनी गोद में उठा लिया। मुझे लेकर वे एक बड़े पेड़ के नीचे गए, जहाँ मैंने ऊ भइया को देखा। बिना कुछ बोले उन्होंने मुझे गोद से उतार कर एक चट्टान पर बैठा दिया और खुद भी मेरे पास बैठ गए। ऊ भइया ने पहले छन च्युन चाचा की तरफ और फिर मेरी तरफ देखा। उन्होंने पूछा, ''ल्यूशी गाँव में क्या हुआ?''

छन च्युन चाचा ने एक आह भरी और मुझे अपने सीने से लगा लिया। उनकी आँखों में आँसू छलछला आए।

''वहाँ आखिर हुआ क्या?'' ऊ भइया ने अपना सवाल दोहराया।

''उन्होंने इस लड़के की माँ की हत्या कर दी है!''

यह सुनकर मेरा कलेजा फट गया। आँखों से आँसुओं की झड़ी लग गई मैं पहाड़ से नीचे की तरफ दौड़ पड़ा। छन च्युन चाचा ने दौड़कर मुझे पकड़ लिया और पूछा कि मैं कहाँ जा रहा हूँ।

''अपनी माँ का पता लगाने।''

''अब कुछ नहीं हो सकता, तुङ-च।''

मैं सिसक-सिसक कर रोने लगा। छन च्युन चाचा मुझे वापस लौटा लाए और चट्टान पर बैठा दिया। ऊ भइया ने उनसे सारी घटना सुनाने को कहा।

''कल रात गाँव में पहुँचकर मैं और तुङ-च की माँ कई परिवारों से मिलने गए,'' छन च्युन चाचा ने कहा।

"हमने लोगों को बताया कि हमारा संघर्ष कैसा चल रहा है। वे सभी हू हान-सान के खिलाफ संघर्ष करने को बेताब थे। आधी रात बाद हम आखिरी घर से जाने ही वाले थे कि हू हान-सान और उसके गुण्डों ने हमें देख लिया। उन्होंने हमें घेर लिया। मैंने अपने पास मौजूद एक मात्र हथगोला उनकी तरफ फेंका ओर हम दोनों भाग निकले। लेकिन उन्होंने गाँव के बाहर भी हमारा पीछा किया। हम लोग एक सोते के पास जा पहुँचे। इस लड़के की माँ ने मुझे धकेल कर सोते के किनारे एक सुरक्षित स्थान पर पहुँचा दिया और खुद वहीं जम गईं। वे गुण्डों पर पत्थर फेंकने लगीं ताकि उनका ध्यान मेरी तरफ से हट जाए। मैंने उनसे भागने को कहा, मगर वे चिल्लाईं, "सोते के किनारे-किनारे बढ़ते जाओ! तुम्हें वापस पहुँच कर रिपोर्ट देनी है! मेरी परवाह न करो!"

"आखिर मैं कर ही क्या सकता था! श्वेत रक्षकों का ध्यान बटाने के लिए इसकी माँ ने दौड़ना शुरू कर दिया। साथ ही उन्हें पत्थर मारती रहीं और ललकारती रहीं। वे सबके सब उनके पीछे लग गए।...

"मैं सीधा यहाँ नहीं आया," छन च्युन चाचा ने अपनी बात जारी रखी, "बल्कि पौ फटने पर फिर से ल्यूशी गाँव में जा पहुँचा, यह पता लगाने कि इसकी माँ पर क्या बीती। वहाँ लोगों को मैंने यह कहते सुना कि तुङ-च की माँ ने एक सच्चे कम्युनिस्ट की मिसाल कायम की। उन्होंने कोई भेद नहीं खोला। जब हू हान-सान ने देखा कि उनसे कुछ नहीं उगलवाया जा सकता तो उन्हें एक पेड़ से बाँध दिया और नीचे से सूखी टहनियाँ इकट्ठी करके उन्हें जिन्दा जला डालने की तैयारी कर ली। गाँव के लोगों को बेहद गुस्सा आया और वे उन्हें बचाने के लिए दौड़ पड़े। लेकिन दुष्ट हू ने अपने हथियारबन्द गुण्डों को चारों तरफ तैनात करके किसी को भी पास नही फटकने दिया। गाँववासियों को देखकर माँ ने कहा, 'मेरे अच्छे पड़ोसियो, डरना मत। श्वेत रक्षकों का जमाना लद चुका। लाल सेना जल्दी ही वापस लौटने वाली है। हू हान-सान की झूठी बातों पर हरगिज यकीन न करना। उसे अनाज का एक दाना तक न देना। शान्ति रक्षा कोर में हरगिज शामिल न होना।...' और तब उन नरपिशाचों ने पेड़ के नीचे रखी टहनियों के ढेर में आग लगा दी।..." इतना कह कर छन च्युन चाचा फूट-फूटकर रोने लगे। उनसे आगे बोला न गया।

मैंने अपनी कल्पना में उस भीषण आग को देखा, उसकी धधकती ज्वालाओं के बीच खड़ी अपनी माँ को देखा, उनकी निर्भीक आँखों से निकलती चिनगारियों को देखा। वे अपना एक हाथ उठाकर हू हान-सान की ओर इशारा कर रही थीं, जो डरके मारे सहम गया था, और दूसरा हाथ मुट्ठी तानकर ठीक वैसे ही उठाए हुए थीं जैसे सिर्फ दो रात पहले शपथ लेते समय उठाया था। मैंने देखा, आग की लपटें प्रचण्ड होती जा रही हैं, ऊँची उठती जा रही हैं, और माँ का रक्तिम मुखमण्डल चारों ओर लालिमा बिखेर रहा है।

तीन

मेरी वजह से छापामार दल को कुछ ज्यादा ही परेशानी हो रही थी। फौजी अभियान के समय छन च्युन चाचा मुझे अपनी पीठ पर लाद कर ले जाते। जब वे थक जाते तो कोई दूसरा उठा लेता।

एक दिन ऊ भइया जब घाटी से वापस लौटे तो उनके साथ एक बुजुर्ग भी थे। मुझे पास बुलाकर उन्होंने कहा, "मैंने तुम्हारे लिए एक घर तलाश कर लिया है, भइया।" मैंने एक बार उनकी तरफ और फिर उन

बुजुर्गवार की तरफ देखा जिनके झुर्रीदार चेहरे पर मुस्कान दौड़ गई ऊ भइया ने मुझे बताया कि ये सुङ चाचा हैं और मुझे अपने साथ घाटी में अपने घर ले जाएँगे।

"मैं नहीं जाऊँगा।" मैं चिल्लाया और मेरी आँखों में आँसू छलक आये। माँ की मृत्यु के बाद ऊ भइया ने पिता की तरह मेरी देखभाल की थी। छापामार दस्ता मेरा घर बन चुका था। उसे छोड़ना मेरे लिए मुमकिन नहीं था। ऊ भइया ने मुझे अपने करीब खींच लिया और सिर पर प्यार से हाथ फेरते हुए समझाया, "हमलोग लड़ेंगे और हालत से मजबूर होने पर कूच करेंगे। तुम अभी छोटे हो और यहाँ सुरक्षित नहीं हो। सुङ चाचा के साथ चले जाओ। वे तुम्हारी खूब अच्छी तरह देखभाल करेंगे। मैं वायदा करता हूँ कि जब कभी मौका मिलेगा, तुमसे अवश्य मिलने आऊँगा।"

"जब मैं बड़ा हो जाऊँगा तो माँ का बदला अवश्य लूँगा," मैंने अपना पक्का इरादा जाहिर करते हुए कहा, "लेकिन आपसे जुदा होने पर यह सब कैसे कर सकूँगा?"

"अभी तुम्हें बड़ा हाने में कई साल लग जाएँगे। तुम्हारी जगह हमलोग तुम्हारी माँ का बदला लेंगे। जब तुम बड़े हो जाओगे, तो हमलोग आएँगे और तुम्हें ले जाएँगे।"

मैंने ऊ भइया के कोट का सिरा पकड़ लिया और उनसे लिपट गया। ऊ भइया मेरे करीब आए और बोले, "मेरे बच्चे, तुम्हें जिद नहीं करनी चाहिए। इन लोगों को रोजाना दुश्मन से लड़ना पड़ता है। तुम्हें साथ रखने से ये लोग बँध जाते हैं।"

मैंने सुङ चाचा की तरफ देखा। उनके चेहरे से अपनापन झलक रहा था। उन्होंने मेरा हाथ पकड़ कर अपनी ओर खींच लिया। ठीक पिताजी की ही तरह उनका भी हाथ खूब चौड़ा और प्यारभरा था।

ऊ भइया वह कोट और पोटली ले आए जो माँ ने मुझे दिये थे और सुङ चाचा के हवाले कर दिया। "हम आपको कुछ ज्यादा ही कष्ट दे रहे हैं, कामरेड सुङ," उन्होंने कहा। "लेकिन यह बच्चा क्रान्तिकारियों की सन्तान है। हमें इसकी अच्छी तरह देखभाल करनी चाहिए।"

"आप बिल्कुल फिक्र न करें, सेक्रेटरी ऊ," सुङ चाचा ने जवाब दिया। "मैं वायदा करता हूँ कि जब तक जिन्दा रहूँगा, इस लड़के का पालन-पोषण करता रहूँगा ताकि यह बड़ा होकर क्रान्ति में हिस्सा ले सके।" उन्होंने पोटली उठा ली, माँ का कोट मेरे कन्धे पर डाल दिया और हाथ पकड़ कर बोले, "चलो बेटा, अब हम चलें।"

ऊ भइया, छन च्युन चाचा और बहुत से दूसरे लोग पहाड़ के नीचे काफी दूर तक हमें पहुँचाने आए। एक पहाड़ी मोड़ पर पहुँचने पर ऊ भइया ने सुङ चाचा से हाथ मिलाया और बोले, "यह लड़का क्रान्ति के वृक्ष की एक कली है, कामरेड। आप इसकी खूब अच्छी तरह देखभाल करें।"

"जरूर करूँगा," सुङ चाचा ने वायदा किया। "मैं आपको यकीन दिलाता हूँ।"

ऊ भइया ने फिर एक बार मेरे सिर पर प्यार से हाथ फेरा और बोले, "अब तुम सुङ चाचा के साथ जाओ।"

छापामारों से विदा होने पर मैंने पहाड़ों की तरफ एक लालसाभरी दृष्टि डाली। सुङ चाचा मैं थक गया हूँ। इसलिए उन्होंने मुझे अपनी पीठ पर उठा लिया और आगे बढ़ गए।

सुङ चाचा पहाड़ की तलहटी में एक छोटे से गाँव में झोंपड़ी डालकर बिल्कुल अकेले रहते थे। उन्होंने अपने पड़ोसियों को बताया कि एक गरीब शरणार्थी ने यह बच्चा देखभाल के लिए उन्हें सौंप दिया था और यह कि बाद में उन्होंने मुझे गोद ले लिया। उन्होंने मुझे बताया कि मैं उन्हें चाचा कहकर पुकारा करूँ। इसके बाद मैं सुङ चाचा के साथ रहने लगा।

जब मौसम कुछ गरम होने लगा तो मुझे माँ की वह बात याद आई कि दक्षिणी पहाड़ पर फूल खिलने पर पिताजी वापस लौट आएँगे। इसलिए जब पहाड़ी पर हरी घास उग आई तो मैं ऊपर चढ़कर पिताजी का इन्तजार करने लगा। फूल अभी खिले नहीं थे। लेकिन जंगली घास पर फूल खिलने से पहले पत्ते आने लगे थे। मैंने सोचा, जल्दी ही फूल खिलने लगेंगे!

एक दिन सुङ चाचा और मैं जब पहाड़ पर ईंधन के लिए लकड़ी काट रहे थे, तो मैंने एक चट्टान के पास एक पीला फूल खिला हुआ देखा। इसकी आठ पंखुड़ियाँ सूरज की तरफ खुली हुई थीं। उनका रंग चमकदार सुनहरा था। मैं खुशी से नाच उठा : "अब पिताजी जल्दी ही वापस लौट आएँगे।" और तब मैंने सुङ चाचा ने कहा, "यह फूल देखा आपने? माँ ने मुझे बताया था कि जब दक्षिणी पहाड़ पर फूल खिलने लगेंगे तो पिताजी लाल सेना के साथ वापस लौट आएँगे।" मैं एक चट्टान पर चढ़ गया और नीचे सड़क की तरफ देखने लगा। सुङ चाचा भी थोड़ी देर के लिए एक चट्टान पर बैठ गए।

सुङ चाचा ने कहा, "घर लौटने का वक्त हो गया है, बेटा।"

लेकिन मैं अपनी जगह से तब तक नहीं हिला और एकटक सड़क की तरफ देखता रहा जब तक अन्धेरा

नहीं हो गया और सड़क बिल्कुल अदृश्य नहीं हो गयी। तब सुङ चाचा मेरे पास आए। उन्होंने मुझे चट्टान से नीचे उतारा और प्यार से मेरे गाल चूम लिए। हम लोग घर लौट आए।

अगले दिन मुँह अन्धेरे ही मैं उठ बैठा और सुङ चाचा ने आग्रह करने लगा कि पहाड़ पर ईंधन के लिए लकड़ियाँ इकट्ठी करने चलें। पहाड़ पर रातोंरात तरह-तरह के नए-नए फूल खिल उठे थे—लाल, सफेद, पीले। मेरी खुशी का ठिकाना न रहा। अब मेरे पिताजी किसी भी दिन लाल सेना के साथ वापस लौट आएँगे, माँ का बदला लेंगे, हू हान-सान को पकड़ लेंगे, उसे कागज की ऊँची टोपी पहनाकर गाँवभर में घुमाएँगे और तब गोली मार देंगे। अपने कोट की सीवन खोल कर लाल सितारा निकालने से मैं अपने आप को रोक न सका। सूरज की रोशनी में वह किसी चमकता और सुन्दर लाल फूल की तरह अपनी शोभा बिखेर रहा था। सुङ चाचा मुझे ऊपर ले गए। कुछ देर के लिए हम लोग एक ढलवाँ चट्टान पर जा बैठे। उन्होंने लाल सितारा मेरे हाथ से ले लिया और उसे अच्छी तरह देखने लगे। और तब मेरे सिर पर प्यार से हाथ फेरते हुए बोले, "बेटा, कितना अच्छा होगा वह दिन जब तुम ऐसा ही लाल सितारा अपनी टोपी में लगा सकोगे।"

"जब पिताजी लौट आएँगे तो मैं इसे अपनी टोपी में लगा लूँगा," मैंने कहा। सुङ चाचा ने सिर हिला कर हामी भरी। तब उन्होंने मुझे सलाह दी कि घर लौटने पर मैं इसे अपने कोट के अन्दर फिर से सी लूँ। इसकी क्या जरूरत है?मैंने सोचा। जल्दी ही पिताजी लौटने वाले हैं और तब तो मैं इसे लगा ही लूँगा!

सूरज डूबने तक हम दोनों ढलवाँ चट्टान पर बैठे रहे। तब सुङ चाचा उठ खड़े हुए और पहाड़ की एक चोटी की तरफ एकटक देखने लगे। वहाँ एक ऊँचा, शानदार चीड़ का पेड़ खड़ा था, जिसकी हरी सुईदार पत्तियाँ रोशनी में चमक रही थीं। इस पेड़ की ओर इशारा करते हुए सुङ चाचा ने मुझसे पूछा, "उस शानदार ऊँचे चीड़ के पेड़ को देख रहे हो बेटा?"

"हाँ, देख रहा हूँ," मैंने जवाब दिया।

"वह मजबूत भी है?" उन्होंने कहा।

"हाँ, है।"

"चीड़ का पेड़ भी क्या कमाल की चीज है," सुङ चाचा ने अपनी बात जारी रखी। "यह जाड़ों में बर्फीली सर्द हवाओं को बर्दाश्त करता है और गरमियों में सूरज की प्रचण्ड किरणों को। क्या तुमने इसे कभी झुकते भी देखा है?"

"नहीं।"

"बिल्कुल ठीक। हमें भी चीड़ के पेड़ की ही तरह मजबूत, सदा बहार और हरा-भरा होना चाहिए।"

सुङ चाचा की बात को मैं साफ-साफ नहीं समझ पाया फिर भी मैंने सिर हिलाकर सहमति प्रकट कर दी।

"आज जबकि लाल सेना चली गई है," सुङ चाचा ने अपनी बात जारी रखी, "और श्वेत रक्षक भारी उत्पात मचा रहे हैं, हमारे लिए एक बड़ा कठिन समय आ गया है। लेकिन हम डरते नहीं। हमें चीड़ के उस पेड़ की ही तरह होना चाहिए। चाहे कितनी ही तेज आँधी आए, कितना ही तेज तूफान उठे, हम हार नहीं मानेंगे, सिर नहीं झुकाएँगे!"

मैंने उनके मुँह की तरफ देखा। धूप में तपे हुए झुर्रीदार चेहरे और संकल्प के चमक वाली आँखों के साथ वे सचमुच पहाड़ की चोटी पर खड़े उस चीड़ की तरह लग रहे थे!

"जो कुछ तुम्हारी माँ ने बताया है, सिर्फ उतना ही याद रखना काफी नहीं, मेरे बच्चे।" सुङ चाचा ने अपनी बात जारी रखी। "तुम्हें अपनी माँ की ही तरह साहसी भी होना चाहिए।"

मैंने उनकी बात को समझते हुए सिर हिलाकर सहमति प्रकट की। सचमुच, मेरी माँ के चरित्र में एक अद्‌भुत दृढ़ता थी। वे भी इस चीड़ की ही तरह थीं।

"लाल सेना तब तक नहीं लौटेगी जब तक जापानियों को शिकस्त नहीं दे दी जाती," सुङ चाचा ने कुछ रुक कर कहा। "लेकिन इसमें चाहे कितना ही समय क्यों न लग जाए, इस बात को हरगिज न भूलना बेटा कि तुम्हारे पिताजी लाल सेना के सैनिक हैं और तुम एक लाल सैनिक के पुत्र हो।"

इन शब्दों ने मेरे दिल में एक नया जोश भर दिया। मैंने संकल्प कर लिया कि मैं भी अपने पिताजी के पद-चिन्हों पर चलता हुआ क्रान्ति करूँगा, मैं भी उन्हीं की तरह क्रान्ति के लिए लाल सेना में भरती हो जाऊँगा। और तभी मुझे अपनी माँ के अन्तिम शब्द याद आ गए : "श्वेत रक्षकों का जमाना लद चुका। लाल सेना जल्दी ही वापस लौटने वाली है।" मुझे पक्का यकीन था कि लाल सेना अवश्य लौटेगी ओर उसके साथ मेरे पिताजी भी अवश्य लौट आएँगे।

सर्दियाँ आ गईं।

एक दिन साँझ के वक्त, जब उत्तर की तरफ से आने वाली तीखी हवा सनसनाती हुई चल रही थी और बर्फ के मोटे-मोटे गोले तेजी ने गिर रहे थे। तो मैं दीये के सामने बैठा पिताजी की दी हुई लेनिन प्राइमरी स्कूल की किताब पढ़ रहा था। सुङ चाचा, जिन्होंने बचपन में थोड़ा-बहुत पढ़ना सीख लिया था, मेरे पास बैठे कुछ कठिन शब्दों को पढ़ने में मेरी मदद कर रहे थे, और क्रान्तिकारी संघर्ष के अपने तजरबों की मिसाल देते हुए मुझे पाठ समझा रहे थे। इससे मैं स्कूल की किताब में बताई गई बातों को ज्यादा अच्छी तरह समझने लगा। किताब की यह कविता मुझे आज भी याद है :

मजदूरो, किसानो,
यह बात हरगिज न भूलो,
कि जब तक
हम बन्दूक नहीं उठाएँगे,
तब तक मेमनों की तरह
असहाय बने रहेंगे;
मस्तक ऊँचा किए खड़े होने के लिए,
और आजादी हासिल करने के लिए,
हमें हथियार अवश्य उठाने होंगे!

स्कूल की किताब मैं तब तक पढ़ता रहा जब तक सोने का वक्त नहीं हो गया। और जब मैं नींद में मस्त होकर बिस्तर पर लुढ़क गया तब भी मेरे कानों में गूँजता रहा, "मस्तक ऊँचा किए खड़े होने के लिए, और आजादी हासिल करने के लिए, हमें हथियार अवश्य उठाने होंगे।"

मुझे एक सपना आया। मैंने देखा मैं फिर से छापामारों के बीच पहुँच गया हूँ। वहाँ बहुत से स्त्री-पुरुष हथियार लेने के लिए प्रतीक्षा कर रहें हैं। मैं भी कतार में खड़ा हो गया। लेकिन मुझे सिर्फ लाल फीते वाली बरछी ही दी गईं यह भी ठीक ही है, मैंने सोचा। मैं जहाँ भी जाऊँगा इसे अपने साथ ले जा सकूँगा। अचानक नारे लगने की आवाज आईं और मैंने देखा कि जमींदार हू हान-सान को गाँव की गलियों में घुमाया जा रहा है। भला मैं उसे कैसे छोड़ता?अपनी बरछी से उस पर प्रहार करने के लिए मैं आगे बढ़ा। लेकिन मुझे लगा किसी ने मेरा हाथ पकड़ लिया है। मैंने उसे छुड़ाने की भरपूर कोशिश की। और इस कशमकश में मेरी नींद खुल गईं मैंने देखा कि कमरे में बहुत से लोग जमा हैं और पार्टी-सेक्रेटरी ऊ मेरी बाँह पर प्यार से हाथ फेर रहे हैं। मैं झटपट उठ बैठा और उनसे लिपट गया। कुछ देर बाद मैं उठ खड़ा हुआ।

"कहो तुङ-च! क्या हाल है?" उन लोगों ने मुझसे पूछा। छापामार-दल वापस लौट आया है, मैंने सोचा।

"आप लोग यहाँ कैसे?" मैंने पूछा।

"हमलोग यहाँ से गुजर रहे थे तो सोचा कि तुमसे मिलते चलें," ऊ भइया ने कहा।

"हमने एक और फतह हासिल कर ली है," सुङ चाचा ने बताया।

"इन लोगों ने दक्षिणी पहाड़ पर श्वेत रक्षकों के एक अड्डे पर धावा बोलकर बीस से ज्यादा बन्दूकें छीन ली हैं!"

"एक बन्दूक मुझे भी दे दो।" मैंने बड़े आग्रह के साथ कहा, "मैं हमेशा सोचता रहता हूँ, काश मेरे पास भी एक बन्दूक होती!"

मेरी बात पर कमरे में उपस्थित सब लोग हँस पड़े।

"तो तुम बन्दूक के सपने देखा करते हो?यह तो बहुत अच्छी बात है!" ऊ भइया ने कहा। "लेकिन बन्दूक उठाने के लिए तुम अभी बहुत छोटे हो। जल्दी-जल्दी बड़े हो जाओ।" और कमरे में फिर एक बार कहकहे लगने लगे।

छापामारों का स्वागत करने बहुत से पड़ोसी भी आ पहुँचे। वे लोग उन्हें अपने ही कुटुम्बी-जन समझते थे। कमरे में बड़ी गरमजोशी का वातावरण था! थोड़ी ही देर में ल्यू चाची भी आ गईं। वे अपने साथ छः जोड़ी नई सैण्डिलें भी ले आईं, जिन्हें उन्होंने पटसन और कपड़े की कतरनों से बनाया था।

"सेक्रेटरी ऊ, इन्हें ले लीजिए," वे बोलीं।

"यह सब क्यों, चाची!" सेक्रेटरी ने उनका हाथ थाम कर आभार प्रकट किया। "बहुत-बहुत धन्यवाद!"

"धन्यवाद की क्या बात है!" ल्यू चाची ने उत्तर दिया, "हम सब तो एक ही परिवार के लोग हैं।"

"हमारे पास सैण्डिलों की कमी है," यह कहते हुए ऊ भइया ने अपनी जेब से एक चाँदी का डालर

निकाला और बोले, "चाची, इसे रख लीजिए।"

ल्यू चाची हैरान रह गईं। उन्हें कुछ अजीब-सा लगा। "मैंने इन सैण्डिलों को खरीदा थोड़े ही है," उन्होंने एतराज कियां "मैंने इन्हें कपड़े की बची-खुची कतरनों से बनाया है। मैं जानती हूँ, आप लोगों को कितनी भागदौड़ करनी पड़ती है और जूतों की कितनी सख्त जरूरत रहती है।"

उनकी बात हर आदमी के हृदय को छू गईं ऊ भइया ने बुजुर्ग महिला का हाथ अपने हाथ में लेकर जबरन उनके हाथ में डालर रख दिया। "मैं आपकी भावनाओं की कद्र करता हूँ," उन्होंने कहा। "लेकिन चाची, आपको हमारी फौज के कायदे-कानून मालूम ही हैं। अध्यक्ष माओ ने हमें सिखाया है कि बिना पैसा चुकाए जन-समुदाय से सुई-तागा भी नहीं लेना चाहिए।"

"बिल्कुल ठीक है!" ल्यू चाची ने अपना दूसरा हाथ ऊ भइया के हाथ पर रखते हुए का, "लेकिन 'जन-समुदाय' आप किसे कहते हैं?छापामार लोग और हमलोग तो एक ही परिवार के सदस्य हैं, फर्क सिर्फ इतना है कि आप लोग ऊपर पहाड़ पर हैं और हम नीचे घाटी में।" यह कहते हुए उन्होंने चाँदी का सिक्का ऊ भइया को लौटा दिया और बोलीं कि इसे क्रान्ति के काम में खर्च कर दें।

कमरे में मौजूद बाकी लोगों की भी अपनी-अपनी राय थी। छापामार दल के सदस्यों ने ल्यू चाची से अनुरोध किया कि वे पैसा ले लें, जबकि गाँववासियों ने पैसा न लेने के चाची के आग्रह का समर्थन किया। अन्त में ऊ भइया को डालर अपनी जेब में वापस रख लेना पड़ा।

अब तक और बहुत से पड़ोसी भी कमरे में इकट्ठे हो गए थे। सबने ऊ भइया को घेर लिया और उनसे पूछने लगे कि संघर्ष कैसा चल रहा है।

सुङ चाचा ने मेरे कन्धे पर एक कोट डाल दिया और बोले, "तुम बाहर चले जाओ और निगरानी रखो। अगर कोई अजनबी घूमता दिखाई दे, तो पिछली खिड़की से तीन बार ताली बजा देना।" मुझे लगा जैसे मैं ड्यूटी पर तैनात प्रहरी हूँ और खुशी-खुशी बाहर चला गया।

आँधी थम चुकी थी। बर्फ पड़नी बन्द हो गई थी। कुछ झोंपड़ी से रोशनी छन-छन कर अब भी बाहर आ रही थी। मैंने सोचा, अन्दर छापामार दल के लोग उस समय चल रहे संघर्ष की चर्चा कर रहे होंगे; उन लोगों में ल्यू चाची की तरह के गाँववासी भी जरूर होंगे, जिन्होंने कपड़े की कतरनें बचा-बचा कर छापामारों के लिए सैण्डिलें बनाई थीं। आखिर जन-समुदाय के लोग छापामारों को अपना ही कुटुम्बी-जन क्यों समझते हैं?इसलिए कि छापामार लोग जन-समुदाय को प्यार करते हैं, उसकी देखभाल करते हैं! मैंने अपने सवाल का खुद ही जवाब दे डाला।

सहसा गाँव की तरफ से एक छापामार आया और हमारे घर के भीतर चला गया। दूसरे ही क्षण ऊ भइया और अन्य छापामार लोग गाँववासियों के साथ बाहर निकल आए।

"आप लोग इतनी जल्दी जा रहे हैं?" मैंने ऊ भइया से पूछा।

"हमें अब आगे जाना चाहिए," यह कहते हुए उन्होंने प्यार से मेरे सिर पर हाथ फेरा। "तुम एक अच्छे लड़के बन जाओ। जैसा सुङ चाचा कहें, वैसा करना।"

७१

मैंने सिर हिलाकर सहमति प्रकट की और उनका हाथ पकड़ लिया। हम लोग छापामार दल को विदा करने गाँव के बाहर तक गए।

जब सुङ चाचा और मैं अपने घर वापस पहुँचे, तो मैंने दीये के नीचे दबी एक छोटी-सी पर्ची देखी जिसमें चाँदी का डालर लिपटा हुआ था। पर्ची को सुङ चाचा रोशनी के सामने ले गए। अपनी गर्दन आगे झुकाकर मैंने पढ़ा। लिखा था : "ल्यू चाची से कहिए कि पैसा ले लें। धन्यवाद।"

सुङ चाचा का दिल भर आया। पैसा और पर्ची देने वे ल्यू चाची के पास जा पहुँचे। मैं भी उनके पीछे-पीछे चला गया। जब उन्होंने चाँदी का डालर और ऊ भइया की पर्ची उन्हें दी, तो डालर हाथ में लेकर वे कुछ सोचने लगीं।

"बहुत अच्छा," उन्होंने अन्त में कहा। "यह पैसा मैं कुछ और पटसन खरीदने के लिए खर्च करूँगी, और ज्यादा कतरनें जमा करूँगी, तथा उनके वास्ते और ज्यादा सैण्डिलें बनाऊँगी।"

सुङ चाचा ने सिर हिलाकर समर्थन किया और अपनी जेब से कुछ पैसे निकाल कर, जो उन्होंने लकड़ी बेच कर अभी-अभी कमाये थे, ल्यू चाची की तरफ बढ़ाते हुए बोले, "लो, यह भी ले लो, कुछ और ज्यादा पटसन खरीद कर सैण्डिलों के कुछ और जोड़े बना लेना।"

इन बुजुर्गों के आचरण से मैं बहुत प्रभावित हुआ। मेरे मन में आया, काश! मेरे पास भी देने के लिए कोई चीज होती! मैंने मन में संकल्प किया कि बड़ा होकर छापामार दल में शामिल हो जाऊँगा और अपना सब कुछ निछावर कर दूँगा।

लेकिन बड़े होने का सिलसिला बड़े धीरे-धीरे चलता है। एक के बाद एक कई वसन्त बीत गए। जब छठा वसन्त आया तो मैं तेरह साल का हो गया था। मैं सुङ चाचा से बार-बार अनुरोध करता कि वे मुझे पहाड़ पर ले चलें और छापामार दल का पता लगाएँ। लेकिन वे इनकार कर देते। इस बीच छन च्युन चाचा कई बार पहाड़ से नीचे आ चुके थे। इसी तरह ऊ भैया भी आ चुके थे। लेकिन वे लोग मुझे अपने साथ वापस ले जाने को राजी नहीं होते थे और कहते थे कि मैं अभी छोटा हूँ।

एक दिन मैंने सुङ चाचा से फिर अनुरोध किया। मैं अब एक अच्छा-खासा लड़का बन गया था, और अपनी माँ का बदला लेने के लिए काफी बड़ा हो चुका था। लेकिन सुङ चाचा ने हमेशा की ही तरह अपना सिर हिलाकर इन्कार कर दिया ओर बोले, "धीरज रखो, बेटा! तुम एक न एक दिन जरूर छापामार योद्धा बन जाओगे। लेकिन अभी नहीं। जब वक्त आएगा तो सेक्रेटरी ऊ खुद तुम्हें बुला भेजेंगे।" एक साल से ज्यादा अरसा बीत चुका था जब ऊ भइया, जिन्हें मैं अब सेक्रेटरी ऊ कह कर पुकारने लगा था, हमसे मिलने आए थे। हमें यह भी मालूम नहीं था कि वे कहाँ हैं।

चूँकि सुङ चाचा मुझे पहाड़ पर नहीं ले जाते थे, इसलिए मैंने फैसला किया कि छापामारों को मैं खुद ही खोज लूँगा। सुबह का नाश्ता करने के बाद, मैंने एक रस्सी ओर बहंगी उठाई और यह कहकर कि लकड़ी बटोरने जा रहा हूँ, पहाड़ की तरफ चल पड़ा।

जब दो पहाड़ियों को पार कर चुका तो मैं एक ऐसी जगह पहुँच गया जहाँ से कई रास्ते फूटते थे। इनमें कौन-सा रास्ता पकड़ा जाए, मुझे नहीं सूझा। लौटते वक्त कहीं भटक न जाऊँ, इस ख्याल से मैंने सबसे चौड़ा रास्ता पकड़ लिया और जहाँ कहीं नया रास्ता फूटता वहाँ दोनों में से ज्यादा चौड़े रास्ते पर चल देता। जल्दी ही मैं एक पहाड़ी पर जा पहुँचा और वहाँ से एक खाई में उतर गया। राहगीरों से रास्ता पूछने का साहस मुझे नहीं हुआ, क्योंकि इससे छापामार दल का भेद खुल जाने का अन्देशा था। लेकिन जैसे-जैसे रास्ते के किनारे बाँस के झुरमुट और झाड़-झँखाड़ बढ़ते गए, मैं सोचने लगा कि अपनी मंजिल के करीब पहुँचता जा रहा हूँ। तभी मुझे एक स्थान पर बहुत सी सँकरी पगडण्डियाँ दिखाई दीं, जो चारों दिशाओं में मुड़ रही थीं। ऐसी जगह रास्ता भटकना बड़ा आसान था। मैंने पहाड़ की चोटी की तरफ जाने वाली एक पगडण्डी पकड़ ली और लौटती बार रास्ता पहचानने के लिए उसके किनारे-किनारे थोड़ी-थोड़ी दूर पर टहनियाँ गाड़ता चला गया।

कुछ दूर ऊपर चढ़ने के बाद, मैं एक पेड़ के नीचे रुक गया। मैं हैरत में पड़ गया क्योंकि यह पेड़

जाना-पहचाना सा मालूम हो रहा था। अरे! मैं तो उसी गुफा के सामने आ पहुंचा हूँ जिसके अन्दर मैं एक बार सोया था! और पास ही वह चट्टान भी है जिस पर मैं बैठा था जब छन च्युन चाचा ने मुझे बताया था कि हू हान-सान ने किस तरह आग में जला कर मेरी माँ की हत्या कर डाली! एक ऐसी जगह को पहचानने में मुझसे कोई गलती नहीं हो सकती थी जहाँ रोते-रोते मेरी आँखें सूज गई थीं। मैं दौड़ कर गुफा के अन्दर जा पहुँचा। वह खाली थी। मैं एक ऊँची जगह चढ़ गया और चारों तरफ देखने लगा। लेकिन कहीं भी कोई नजर नहीं आया। पुकारने से शायद कोई सुन ले, यह सोचकर मैंने पूरी ताकत से आवाज लगाई : "सेक्रेटरी ऊ! छन च्युन चाचा!" लेकिन कोई जवाब नहीं मिला। छापामार दल आखिर कहाँ चला गया?उन्हें खोजने के लिए मैं कितना लालायित था! उनके मुस्कराते चेहरे देखने के लिए और श्वेत रक्षकों के खिलाफ उनके साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर लड़ने के लिए मैं कितना बेताब था!

जाहिर है कि हमारे छापामार किसी मिशन पर गए हुए थे। उस दिन उनसे मिलना मेरे लिए मुमकिन नहीं था। अचानक मुझे अपनी गलती महसूस हुई मैंने सुङ चाचा को नहीं बताया था कि मैं कहाँ जा रहा हूँ। मेरी लम्बी अनुपस्थिति से वे चिन्ता में पड़ गए होंगे। मैंने सोचा, आज फौरन घर लौट जाना चाहिए तथा छापामारों को ढूँढ़ने के लिए किसी और दिन आना चाहिए। रास्ते के किनारे टहनियों की जो निशानियाँ मैंने बनाई थीं, उनकी मदद से बिना किसी कठिनाई के मैंने नीचे उतरने का रास्ता खोज लिया। सूरज डूबने को था। मैं दौड़ने लगा।

ज्योंही मैं एक चौराहे पर पहुँचा तो देखा कुछ सैनिक मेरी तरफ आ रहे हैं। क्या ये लोग छापामार हो सकते हैं?मैं बड़ी उम्मीद के साथ तेजी से उनकी तरफ लपका। उनमें कुछ लोगों के पास बन्दूकें और तलवारें थीं। लेकिन मैं उनमें से किसी को भी नहीं पहचानता था। इतने में मेरी नजर उनकी पीली वर्दियों पर पड़ी—ये लोग तो श्वेत रक्षक हैं! मेरी बहंगी और रस्सी देखकर, मेरी ओर ध्यान दिए बगैर ही वे लोग पहाड़ पर ऊपर की तरफ बढ़ गए। लेकिन जब लगभग पूरा दस्ता मेरे पास से गुजर गया तो मैंने लम्बा चोगा व फैल्ट का टोप पहने हुए एक आदमी को देख जिसका बदसूरत चेहरा मुझे कुछ पहचाना-सा लगा। ज्यों ही हमारी नजरें मिलीं, मैंने हू हान-सान को पहचान लिया! उसकी भेड़िये की सी खूंखार आँखों को भला मैं कैसे भूल सकता था! मेरे दिल में नफरत की आग भड़क उठी। उसन मेरी तरफ कुछ ऐसे देखा मानो पहचानने की कोशिश कर रहा हो और आगे बढ़ गया। लेकिन अचानक वह पीछे की तरफ मुड़ा और बोला, "ऐ लड़के! तुम्हारा नाम क्या है?"

उसके सवाल का जवाब दिए बिना ही मैं पहाड़ से नीचे उतरने लगा।

"ठहरो! रुक जाओ!" वह चिल्लाया।

मैंने सोचा, मुझे रुकना नहीं चाहिए। इसलिए और तेजी से भागने लगा। मेरे पीछे से चिल्लाने की आवाजें बराबर आती रहीं और फिर एक गोली सनसनाती हुई मेर सिर के ऊपर से निकल गई मैं बेतहाशा दौड़ने लगा।

सुङ चाचा मुझे खोजते-खोजते गाँव के छोर तक आ पहुँचे थे।

"हू हान-सान आ रहा है! वह मेरा पीछा कर रहा है!" मैंने हाँफते हुए कहा।

यह देखकर कि मैं बेहद थक गया हूँ, सुङ चाचा ने मुझे अपनी पीठ पर बिठा लिया और पहाड़ की तरफ

तेजी से नजर मारते हुए तुरत घर ले गए। घर पहुँच कर उन्होंने चूल्हे से उतार कर चावल के दो डले मेरी ओर बढ़ाये और झटपट मुझे पिछवाड़े के आँगन की तरफ ले गए। वहाँ उन्होंने मुझे सहारा देकर एक पेड़ पर चढ़ा दिया और आदेश दिया, "जल्दी करो! ल्यू चाची के घर में छिप जाओ।" पेड़ पर से मैं दीवार पर जा पहुँचा और उसे फाँद कर ल्यू चाची के घर पहुँच गया। हू हान-सान के चंगुल से बच निकलने पर मैंने अपने को सुरक्षित अनुभव किया। मैंने इत्मीनान की साँस ली और चावल खाने लगा।

अभी मैं एक डला ही खा पाया था कि सुङ चाचा के अहाते से स्पष्ट आवाजें आने लगीं। मैंने खाना जारी रखा और कान लगाकर सुनने लगा। हू हान-सान को मेरी तलाश थी।

"बताओ, वह लड़का कहाँ गया?" मैंने हू हान-सान को पूछताछ करते हुए सुना।

"लकड़ी बीनने बाहर गया है," सुङ चाचा ने जवाब दिया। "अभी लौटा नहीं।"

"यह झूठ है," हू ने प्रतिवाद किया। "हम उसका पीछा करते-करते यहाँ आए हैं। किसी ने तुम्हें उसे उठाकर ले जाते भी देखा है।"

"आपने मुझे नहीं देखा होगा," सुङ चाचा बोले। "मैंने तो शाम से घर के बाहर कदम तक नहीं रखा।"

"बड़ा ढीठ है!" हू ने तड़ाक से सुङ चाचा के मुँह पर थप्पड़ मारते हुए कहा, "साफ-साफ बता! वह हरामजादा छोकरा तेरे पास कहाँ से आया है?"

"उसे एक शरणार्थी ने मुझे दिया है, जो मुझे रास्ते में मिला था।"

"उसका कुल नाम क्या है?"

"वाङ।"

"वाङ नहीं, फान है! मैं उस कमीने कुत्ते का कहीं भी पहचान लूँगा। अगर उसकी खाल भी खींच ली जाय, तो भी पहचान लूँगा। उस हरामजादे ने मुझे दाँतों से काट लिया था!" और तब एक और घूँसा मारने की आवाज आई "तुने उसे कहाँ छिपा रखा है?बोल!"

"मैं भला उसे क्यों छिपाने लगा?" सुङ चाचा ने बड़े धीरजे से उत्तर दिया। "वह कोई चोर-डाकू तो है नहीं। उसने कोई कसूर तो किया नहीं।"

"उसका नाम फान है या नहीं?" हू गुर्राया।

"उसके पिता ने मुझे वाङ बताया था। भला फान कैसे हा सकता है?हाँ, मेरे कुलनाम पर उसका नाम सुङ जरूर हो सकता है।"

"मुझे धोखा देने की कोशिश न करो," यह कहते हुए हू ने आदेश दिया, "तलाशी लो!"

"आपको क्या हक है यहाँ घुस कर तलाशी लेने का?" मैंने सुङ चाचा को अत्यन्त रोष के साथ हू से कहते हुए सुना। "तुम ल्यूशी गाँव से आऐ हो। माओकाङ गाँव पर तुम्हारा कोई अधिकार नहीं।"

हू हान-सान बड़ी मक्कारी से हँसा ओर बोला, "अब पूरे मुल्क पर जापानी शाही फौज का कब्जा हो गया है। मैं जहाँ चाहूँ तलाशी ले सकता हूँ।"

यह सुनकर कि ये लोग तलाशी लेने पर आमादा हैं, मैं रेंगता हुआ ल्यू चाची के मुर्गीखाने के एक कोने में जा छिपा।

जब "शाही फौज" के सैनिक मुझे नहीं खोज पाए तो हू हान-सान सुङ चाचा पर गरजा, "बताओ दुष्ट बुड्ढे! वह छोकरा फान कहाँ छिपा हुआ है?"

"उसका नाम वाङ है। वह लकड़ी काटने गया है और अभी तक लौट कर नहीं आया।"

"उसे हमारे हवाले कर दो। वरना हम तुम्हें गिरफ्तार कर लेंगे!"

"गिरफ्तार क्यों करोगे?मैं तो एक ईमानदार आदमी हूँ।"

"तुम डाकुओं को पनाह देते हो।"

"डाकुओं को पनाह?मैं समझा नहीं।"

"मैं तुम्हें साफ-साफ बता दूँ, ऐ बुड्ढे," हू ने जोर से कहा, "हमलोग दरअसल इस पहाड़ी इलाके में डाकुओं का दमन करने आए हैं। और उनमें से एक डाकू तुम्हारे घर में घुसा हुआ है। अगर तुम उसे हमारे हवाले नहीं करोगे तो हम तुम्हें जापानी शाही फौज को सौंप देंगे।"

"जिस लड़के की आप लोग तलाश कर रहे हैं, वह चला गया।" सुङ चाचा ने ऊँची आवाज में जवाब दिया।

"चला गया?कहाँ?"

"आपने अभी कहा कि आप उसका पहाड़ से पीछा करते आ रहे हैं। भला मैं कैसे जान सकता हूँ कि आपने उसे कहाँ भगा दिया?"

"अगर वह भाग गया है तो तुम बचकर नहीं जा सकोगे!"

तभी मुझे हाथापाई की आवाज और पैरों की धपधप सुनाई दी। क्या वे सचमुच सुङ चाचा को गिरफ्तार कर रहे हैं?मैं चुपचाप पंजे के बल चलता हुआ दीवार तक वापस पहुँच गया। उस पर पाँव टिकाकर मैंने पत्ते

एक तरफ सरका दिए और झाँकने लगा। वे लोग सचमुच सुङ चाचा को घसीट कर ले जा रहे थे! मेरा पसीना छूटने लगा। उन्हें बचाने के लिए मैं भला कर ही क्या सकता था?तभी हू हान-सान रुका और उसने धमकी दी, "देखो, उस लड़के को हमारे हवाले कर दो। अगर हम तुम्हें पकड़ ले गए तो तुम्हारी खैर नहीं।"

सुङ चाचा ने उसकी तरफ बिना देखे बहुत ही तिरस्कार के साथ दोटूक जवाब दिया, "वह लड़का भाग गया। अब वह तुम्हारे हाथ नहीं आएगा!" मैंने देखा, सुङ चाचा अविचल रूप से अपना सिर ऊँचा किए ठीक वैसे ही खड़े हैं जैसे वह शानदार चीड़ का पेड़ पहाड़ पर खड़ा था!

हू ने जब यह देखा कि उसका दाँव खाली गया, तो उसने सुङ चाचा पर छड़ी से प्रहार किया और चिल्लाते हुए आदेश दिया, "ले जाओ इसे!"

मैं दीवार फाँदने ही वाला था कि ल्यू चाची आ पहुँचीं ओर उन्होंने मुझे पकड़ लिया।

"ऐसा न करो, तुङ-च बेटा," उन्होंने मेरे कान में फुसफुसाया। "इससे सुङ चाचा की मुश्किलें और बढ़ जाएँगी।"

मैं दाँत पीसने लगा। गुस्से से मेरा खून खौल रहा था। छः वर्ष तक सुङ चाचा ने मेरी परवरिश की और आज मेरी जिन्दगी बचाने के लिए उन्हें इस तरह गिरफ्तार होना पड़ रहा है। मैंने दृढ़ संकल्प किया कि ऊ भइया का पता लगाकर उनकी मदद से सुङ चाचा को अवश्य छुड़ा लाऊँगा।

चार

अगले दिन शाम को छन च्युन चाचा आए। उन्होंने बताया कि सुङ चाचा शहर के एक बड़े जेलखाने में बन्द हैं।

"जेलखाना कहाँ है?" मैंने पूछा। "मैं वहाँ जाकर उनसे मिलना चाहता हूँ।"

"तुम वहाँ नहीं जा सकते। श्वेत रक्षक वहाँ शरीफ और भले लोगों को बन्द रखते हैं," उन्होंने उत्तर दिया।

"हम सुङ चाचा को वहाँ कैसे छोड़ सकते हैं?उन्हें जल्दी छुड़ा लेना चाहिए।"

"फिक्र मत करो," छन च्युन चाचा बोले। "सेक्रेटरी ऊ उन्हें छुड़ाने की कोई न कोई युक्ति सोच लेंगे। जापानी साम्राज्यवादी इस इलाके में घुस आए हैं और हू हान-सान के आदमी उनके गुर्गे बन कर कार्य कर रहे हैं," उन्होंने बताया।

"अच्छा तो श्वेत रक्षकों ने दुश्मन के सामने हथियार डाल दिए हैं और उसके पालतू कुत्ते बन गए हैं!" मैं चीजों को पहले से ज्यादा अच्दी तरह समझने लगा।

अन्त में छन च्युन चाचा ने मुझे सेक्रेटरी ऊ से मिलने के लिए अगले दिन शाम का उत्तरी पहाड़ की तलहटी में इन्तजार करने को कहा। सेक्रेटरी ऊ को मेरे रहने का बन्दोबस्त किसी और जगह करना था।

चूँकि मैं चिन्ता से बेहद परेशान था, इसलिए छन च्युन चाचा आधी रात तक मेरे साथ रहे।

अगले दिन तड़के ही मुर्गे की पहली बांग के साथ मेरी आँख खुल गईं इसके बाद मुझे नींद नहीं आई अपना कोट कन्धे पर डालकर मैं उठ बैठा। कमरे में गहरा अन्धेरा था। मैं पीठ टिकाकर बिस्तर पर बैठ गया और पिताजी के बारे में सोचने लगा, कल्पना करने लगा कि वे एक बड़ा-सा लाल झण्डा उठाए गोलियों की धाँय-धाँय के बीच दुश्मन पर प्रहार कर रहे हैं।

और जब मुर्गे ने दूसरी बार बाँग दी तो मैंने कपड़े पहन लिए। कमरे में अब भी अन्धेरा छाया हुआ था। मेरा मन माँ के ख्यालों में डूब गया। अपनी कल्पना में मैंने देखा, माँ मेरी ओर निहारती हुई मुस्करा रही हैं, और फिर अपने बालों को पीछे की ओर झटक कर मस्तक ऊँचा किए आग की लपटों की ओर बढने लगीं; मैंने देखा उन्होंने बाजू ऊपर उठाकर मुट्ठी तान ली है और बुलन्द आवाज में कह रही हैं : "मेरे अच्छे पड़ोसियो, डरना मत। श्वेत रक्षकों का जमाना लद चुका।..."

जब मुर्गे ने तीसरी बार बाँग दी तो पौ फटने ही वाली थी। मैं एक स्टूल पर बैठ गया और सुङ चाचा के बारे में सोचने लगा, जो मेरे धर्मपिता थे। श्वेत रक्षक जब उन्हें पकड़कर जेलखाने ले जाने लगे थे तो उन्होंने बड़े गर्व के साथ अपना मस्तक ऊँचा रखा।...

मेरे पिताजी, माँ और सुङ चाचा—इनमें से किसी ने भी संगीन की नोक के सामने कभी घुटने नहीं टेके, और न सिर ही झुकाया। मैं भी उन्हीं के नक्शेकदम पर चलूँगा। और ऊ भइया तथा अन्य छापामारों की तो बात ही क्या—वे लोग कितना कठोर जीवन बिता रहे हैं, पहाड़ों पर चढ़ना, गुफाओं में रहना और सिर्फ शकरकन्द खाकर गुजारा करना। नहीं, मैं उन्हें अब कोई तकलीफ नहीं दूँगा। मैं तेरह साल का हो चुका हूँ और अब बच्चा नहीं रहा। पन्द्रह साल की उम्र तक मैं और इन्तजार करूँगा। तब मैं इतना बड़ा हो जाऊँगा कि बन्दूक थाम सकूँ, तेज दौड़ सकूँ तथा श्वेत रक्षकों व जापानियों के खिलाफ छापामारों के कन्धे से कन्धा मिला कर लड़ सकूँ। मैं इन्हीं विचारों में डूबा हुआ था कि चारों तरफ से मुर्गों की बाँग सुनाई देने लगी। कमरे में रोशनी हो गई और मैंने अपना सामान बाँधना शुरू कर दिया।

सुङ चाचा की चीजें मैंने एक बाँस के सन्दूक में रख दीं और अपनी चीजें एक छोटी सी पोटली में बाँध लीं। ल्यू चाची और दूसरे पड़ोसी, जो जानते थे कि मैं यहाँ से जा रहा हूँ, मुझे विदा करने आ पहुँचे। उनमें कुछ लोग मेरे लिए खाने की चीजें भी लेते आए। पूरे छः वर्ष मैं उनके बीच रहा और पला। वे लोग मुझे अपना सगा-सम्बन्धी समझते थे। मैं उनका एहसान भला कैसें भूल सकता था?मैंने उनसे विदा ली और अनुरोध किया कि वे सुङ चाचा के घर की देखभाल करते रहें। तब मैंने आँगन में चारों तरफ नजर डाली, दरवाजे को ताला लगाया और पोटली उठाकर पहाड़ पर चढ़ने लगा।

वसन्त का मौसम था। पहाड़ पर पेड़-पौधे हरेभरे हो गए थे। बाँस के पेड़ों पर नए अंकुर फूट रहे थे। फूल खिल उठे थे। पक्षी आसमान में उड़ रहे थे। झरने घाटियों में कलकल बह रहे थे। मौसम इतना सुहावना था कि मेरा हृदय पुलकित हो उठा। काश, यह इलाका आज भी एक लाल क्षेत्र बना रहता! तब मैं एक पक्षी की तरह स्वतंत्र, एक झरने की तरह चंचल होता। लेकिन हालात यह थी कि हू हान-सान ने मुझे पकड़ने के लिए अपना खूनी पंजा फैला रखा था, ताकि मैं सुङ चाचा के पास अब और न ठहर पाऊँ। "ऐ हू हान-सान, श्वेत रक्षक

कमीने कुत्ते!'' मैंने शपथ ली, ''तेरे जैसे लोगों से कभी न कभी हिसाब जरूर चुकता करूँगा!''

उस रोज सारा दिन मैं पहाड़ पर छिपा रहा। जब साँझ हुई तो ऊ भइया से मिलने का समय हो गया। मैंने खड़े होकर सुङ चाचा के झोंपड़े पर आखिरी नजर डाली। अब मैं सुङ चाचा से तब तक मुलाकात नहीं कर पाऊँगा जब तक वे जेल से नहीं छूट जाते। सूरज डूब रहा था। हवा कुछ ठण्डी हो चली थी। मैंने अपनी पोटली खोली और माँ का पुराना कोट निकाल लिया। इसे देखते ही मुझे माँ अपने करीब महसूस होने लगीं। मैंने कोट के निचले सिरे को उँगली से टटोला। जब मेरा अपना कोट छोटा हो गया था तो मैंने पिताजी का दिया लाल सितारा अपनी माँ के कोट के निचले सिरे में सी दिया था। कोट कन्धे पर डाल मैं पहाड़ से नीचे उतरने लगा।

उत्तरी पहाड़ की तलहटी में मुझे ऊ भइया और छन च्युन चाचा मिले। उनसे मिलकर मैं इतना खुश हुआ कि मैंने ऊ भइया का हाथ अपने हाथ में ले लिया और काफी देर तक उसे मजबूती से दबाए रखा। अन्त में उनसे मैंने पूछा, ''पिताजी कहाँ हैं?''

''येनान में,'' उन्होंने बताया।

''येनान में?''

''हाँ, वे लोग अध्यक्ष माओ के साथ येनान पहुँच गए हैं।'' जब ऊ भइया ने यह बताया तो उनका चेहरा खुशी से चमक रहा था। ''25,000 ली लम्बा अभियान पूरा करने के बाद,'' उन्होंने अपनी बात जारी रखी, ''तुम्हारे पिताजी येनान पहुँच गए हैं और अब वे जापानियों के खिलाफ अध्यक्ष माओ की कमान में लड़ रहे हैं।''

यह सुनते ही मेरी आँखों के सामने ये दृश्य चलचित्र की तरह नाच उठे : स्थानीय निरंकुश जमींदार का गाँवभर में घुमाया जाना, उसकी जमीन का बँटवारा किया जाना, जुल्म ढाने वालों के खिलाफ संघर्ष करने के लिए जन-सभाएँ बुलाया जाना, पिताजी का लाल सेना में भरती होकर लम्बे अभियान में शरीक होना, माँ का मुट्ठी तानकर शपथ लेना, छापामारों का दुश्मन के खिलाफ लड़ना...। ''ये सभी घटनाएँ उसी क्रान्ति का हिस्सा हैं,'' मैंने मन ही मन सोचा, ''जिसे अध्यक्ष माओ के नेतृत्व में चलाया जा रहा है। अध्यक्ष माओ जापानी हमलावरों के खिलाफ लड़ने में और बहुत सारे ऐसे काम करने में जिन्हें मैं अभी नहीं समझ पाता, लाल सेना व जनता का नेतृत्व करते हैं। जब वे यहाँ थे तो ल्यूशी गाँव में और माओकाङ गाँव में, जगह-जगह लाल झण्डे फहराया करते थे और गाँववासी गाने गाया करते थे। कितनी शानदार जगह बन गया होगा अब येनान!'' यह सोचकर मैंने ऊ भइया से कहा, ''मैं भी अध्यक्ष माओ के पास येनान जाना चाहता हूँ।''

ऊ भइया हँस पड़े और बोले, ''मैं भी वहाँ जाना चाहता हूँ भाई, लेकिन अभी नहीं। येनान यहाँ से बहुत दूर है।''

''येनान आखिर है कहाँ?'' मैंने पूछा।

''उत्तर में।''

मैं मुड़कर उत्तर की ओर देखने लगा। मैंने देखा उत्तर का आकाश सुनहरे बादलों से सुशोभित है। अच्छा, तो यही वह स्थान है जहाँ मेरे पिताजी अध्यक्ष माओ के साथ रहते हैं! काश, मैं पंछी होता और उड़कर वहाँ जा

पहुँचता!

"तुङ-च," ऊ भइया ने कुछ देर रुककर कहा, "अब हमें कुछ ज्यादा जरूरी बातें करनी हैं। हू हान-सान तुम्हारे पीछे पड़ा हुआ है। यहाँ माओकाङ गाँव में रहना तुम्हारे लिए खतरे से खाली नहीं। मैं तुम्हारे रहने के लिए शहर में कोई जगह तलाश कर रहा हूँ। अगर वहाँ तुम्हें किसी चावल की दुकान में काम सीखने भेज दिया जाय तो कैसा रहेगा?"

"शहर में काम सीखने?" मैंने सिर हिलाकर इनकार करते हुए कहा, "नहीं, मैं वहाँ नहीं जाऊँगा।" इन छः वर्षों में, जब मैं सुङ चाचा के पास रहता था, शहर जाने का मौका मुझे दो बार मिला। वहाँ मैंने दुकान पर काम सीखने वाले कमसिन लड़के देखे थे। वे काउन्टर के पीछे बिल्कुल उदास खड़े रहते थे, मानो पिंजरे में बन्द पंछी हों!

"तुम वहाँ चले जाओ तो अच्छा रहेगा," ऊ भइया ने सलाह दी। "हू हान-सान जानता है कि तुम यहाँ हो। तुम्हें यहाँ से किसी दूसरी जगह तो जाना ही पड़ेगा।"

"मैं नहीं जाऊँगा," मैं बुदबुदाया। "अगर यहाँ मेरी जान भी चली जाय तो भी छापामारों के साथ ही रहना पसन्द करूँगा।"

"इस तरह काम नहीं चलेगा मेरे भाई!" ऊ भइया ने बड़े धीरज से समझाते हुए कहा। "क्या तुम जानते हो कि तुम्हें काम सीखने शहर क्यों भेजा जा रहा है?इसलिए कि वहाँ तुम ज्यादा सुरक्षित रहोगे। शहर में हमारा एक साथी है, जो तुम्हारी देखभाल करता रहेगा।" यह देखकर कि मैं अब भी जाने को तैयार नहीं, उन्होंने अपनी बात जारी रखी, "पार्टी-संगठन को एक लाल सैनिक के बेटे की अच्छी तरह देखभाल करने का बन्दोबस्त करना ही चाहिए। जब तुम बड़े हो जाओगे तो योद्धाओं की पाँत में शामिल हो सकोगे।"

मैंने अन्त में उनकी बात मान ली और सिर हिला कर स्वीकृत देते हुए कहा कि मैं जाने को तैयार हूँ।

अगले दिन सुबह छन च्युन चाचा मुझे शहर ले गए। उन्होंने एक लकड़हारे का वेष बना लिया था। हम दोनों एक मोहर गढ़ने वाले के पास गए जिनका नाम चाओ था। छन च्युन चाचा ने कुछ देर उनसे बात की और तब मुझे उनके पास छोड़ गए। दो दिन तक मैं चाओ चाचा के घर रहा। तीसरे दिन उन्होंने बताया कि वे मुझे दक्षिणी पथ पर स्थित माओय्वान नामक चावल की एक दुकान पर ले जाएँगे जहाँ मैं एक शागिर्द के रूप में काम करूँगा। मैंने अपनी छोटी-सी पोटली उठा ली। जल्दी ही हमलोग एक दुकान में पहुँच गए जिसके आगे की तरफ तीन दर बने हुए थे। वहाँ चाओ चाचा ने मुझे एक साइनबोर्ड दिखाया जिस पर लिखा था : माओय्वान चावल की दुकान! "हम पहुँच गए हैं," उन्होंने कहा और तभी मैंने खाँसने की आवाज सुनी। दुकान का मालिक बाहर निकला। वह एक ठिगने कद का आदमी था जिसका सिर बड़ा-सा था।

"शन महोदय, मैं आपके लिए यह लड़का लाया हूँ," चाओ चाचा ने कहा।

उस नाटे दुकानदार ने एक बार मुझे सिर से पाँव तक देखा, "बिल्कुल देहाती जान पड़ता है, बिल्कुल देहाती!" वह बड़बड़ाया।

"यह लड़का मेरा रिश्तेदार है, गाँव से आया है," चाओ चाचा ने सफाई पेश की, "लेकिन बहुत ही

ईमानदार और भरोसे का है।''

''बहुत अच्छा, अन्दर आ जाओ,'' शन ने इशारे से बुलाते हुए कहा और हम दोनों दरवाजों की ओट के पीछे के कमरे में दाखिल हो गए। सबसे पहले उस आदमी ने चाओ चाचा से पूछा, ''जमानत का पैसा लाए हो?''

चाओ चाचा ने ढेर सारे नोट जेब से निकाले और बोले, ''फिलहाल आधे पैसे हैं। बाकी अगले महीने दे दूँगा।'' शान ने सिर हिला कर सहमति प्रकट की।

''लेकिन महीने के शुरू में पैसा जरूर ले आना,'' उसने कहा।

''जरूर,'' चाओ चाचा बोले।

मैं अजीब उलझन में पड़ गया। काम सीखने वालों के लिए आखिर मालिक को पैसा देना क्यों जरूरी होता है?अभी मैं इसका जवाब सोच ही रहा था कि उस आदमी ने अचानक पूछ लिया, ''तुम्हारा नाम क्या है?''

''क्वे चन-शान।'' खुशकिस्मती से चाओ चाचा ने मुझे पहले से ही बता दिया था कि मुझे अपना नाम क्या बताना है।

''कोई उपनाम?''

''तुङ-च।''

''अच्छा तो हम तुम्हें तुङ-च के नाम से ही पुकारेंगे,'' खाँसते हुए उसने मेज पर पड़े नोटों के पुलिन्दे की तरफ इशारा किया और बोला, ''इसे देखते हो?अब से तुम यहाँ काम करोगे। जो चीज तुम्हारी न हो, उसे हरगिज न उठाना। तुम जो कुछ भी चुराओगे, उसकी कीमत इस रकम में से काट ली जाएगी।''

तो यह मुझे चोर समझता है! यह जान कर मैं गुस्से से लाल हो गया। आखिर मैंने कब और कौन-सी चीज चुराई है?

''तुम तीन साल तक काम नहीं छोड़ सकते,'' वह बोला। ''अगर तुमने इससे पहले काम छोड़ा, तो जमानत का पैसा जब्त कर लिया जाएगा।''

''यह काम नहीं छोड़ेगा जनाब। यह लड़का हर किस्म की सख्त मेहनत कर सकता है। भला काम क्यों छोड़ने लगा?'' चाओ चाचा ने प्रयत्नपूर्वक मुस्कराते हुए उत्तर दिया।

''अगर यह लड़का अच्छी तरह काम करता रहा, तो तीन साल बाद करारनामे की मियाद खत्म होने पर जमानत का पैसा लौटा दिया जाएगा।'' दुकानदार ने फिर एक बार खाँसते हुए कहा।

मुझे लगा, तुरत बगावत करक इस जगह से भाग जाऊँ। लेकिन तभी मेरे मन में ऊ भइया और छापामार दल का ख्याल आ गया, जिन्हें खाने-पहनने की इतनी तंगी होते हुए भी मेरी खातिर इस मोटे आदमी को इतनी बड़ी रकम देनी पड़ रही थी और चाओ चाचा को इस आदमी के साथ निपटना पड़ रहा था। मैंने चाओ चाचा की तरफ देखा। वे मेरी ओर देखकर मुसकराए। उनकी मुसकराहट से मैं समझ गया कि उनकी इच्छा मुझे यहीं रखने की है। अगर मैंने इनकार किया, तो उनके लिए बड़ी मुश्किल पैदा हो जाएगी। इसलिए मैंने अपनी

भावनाओं को दबा लिया और कुछ भी न बोला।

उस मोटे दुकानदान ने नोटों का पुलिन्दा अपनी जेब में ठूँस लिया और मुझसे अपनी पोटली खोलकर दिखाने को कहा।

"अब तुम चलो और मालकिन से मिलो," उसने फिर एक बार खाँसते हुए कहा।

मालकिन ?यह क्या बला है ?मैं बिल्कुल हक्का-बक्का रह गया।

"चलो, मालकिन से मिल आएँ।" मैंने चाओ चाचा को कहते सुना और बड़ी ही अनिच्छा से उनके साथ दुकान के पिछवाड़े की तरफ चल दिया।

एक तंग गलियारे से गुजरने के बाद हम लोग आँगन में जा पहुँचे जहाँ उत्तर, पूर्व और पश्चिम की तरफ कमरे बने हुए थे। हमें पूर्व की तरफ के एक कमरे में ले जाया गया। वहाँ एक दुबली-पतली औरत बैठी थी। उम्र कोई तीस वर्ष रही होगी। चेहरा लम्बा, गाल की हड्डियाँ कुछ उभरी हुईं, सामने के दो दाँत पतले होंठों से कुछ बाहर निकले हुए। कोई साठ साल की एक अन्य हारी-थकी औरत छोटे दस्ते वाला झाड़ू उठाए झुककर कमरे को बुहार रही थी। एक छोटी बेंच पर कोई बारह साल की लड़की भी बैठी थी। चेहरा पीला, आँखें भेंगी और नाक नुकीली। वह एक लॉलीपाप चूस रही थी। कभी-कभी उसके भद्दे दाँतों की एक झलक दिखाई दे जाती थी। बीच की दीवार पर धन-देवता का एक विशाल चित्र टँगा था और उसके सामने एक लम्बी मेज पड़ी थी। उस पर दो मोमबत्तियाँ और एक धूपदान रखा हुआ था।

कमरे में घुसने से पहले वह मोटा दुकानदार दो बार खाँसा। "ये है तुम्हारी मालकिन," उस दुबली-पतली औरत की तरफ इशारा करते हुए वह बोला। मैंने उसकी तरफ एक नजर डाली, पर बोला कुछ नहीं वह मुझसे दूर चली गई और कमरे के दूसरे कोने में जा बैठी। इसके बाद लॉलीपाप चूसने वाली उस लड़की का परिचय कराया गया। "यह है मेरी बेटी," शन बोला। मैं इस बार भी चुप रहा। इन लोगों की बेरुखाई और उदासीनता मुझे अखर रही थी। मेरे मन में फिर आया कि यहाँ से भाग जाऊँ। लेकिन जब मैंने चाओ चाचा की तरफ देखा तो वे शन की तरफ मुड़कर कह रहे थे, "इस लड़के को दुकान के दूसरे कर्मचारियों से नहीं मिलाएँगे?"

दुकानदार शन तब मुझे और चाओ चाचा को दुकान में ले गया। काउन्टर के पीछे छः आदमी बैठे थे : मैनेजर छ्येन, मुनीम फङ, दो कर्मचारी मा और चू तथा दो काम सीखने वाले लड़के—बड़े का नाम वाङ कन-शङ था ओर दूसरे का ल्यू लाए-च। चाओ चाचा ने उनसे मेरा परिचय कराते हुए बताया कि मैं भी यहाँ काम सीखने आया हूँ और उम्मीद जाहिर की कि वे लोग मेरे साथ अच्छा बर्ताव करेंगे। जब सारा इन्तजाम हो गया, तो चाओ चाचा चले गए।

चावल की दुकान में जो कुछ मैंने देखा था उससे मेरा सिर चकराने लगा। जमानत की रकम जमा करना, मेरी पोटली की तलाशी लिया जाना, तथाकथित मालकिन से मिलना—यह सब आखिर क्या था?मुझे अपने दिल पर एक भारी बोझ महसूस होने लगा।

अब मैं काउन्टर के पीछे खड़ा था। लोग आ-जा रहे थे। मैंने अपने गाँव में इतने ज्यादा आदमी कभी नहीं देखे थे। वे लोग एक के बाद एक चावल खरीदने आते और पैसे देकर चले जाते। और यही सिलसिला लगातार

चलता रहता। मैं किसी के काम में बाधक नहीं बनना चाहता था, इसलिए दुकान के एक कोने में खड़ा होकर यह सब देखता रहा।

जब रात हो गई और लकड़ी के किवाड़ लगाकर दुकान बढ़ा दी गई, तब कहीं काउन्टर के पीछे फर्श पर बाकी दो काम सीखने वाले साथियों के साथ मैंने अपना बिस्तर बिछाया। लकड़ी के सख्त फर्श पर लेटते ही मेरी आँखो से न चाहते हुए भी आँसू गिरने लगे। मजदूर-किसान जनवादी सरकार के शासन वाले ल्यूशी गाँव की याद मुझे सताने लगी। वहाँ गरीबों पर जुल्म नहीं होता था। मुझे याद आया, लम्बे अभियान पर जाने से पहले पिताजी ने माँ से क्या कहा था। उन्होंने कहा था कि अच्छे दिन तब आएँगे जब दुनिया के गरीब बन्धन-मुक्त हो जाएँगे और उनका शोषण-उत्पीड़न नहीं होगा।... आज यहाँ मेरा उत्पीड़न हो रहा है, शोषण हो रहा है! मैं बड़ी घुटन महसूस करने लगा।

चावल की दुकान में रोजाना मुझे मालिक, मैनेजर और बाकी कर्मचारियों के हुक्म पर चलना पड़ता था। वह लम्बी दुबली-पतली औरत अक्सर अपनी कर्कशी आवाज में, जो उसकी सूरत की ही तरह भद्दी थी, जोर-जोर से चीखती हुई मुझसे कहा करती थी : "तुङ-च, जा मेरे लिए एक सिगरेट का पैकेट ले आ"; "तुङ-च, जा मेरी बेटी के लिए कुछ मिठाई ले आ!" लगता था उसकी बेटी सारा दिन मिठाई ही खाती रहती या कुछ न कुछ चरती ही रहती। जब भी उसे खाने के लिए कुछ और चीज की इच्छा होती तो लाने के लिए मुझे ही दौड़ाया जाता। कभी-कभी मुझे ऐसा लगता कि मेरा गुस्सा फूट पड़ेगा। आखिर तुम्हारे भी तो हाथ-पाँव हैं। क्या खुद जाकर नहीं ला सकतीं। मन करता जवाब में जोर से चीख कर मैं भी यही कह दूँ। कितना अच्छा होता। अगर इस शहर के लोग भी हमारे ल्यूशी गाँव की ही तरह उठ खड़े होते और इन्कलाब कर देते। जरा क्रान्ति तो होने दो। फिर देखेंगे कि बिना कोई काम किए घर बैठे तुम्हारे मन की मुराद कैसे पूरी होती है!

जब हालत बर्दाश्त के बाहर हो गई, तो एक दिन मैं चाओ चाचा से मिलने गया। "चाचाजी, मुझे अपने गाँव वापस जाने दीजिए। मैं अपने को यहाँ की जिन्दगी में नहीं ढाल सकता," मैंने उनसे मिन्नत की।

चाओ चाचा मेरी तरफ देखकर प्यार से मुस्कराए। उन्होंने मुझे अपने पास बिठा लिया और बोले, "हू हान-सान तुम्हारी हर जगह तलाश कर रहा है। तुम्हारा वापस जाना खतरे से खाली नहीं।" यह देखकर कि उनकी बात का मुझ पर अभी कोई असर नहीं हुआ, उन्होंने अपनी बात जारी रखी, "माना कि चावल की दुकान में तुम्हें बहुत सी बेजा बातें बर्दाश्त करनी पड़ती हैं, मगर वहाँ तुम ज्यादा सुरक्षित हो क्योंकि वहाँ तुम पर किसी का भी ध्यान नहीं जाएगा।"

जो कुछ चाओ चाचा ने कहा, वह सच था। यह निश्चित था कि हू हान-सान लाल सैनिकों के परिवार के किसी भी सदस्य को छोड़ेगा नहीं। "उचित वक्त आने पर तुम दुकान पर काम करना छोड़ सकते हो," उन्होंने मुझे भरोसा दिलाया।

"मैं वहाँ रोजाना यही सुनता रहता हूँ कि पैसा कैसे बनाया जाए—इसके अलावा और कुछ नहीं सुनाई देता," मैंने चाओ चाचा से शिकायत की।

"हाँ, एक बात ध्यान में रखना," चाओ चाचा ने मेरी बात काटते हुए सलाह दी, "चावल की दुकान में अपना वक्त बर्बाद न करना।" यह कहते हुए वे मुझे अन्दर के कमरे में ले गए और बिस्तर क नीचे से एक पत्रिका निकालकर मुझे थमाते हुए बोले, "यह एक पुरानी पत्रिका है। इसे अपने साथ ले जाओ। शाम के वक्त इसे पढ़ा करना। इसमें क्रान्ति के बारे में बहुत सी सामग्री है।"

मैंने सोचा, इस पुरानी पत्रिका को, जिसका कवर-पेज बहुत से लोगों के पढ़ने की वजह से फट चुका है, बड़ी सावधानी से रखना चाहिए जिससे इस पर किसी की नजर न पड़े। इसलिए मैंने उसे सम्भाल कर अपनी अन्दर की जेब में रख लिया। चलने से पहले चाओ चाचा ने मुझे एक बार फिर ढाढ़स बँधाया कि ज्योंही परिस्थिति पहले से ज्यादा अनुकूल होगी, मैं चावल की दुकान पर काम करना छोड़ सकता हूँ। चूँकि मैं इसे पार्टी-संगठन का फैसला समझता था, इसलिए बिना कोई एतराज किए पत्रिका लेकर वापस चला आया।

चावल की दुकान में काम सीखने वाले दो अन्य लड़कों के साथ मेरी अच्छी तरह पटने लगी, खास तौर पर ल्यू लाए-च के साथ, जो एक ऐसे गाँव के गरीब परिवार से आया था जहाँ के लोग क्रान्ति की झलक देख चुके थे। जब हम तीनों रात को सोने के लिए फर्श पर टाट के बोरों का बिछौना बिछाते तो वाङ लेटते ही सो जाता। लेकिन ल्यू और मैं काफी देर तक बातें करते रहते। कभी-कभी चिराग की धीमी रोशनी में हम दोनों चाओ चाचा की दी हुई पत्रिका भी पढ़ते।

हम पर जितना ज्यादा जुल्म होता, उतना ही ज्यादा हमारे दिलों में इन्कलाब करने की तड़प बढ़ती जाती। हमारी आँखें खुल चुकी थीं। क्रान्ति करने के सिलसिले में जो थोड़ा-बहुत हमें मालूम था, उसके बारे में हम दोनों आपस में चर्चा करते रहते। पत्रिका में लिखी इन पंक्तियों को हम दोनों धीमे-धीमे बड़ी तन्मयता के साथ पढ़ते थे :

जरा सोचो तो भाई, सोचो,
जरा देखो तो भाई, देखो,
है आज कैसा अजब जमाना?
न करते कोई काम जमींदार,
फिर भी उनके पास गल्ले की भरमार।
धनी लोग सदा निठल्ले बैठे रहते,
खूब खा-खा कर मोटे होते रहते।
मजदूर-किसान हैं अपना खून-पसीना बहाते,
भरपेट भोजन फिर भी न जुटा पाते,
तन ढकने को उनके पास कपड़ा तक नहीं,

सिर छुपाने का उनके पास झोंपड़ा तक नहीं।

जरा सोचो तो भाई, सोचो,

जरा देखो तो भाई, देखो,

क्या ऐसा जमाना हम सबको

मिल कर बदल नहीं देना चाहिए?

टिमटिमाते चिराग की रोशनी छन-छन कर हम दोनों पर पड़ती रहती, जब ल्यू लाए-च और मैं रात में पास-पास बैठे चावल की दुकान में गुजर रही अपनी जिन्दगी की चर्चा करते कि किस तरह हमारे साथ हमेशा बुरा बर्ताव किया जाता है और किस तरह हमें हमेशा दुत्कारा-फटकारा जाता है।

एक दिन जब बारिश हो रही थी तो उस भद्दी कर्कशास्त्री ने, जिसका शरीर महज हड्डियों का ढाँचा था, मुझे पीछे के आँगन में बुलाया। उसने मुझे पेशाबदान की मरम्मत करवाने और अपनी लड़की के लिए कुछ मिठाई लाने भेजा। जब मैं लौटा तो काफी भीग गया था। तभी उसकी लड़की टट्टी करना चाहती थी। बारिश के कारण पाखाने में न जाकर उसने वहीं एक तसले में टट्टी कर दी। जरा सोचिए तो! उस औरत ने मुझे हुक्म दिया कि तसले की टट्टी फेंक कर उसे साफ कर लाऊँ! मैं गुस्से से आगबगूला हो गया और कमरे से बाहर निकल कर सीधा सामने दुकान पर जा पहुँचा।

मैं भीगा हुआ था और ठण्ड से ठिठुर रहा था। ल्यू लाए-च की इस सलाह पर ध्यान दिए बगैर कि मुझे कपड़े बदल लेने चाहिए, मैं बिना हिले-डुले चुपचाप खड़ा था। तभी वह औरत चीखती-चिल्लाती वहाँ आ पहुँची, जैसे मुझे कच्चा ही चबा डालेगी। अपने पति के सामने उसने एक अच्छा-खासा हंगामा खड़ा कर दिया। उसके पति ने भी मुझे टट्टी फेंक कर तसला तुरत साफ करने का हुक्म दिया। मैंने साफ इनकार कर दिया। वह मेरी पिटाई करने मुझ पर झपटने ही वाला था कि बूढ़ी नौकरानी ने आकर बताया, तसला उसने पहले ही साफ कर डाला है। यह सुनते ही उसकी पत्नी बुढ़िया पर बरस पड़ी, "तसला साफ करने को तुम्हें किसने कहा?मैंने यह काम इस छोकरे को दिया था। इसने मेरा कहना क्यों नहीं माना, इसके लिए मैं इसे सबक सिखाऊँगी!"

दुकानदार फिर एक बार मुझे मारने दौड़ा। लेकिन कर्मचारियों ने उसे रोक दिया।

फिर भी उस मरियल औरत ने मुझे जाने नहीं दिया। उसने चिल्लाकर कहा कि मुझे मुर्गा बनने की सजा दी जाय। "इस पाजी छोकरे जैसा काम सीखने वाला लड़का मैंने अपनी जिन्दगी में कभी नहीं देखा," वह गुस्से से लाल-पीली होकर बोली।

"वहाँ जाकर मुर्गा बन," दुकानदार ने मुझे धमकाते हुए हुक्म दिया, "इसके अलावा आज रात तुझे खाना भी नहीं मिलेगा!"

मेरी कँपकँपी बन्द हो चुकी थी। मैं गुस्से से पागल हो उठा, फिर भी मैंने अपने को काबू में रखा। मैं दौड़कर पिछवाड़े के गोदाम में जा पहुँचा। शन का जोर-जोर से "मुर्गा बन, मुर्गा बन!" चिल्लाना अब भी मेरे कानों में पड़ रहा था। मैंने इस पर जरा भी ध्यान नहीं दिया। चूँकि बाहर तेज बारिश हो रही थी और वह मोटा दुकानदार भीगना नहीं चाहता था। इसलिए उसने सिर्फ जोर-जोर से चिल्लाकर ही अपनी तसल्ली कर ली।

अन्त में दरवाजा जोर से भींचते हुए मैंने अपने को गोदाम के अन्दर बन्द कर लिया। और बात वहीं खत्म हो गई।

खिड़की के पास खड़े होकर मैंने बाहर झाँका। पानी अब भी बरस रहा था। भीगे कपड़ों में मुझे कुछ ठण्ड महसूस होने लगी। उस मोटे दुकानदार और उसकी दुबली-पतली औरत के प्रति मेरा दिल रोष और घृणा से भर गया। उन्होंने मुझ पर मनमाने हुक्म चलाए, मुझे अपमानित किया और मुर्गा बनने की सजा देनी चाही! जाहिर है कि वे इसे अपना हक समझते थे। भला यह भी कोई जिन्दगी थी?मेरे मन में आया, ऐसी दुकान को आग लगा देनी चाहिए।

पाँच

हमलोग क्रान्ति के लिए बेचैन थे। लेकिन क्रान्ति का ज्वार अभी इस काउन्टी-केन्द्र तक नहीं पहुँच पाया था। हम लाल सेना के आगमन की प्रतीक्षा कर रहे थे। लेकिन चाओ चाचा ने हमें बताया कि वह मोर्चे पर जापानी हमलावरों के खिलाफ लड़ रही है। इस प्रकार, आशाओं और आकांक्षाओं का ताना-बाना बुनता हुआ मैं एक वर्ष से अधिक समय तक चावल की दुकान पर काम करता रहा।...

एक और वसन्त आया। अब गरीबों के लिए जिन्दगी गुजारना और भी मुश्किल हो गया था। पिछले वर्ष के सूखे ने धान की फसल को चौपट कर दिया था। देहातों में गरीब किसानों के पास खाने को चावल का एक दाना तक नहीं बचा था—जो थोड़ी बहुत फसल हुई थी वह भी उनसे छीन ली गई शहर में गरीबों के पास चावल खरीदने को पैसा नहीं था, क्योंकि कीमतें रोजाना चढ़ती जा रही थीं।

लेकिन दुकानदार शन के गोदामों में चावलों की बोरियों का अम्बार लगा हुआ था।

एक दिन शाम के वक्त ल्यू लाए-च ने मुझे बुलाया और दुकान के पिछले दरवाजे की तरफ जाने को कहा, जो एक नदी की तरफ खुलता था। वहाँ एक नाव खड़ी थी। मैंने देखा वाङ कन-शङ और दुकान का एक अन्य कर्मचारी नाव से बोरियाँ उतार कर अन्दर ले जा रहे हैं। ल्यू लाए-च ने मुझे मदद के लिए बुला लिया। हम लोगों ने मिलकर एक बोरी उठा ली जो मुझे खासतौर पर भारी लगी, चावल की बोरी से कहीं ज्यादा भारी। "इसमें आखिर है क्या?" बोली टटोले हुए मैंने ल्यू लाए-च से पूछा। ल्यू लाए-च ने सिर हिला दिया, मानो कह रहा हो कि यह मत पूछो। उन भारी बोरियों को हम पिछवाड़े के आँगन में ले गए। ऐसी कई बोरियों को उतार कर गोदाम के बाहर लगा दिया गया। जब वहाँ कोई नहीं था तो कौतूहलवश मैंने एक बोरी खोल का मुट्ठीभर सामान बाहर निकाल लिया। उसमें चावल नहीं बल्कि बारीक कंकड़ भरे थे। यह किसलिए, मैंने ल्यू लाए-च से पूछा। उसने जवाब दिया, "धीरज रखो, तुम्हें खुद ही सब कुछ समझ में आ जाएगा।"

आम तौर पर हम काम सीखने वाले लड़के सबसे बाद में छुट्टी करते थे। लेकिन उस रात हमें जल्दी छुट्टी दे दी गई मैं जानना चाहता था कि आखिर हो क्या रहा है?इसलिए जागता रहा। कुछ देर बाद मैंने देखा, मैनेजर छ्येन और अन्य दो आदमी गोदाम में जा रहे हैं। ल्यू लाए-च ने मुझे कोहनी मार कर इशारा किया और हम दोनों पास ही एक ऐसी जगह जा छिपे जहाँ से सब कुछ नजर आ रहा था। दुकानदार शन और मैनेजर छ्येन

मिलकर कंकड़ की बोरी चावल के ढेर में खाली कर रहे थे, जबकि बाकी दोनों आदमी बेलचे से उसे अच्छी तरह मिला रहे थे! अच्छा, तो यह बात है! ये लोग चावल के साथ कंकड़ मिलाकर उसका वजन बढ़ा रहे हैं और ऐसा माल लोगों को बेच रहे हैं! खून चूसने वाले दुकानदार शन! लोगों से तूने पहले ही क्या कम पैसा लूटा है?मैं और नजदीक से देखने के लिए आगे बढ़ने ही वाला था कि ल्यू लाए-च ने मुझे पीछे खींच लिया और हम दोनों लौट कर अपने बिछौने पर सोने चले गए। मैं काफी देर तक जागता रहा और सोचता रहा कि इन जालिम लोगों के लिए कब तक काम करता रहूँगा।

अगले दिन तीसरे पहर जब मैं शन की लड़की के लिए मिठाई लेने बाहर गया तो लगे हाथों चाओ चाचा से मिलने भी जा पहुँचा। वे एक मोहर गढ़ रहे थे। मुझे देखते ही उठ कर खड़े हो गए और हम दोनों भीतर चले गए।

"चावल की दुकान की जिन्दगी के आदी हो गए या नहीं?" उन्होंने मुस्कराते हुए कहा।

"नहीं, कतई नहीं!" मैंने अपना सिर हिलाकर इनकार करते हुए कहा। "वे लोग हमेशा बड़ी कमीनी हरकतें करते रहते हैं।"

"कैसी कमीनी हरकतें?"

"आधी रात के वक्त चावल में कंकड़ मिलाते हैं!" और फिर मैंने चाओ चाचा को उस रात की सारी घटना सुना दी।

"जमींदार और सरमाएदार दुनिया में सबसे ज्यादा खूँखार होते हैं। अपने मुनाफे के लिए वे बुरी से बुरी हरकत से भी बाज नहीं आते," चाओ चाचा ने रोषपूर्ण स्वर में कहा।

"इन दुष्ट लोगों के साथ मैं अब और नहीं रहूँगा," मैं बोला। "चावल की दुकान में अब मैं काम नहीं करूँगा। मुझे छापामारों के पास भेज दीजिए। मैं अब चौदह वर्ष का हो गया हूँ। मेरी वजह से अब उन्हें कोई परेशानी नहीं होगी।"

चाओ चाचा कुछ देर तक कमरे में चक्कर काटते रहे। और फिर सिर हिलाकर अपनी असहमति प्रकट करते हुए बोले, "क्रान्तिकारी परिस्थिति का इस समय बड़ी तेजी से विकास हो रहा है। ज्यादातर छापामार दल जापानियों से लड़ने मोर्चे पर गए हुए हैं।..."

यह सोचकर कि अपनी बात मनवाना इस समय बिल्कुल नामुमकिन है, मैंने चावल की दुकान छोड़ने का एक और रास्ता सोच निकाला। मैंने कहा, "चाओ चाचा, आप मुझे मोहर गढ़ना क्यों नहीं सिखा देते, मैं आपसे यह काम सीख लूँगा।"

"लेकिन मैं तो जल्दी ही यहाँ से जाने वाला हूँ," चाओ चाचा ने मुस्कराते हुए जवाब दिया।

"यहाँ से जाने वाले हैं?"

'हाँ, मुझे एक नया काम सौंपा गया है। मुझे अवश्य जाना होगा।"

"मैं भी आपके साथ चलूँगा।"

"नहीं, मैं तुम्हें अपने साथ नहीं ले जा सकता," चाओ चाचा ने मेरी पीठ प्यार से थपथपाते हुए कहा। "तुम यहाँ रह कर ज्यादा सुरक्षित हो। साथ ही, यहाँ रहने से तुम्हें इस बात का भी अनुभव हो जाएगा कि आज की हमारा समाज-व्यवस्था कितनी जालिम है। यहाँ से जाकर लाल सेना में भरती होने के लिए मैं तुमसे उसी वक्त कहूँगा जब ऐसा मुमकिन होगा।" और तब चाओ चाचा ने मुझे जूते का एक जोड़ा दिया और बोले, "इसे ले लो। मैंने तुम्हारे लिए खरीदा है।"

"मैंने जूते का जोड़ा उनसे ले लिया। उनके स्नेहपूर्ण व्यवहार से मेरा दिल भर आया। क्रान्तिकारी पाँतों में हर जगह हमें अपने ही कुटुम्बी-जनों का सा स्नेह मिलता है।

चाओ चाचा ने अपने बिस्तर के नीचे से एक किताब निकाल कर मुझे दी और बोले, "शाम को खाली वक्त में पढ़ने के लिए तुम्हें एक और किताब दे रहा हूँ। अपना ज्ञान बढ़ाओ तथा क्रान्ति के बारे में और अधिक जानकारी हासिल करो। भविष्य में तुम्हारे काम आएगी।" मैंने किताब लेकर अपने कोट के अन्दर छिपा ली। चाओ चाचा का शुक्रिया अदा करने के बाद मैं चावल की दुकान में लौट आया।

जब मैं लौटा तो अन्दर से बातचीत की आवाज सुनाई दी। पता लगाने पर मालूम हुआ कि पुलिस ब्यूरो का कप्तान सुन दुकानदार शन से बातें कर रहा है। वह कह रहा था, "शन साहब, आपने इतना सारा चावल जमा कर रखा है और अभी इसे नहीं बेचना चाहते। शहर के लोगों को चावल की जरूरत है और खरीदने के लिए उन्हें चावल न मिला तो फिर क्या होगा?"

"मुझे इसकी खाक परवाह नहीं," शन ने जवाब दिया। "चावल का भाव चढ़ रहा है। मैं और अच्छे दाम वसूल करने का इन्तजार कर रहा हूँ!"

"जानते हैं कि आप सट्टेबाजी कर रहे हैं?पुलिस कप्तान ने कहा। "अगर लोगों को यह बात मालूम हो गई और उन्होंने दंगा शुरू कर दिया, तो हालत काबू से बाहर हो जाएगी।"

"तब मुझे आपकी मदद की जरूरत होगी। आप जैसे दोस्तों के रहते मुझे भला किस बात का डर है?" पुलिस कप्तान की तरफ बड़ी मिन्नत-खुशामद भरी नजरों से देखते हुए उस मोटे दुकानदार ने कहा।

"आप तो दोनों हाथों से दौलत बटोर रहे हैं और मैं महज एक बिचौलिया हूँ। है कि नहीं?हा-हा-हा!"

"मगर मैं भला आपको क्यों भूलने लगा..." यह कहते हुए दुकानदार ने नोटों का एक पुलिन्दा निकाल कर पुलिस कप्तान के हाथ में रख दिया।...इसके बाद दोनों कहकहे लगाने लगे।

अचानक दुकान के सामने की ओर से एक बच्चे के रोने की आवाज आई मैं झटपट वहाँ जा पहुँचा। चीथड़ों में लिपटी एक स्त्री अपने एक हाथ में बच्चा सम्भाले और दूसरे हाथ में बाँस की टोकरी थामे खड़ी थी।

काउन्टर पर दो छोटे नोट पड़े थे। काउन्टर के पीछे बैठे कर्मचारियों से वह गिड़गिड़ा कर कुछ चावल देने को कह रही थी। "भइया, थोड़ा-सा चावल दे दो। आपकी बड़ी मेहरबानी होगी। हमने दो दिन से कुछ नहीं खाया। इस बच्चे पर तो रहम करो। बेचारा भूख से तड़प रहा है," वह गिड़गिड़ा कर बोली। बच्चे की उम्र कोई दो या तीन साल रही होगी। वह निहायत कमजोर और दुबला-पतला था। उसका सिर लटक रहा था; भूख का मारा शरीर सिर का बोझ उठाने में असमर्थ था; गाल पिचक गए थे और आँखें डरावनी लग रही थीं।

"मैं कुछ नहीं कर सकता। चावल खत्म हो चुका है। एक दाना भी बाकी नहीं," मैनेजर छ्येन ने झूठ बोलते हुए कहा। "किसी और दुकान में पता कर लो।"

लेकिन वह स्त्री टस से मस न हुई तभी शन वहाँ आ पहुँचा। उस गरीब स्त्री और उसके रोते बच्चे की तरफ घूर कर देखते हुए वह गुर्राया, "मेरी दुकान पर क्यों रो-पीट रही हो, क्यों हंगामा मचा रही हो?यहाँ किसी की मौत थोड़े ही हुई है। निकल जाओ यहाँ से!"

"बच्चा भूखा है दुकानदान साहब। मुझे मुट्ठीभर चावल बेच दीजिए," वह स्त्री गिड़गिड़ा कर बोली। साथ ही वह बच्चे को भी पुचकारने लगी ताकि वह रोए नहीं।

"निकल जाओ! सारा चावल काफी पहले ही बिक चुका है," दुकानदार ने दोनो छोटे नोट काउन्टर से नीचे फेंक दिए और भीरत चला गया।

स्त्री ने झुक कर नोट उठा लिए और काउन्टर के पीछे बैठे कर्मचारियों की तरफ मायूसी के साथ देखती हुई धीरे-धीरे दुकान से बाहर जाने लगी। बच्चा अब भी उसकी गोद में रो रहा था। आँसुओं में गीली आँखों से जब उसने मेरी ओर देखा तो जैसे मेरे कलेचे में छुरी चल गई और हृदय आर्तनाद कर उठा।

वह स्त्री चली गई, लेकिन उसके बच्चे का रोना-बिलखना मेरे कानों में गूँजता रहा। सचमुच, भूखे इंसान से बदतर और कौन हो सकता है! मैं मन ही मन दुकानदार शन को कोसने लगा, जो लोगों को तो भूखों मारने पर तुला हुआ था और खुद चावल की जमाखोरी करके ज्यादा से ज्यादा दाम वसूल करने के इन्तजार में था!

दुकान पर चावल जितना कम बेचा जाने लगा, खरीदने वालों की कतार उतनी ही लम्बी होती गई हर रोज सुबह दुकान खुलने से पहले ही लोगों की लम्बी कतारें लग जातीं। शन हुक्म देता, कह दो, "अभी चावल नहीं है।" इसे सुनकर गुस्से से लोगों की त्यौरियाँ चढ़ जातीं। कुछ लोग गालियाँ भी देने लगते।

एक दिन तीसरे पहर हम तीनों काम सीखने वाले लड़कों को हुक्म मिला कि दुकान के पिछले दरवाजे पर जाकर नाव से चावल की एक और खेप उठा लाएँ। ल्यू लाए-च और मैं अभी एक ही बोरी उठाकर लाए थे कि सामने दुकान में शोरगुल सुनाई दिया। मैनेजर छ्येन दौड़ा-दौड़ा आया और हमसे दुकान बढ़ाने को कहा। हम दुकान के सामने की ओर जा पहुँचे। कितनी बड़ी भीड़ जमा थी वहाँ! सब लोग चिल्ला रहे थे, "चावल दो! हमें चावल दो!" दुकानदार शन पसीने से तर-बतर खड़ा था। दोनों कर्मचारी गला फाड़-फाड़ कर चीखते हुए, हंगामा मचाने वाली भीड़ को शान्त करने की कोशिश कर रहे थे। यह दृश्य देखकर मुझे अपने गाँव की याद आ गई, जब हमने स्थानीय निरंकुश जमींदार को पकड़ कर गाँवभर में घुमाया था ओर उसकी जमीन का बँटवारा कर दिया था; हमलोग उसके अनाज-गोदाम में जा घुसे थे, चावल की बोरियाँ घसीट कर बाहर निकाल लाए थे

और चावल गरीब किसानों में बाँट दिया था। मेरी दिली तमन्ना थी कि ये लोग भी दुकान को तोड़ डालें और चावल की बोरियाँ उठा ले जाएँ! मैं दिल से चाहता था कि वे लोग दुकानदार शन को पकड़ लें! यह सब सोचते-सोचते अनायास ही मेरी हँसी फूट पड़ी।

तड़ाक! दुकानदार ने जोर से एक तमाचा मेरे गाल पर जड़ दिया। "किस बात पर हँस रहे हो?" उसने गुस्से से पूछा। "जल्दी करो, दुकान के किवाड़ बन्द कर दो।" उसके माथे की नसें उभर आईं, चेहरा क्रोध से तमतमा उठा और वह चोट खाए सुअर की तरह छटपटाने लगा।

मैं आहिस्ता-आहिस्ता बाहर चला गया। वहाँ लोगों की भीड़ जमा थी। मैं जोर से चिल्लाया, "हटो, रास्ता छोड़ो, हम दुकान बढ़ा रहे हैं।"

एक रिक्शावाले ने मेरी तरफ बढ़कर पूछा, "तुम दुकान के किवाड़ बन्द क्यों कर रहे हो?सूरज अभी कहाँ डूबा?हमें चावल खरीदना है!" मैंने उसे धीमे से बताया कि चावल की बहुत-सी बोरियाँ दुकान के पिछवाड़े उतारी जा रही हैं। वह जोर से चिल्लाया, "दुकानदार साहब, आप चावल बेचेंगे या नहीं?"

"मेरे पास चावल नहीं है।"

रिक्शावाला जोर से बोला, "सुनो भाइयो, सुनो! चावल की बहुत-सी बोरियाँ दुकान के पिछले दरवाजे पर उतारी जा रही हैं। फिर भी दुकानदार हमें अनाज का एक दाना तक बेचने को तैयार नहीं। वह हमें भूखा मारना चाहता है। चलो, सब लोग दुकान के पिछले दरवाजे पर चलें।" यह कहता हुआ वह दौड़कर दुकान के पीछे की तरफ नदी के घाट पर जा पहुँचा और सब लोग उसके पीछे-पीछे हो लिए।

यह देख दुकानदार शन का दिल दहल उठा। "जाओ, जल्दी जाओ!... पिछले दरवाजे पर जाओ... और चावल भीतर ले आओ!" शन की आवाज काँप रही थी।

"क्या मुझे अब भी दुकान के किवाड़ बन्द करने होंगे?" मैंने जान-बूझकर पूछा।

"बेशक," शन ने मुझे घूरते हुए कहा।

"कौन-सा काम पहले करना है?चावल भीतर लाना या दुकान के किवाड़ बन्द करना?" मैंने फिर से पूछा।

"दोनों ही काम फौरन करो! जल्दी से!" वह मुझ पर बरस पड़ा और बाकी लोगों के आगे-आगे दुकान के पिछले दरवाजे की तरफ लपका।

दुकान के किवाड़ बन्द करने के बाद मैं भी पिछले दरवाजे पर जा पहुँचा। नदी के तट पर भारी भीड़ जमा थी। लोग चावल की बोरियों को अन्दर ले जाने से रोक रहे थे। शन भी, जिसने जिन्दगी में कभी तिनका तक नहीं उठाया था, आज मैनेजर छ्येन के साथ बोरी उठाकर ले जा रहा था। मा और चू भी बोरी उठा रहे थे। वे लोग उत्तेजित भीड़ से घिरे हुए थे।

"तुमने तो कहा था कि चावल बिल्कल नहीं है। आखिर यह क्या है?" रिक्शावाले ने पूछा।

"अगर मेरे पास चावल हो भी, तो तुम्हें हरगिज नहीं बेचूँगा!" दुकानदार ने प्रतिवाद किया।

"यह सट्टेबाजी है, जमाखोरी है!"

"यह कुछ भी हो, तुम्हें इससे क्या मतलब!"

"जब तुम हमें भूखों मारने पर उतारू हो, तो हमें सब चीजों से खुद ही निपटना होगा।" यह कहते हुए रिक्शावाला लोगों से मुखातिब होकर जोर से चिल्लाया, "आओ भाइयो, आओ! चावल खुद-ब-खुद उठा लो!"

भीड़ आगे की तरफ उमड़ पड़ी। एक आदमी ने चावल की बोरी खोल डालने की कोशिश की, जिसे शन और छ्येन उठाए हुए थे। दुकानदार लगभग गश खाकर गिरने लगा। उसने बोरी जमीन पर पटक दी और खुद उस पर लेट गया। चीखता-चिल्लाता हुआ वह अपने हाथ-पाँव पटकने लगा। "खबरदार, अगर किसी ने मेरे चावलों को हाथ लगाया तो उसे अपनी जान से हाथ धोना पड़ेगा।" उसने कुछ ऐसा नजारा पेश किया कि मैं एक बार फिर बरबस हँस पड़ा।

इसी बीच, भीड़ का एक हिस्सा नाव पर चढ़ गया और आक्रोश में भर कर चावल की बोरियों को नदी में फेंकने लगा। छप्प, छप्प! जब तीसरी बार छप्प की आवाज हुई तो दुकानदार चावल की उस बोरी से उठकर जिस पर वह लेटा था, अपनी पूरी ताकत से चिल्लाया, "जो कोई चावल नदी में फेंकेगा, उसे इसकी कीमत चुकानी पड़ेगी!" और ज्योंही शन नाव की तरफ गया, ग्राहकों की भीड़ चावल की उस बोरी पर टूट पड़ी जिसकी हिफाजत करने की लिए अब वहाँ कोई नहीं रह गया था। बोरी खोलकर उन्होंने अपनी-अपनी थैलियाँ और टोकरियाँ भर लीं। तब और लोग आगे आए और उस बोरी पर झपट पड़े जिसे मा और चू उठाए हुए थे। जो लोग इन बोरियों तक नहीं पहुँच पाए, वे नाव की तरफ लपके। दुकानदार शन मुर्गी के चूजे की तरह इधर-उधर भागता रहा। अचानक नाव पर से किसी ने शोर मचाया, "बचाओ, नाव डूब रही है!" हर आदमी नाव के अगवाड़े की तरफ दौड़ा; और फिर "गड़म्म" की आवाज के साथ नाव डूब गई

तट पर भारी हंगामा मच गया। जो लोग तैरना जानते थे वे पानी में कूद पड़े और डूबते लोगों को बचाने में जुट गए। दुकानदार शन भी नदी में गिर गया था और बाहर निकलने के लिए छटपटा रहा था। क्या नजारा था—वह मोटा आदमी पानी में डूबता-उतराता हुआ हताश होकर हाथ-पाँव मार रहा था! अगर वह डूब कर मर ही जाय तो कौन बड़ी बात होगी! चावल में कंकड़ मिलाकर और जमाखोरी व सट्टेबाजी के जरिए वह अब तक न जाने कितनी जानें ले चुका है! जो लोग नदी में गिर गए थे, उन्हें एक-एक करके बाहर निकाल लिया गया। लेकिन शन उनमें नहीं था। कारण, उसे बचाने की किसी को रत्तीभर भी इच्छा नहीं थी। अन्त में दुकान के एक कर्मचारी मा ने उसे खींच कर बाहर निकाला। पानी भर जाने से उसका पेट इतना फूल गया था कि वह तट पर पड़े एक मोटे मेंढक की तरह लग रहा था।

सभी को नदी से बाहर निकाला जा चुका था। चावल की बोरियाँ नदी की तह में बैठ गई थीं! दुकानदार शन एक पागल आदमी की तरह पानी की ओर एकटक देखता हुआ प्रलाप करने लगा, "हाय, मेरा चावल! हा, मेरा चावल! जल्दी करो, जल्दी निकालो उसे!" और फिर वह गिरता-पड़ता घर की ओर चल पड़ा। मैनेजर छ्येन उसे सहारा देने गया तो उसने छ्येन के कान में धीरे से कुछ कहा। छ्येन ने सिर हिलाकर हामी भरी और वहाँ से चला गया।

जब चावल की दो बोरियाँ लोगों ने खाली कर दीं, और बाकी नदी में डूब गईं, तो वे फिर एक बार दौड़कर दुकान के सामने जा पहुँचे। उनमें बच्चा गोद में लिए वह स्त्री भी थी।

"क्या यह अफसोस की बात नहीं कि सारा चावल नदी में डूब गया है?" वह मुझसे बोली।

"इससे खास फर्क नहीं पड़ेगा," मैंने जवाब दिया। "चावल को नदी से बाहर निकाल लिया जाएगा। हाँ, दुकानदार को अब इसे बेचने के लिए इसका वजन बढ़ाने की जहमत नहीं उठानी पड़ेगी।" बच्चा अब भी रो रहा था; स्त्री की टोकरी अब भी खाली थी। मैंने पूछा, जब दो बोरियों को खोला गया था तो तुमने भी चावल क्यों नहीं उठा लिये। उसने बताया कि एक हाथ में बच्चा और दूसरे हाथ में टोकरी होने के कारण भीड़ के बीच से रास्ता नहीं बना पाई "तुम्हारा मालिक बड़ा बेरहम है। उसे तो सिर्फ पैसा बनाने से मतलब है, लोग चाहे भूखों मरें," यह कहती हुई वह थकी-हारी स्त्री दुकान के आगे की तरफ बढ़ गई मैं भी उसके पीछे-पीछे हो लिया।

दुकान के आगे की तरफ से लोगों के चीखने-चिल्लाने और किवाड़ खटखटाने की आवाज आ रही थी। दुकान के बन्द किवाड़ों को लोग जोर-जोर से पीट रहे थे। मुझे फिर एक बार वह दृश्य याद आ गया जब लोगों ने हू हान-सान की हवेली पर धावा बोला था। किवाड़ पर पड़ने वाले हर आघात से दुकानदार शन के भारी-भरकम शरीर में कँपकँपी मच रही होगी और चलते-फिरते हड्डियों के ढाँचे की तरह दुबली-पतली उसकी पत्नी हड़बड़ा कर धन-देवता की प्रतिमा के सामने धूपदीप जलाकर मनौतियाँ कर रही होगी! तभी दो नौजवान कहीं से लकड़ी का कुन्दा ले आए और जोर-जोर से उसे किवाड़ पर मारने लगे। क्रुद्ध भीड़ की आवाजें मेरे कानों मे पड़ीं : "दरवाजा खोलो! दरवाजा खोलो! हमें चावल खरीदना है! हमें खाना चाहिए, हमें जिन्दा रहना है!" कुन्दे के आघात से दुकान के किवाड़ चरमराने लगे। लगता था किसी भी क्षण किवाड़ टूट जाएँगे।

और तब कोई जोर से चिल्लाया : "पुलिस! पुलिस आ रही है!" पुलिस के कोई बीस सिपाही मैनेजर छ्येन के साथ आ पहुँचे। सबके सब हथियादबन्द थे। पुलिस कप्तान सुन भी उनके साथ था। उसकी पेटी में पिस्तौल लगी थी और कमर में कटार। "कौन है इसका सरगना?" उसने कड़कती आवाज में कहा। "भागो यहाँ से, भागो! तुम लोग यहाँ शान्ति भंग कर रहे हो!" मगर कोई भी अपनी जगह से टस से मस न हुआ।

पुलिस कप्तान ने भीड़ को तितर-बितर करने का आदेश दिया। जब पुलिस के सिपाहियों ने अपनी बन्दूकें भीड़ की तरफ तान दीं, तो रिक्शावाला कूद कर सामने आ गया और पुलिस कप्तान से बोला, "आपको चाहिए था कि दुकानदार को गिरफ्तार करके थाने ले जाते। वह बदमाश एक जमाखोर व सट्टेबाज है ओर हमें भूखों मार रहा है।"

'तुम कौन हो?" पुलिस कप्तान ने पूछा।

"मैं एक ग्राहक हूँ, चावल खरीदने आया हूँ।"

"चावल तो दुकानदार का है। वह इसे बेचे या न बेचे, उसकी मर्जी तुम यहाँ दंगा-फसाद कर रहे हो।"

"नहीं, ऐसा नहीं है। हम लोग सिर्फ चावल खरीदने आए हैं। हमें खाना चाहिए, वरना भूखों मर जाएँगे। हम सिर्फ यह चाहते हैं कि दुकानदार अपनी दुकान खोल कर हमें चावल बेचे। बस, और कुछ नहीं!"

उसकी यह दलील अभी खत्म नहीं हुई थी कि दरवाजे में बनी एक छोटी-सी खिड़की खोलकर दुकानदार शन ने बाहर झाँका और पुलिस कप्तान से बोला : "इस आदमी को गिरफ्तार कर लो! यह डाकू है—अपना गिरोह लेकर मेरा चावल लूटने आया है!"

"इसे गिरफ्तार कर लो!" पुलिस कप्तान ने आदेश दिया।

इस पर रिक्शावाला कूद कर दुकान की दहलीज पर चढ़ गया और लोगों से मुखातिब हो कहने लगा : "भाइयो, सुनो! जो आदमी चावल की जमाखोरी करता है, उसे बेचने से इन्कार करता है, उसे तो बिल्कुल बेकसूर समझा जा रहा है और हम लोग जो अपनी भूख मिटाने के लिए सिर्फ चावल खरीदने आए हैं उन पर कानून तोड़ने का इल्जाम लगाया जा रहा है। क्या यह इंसाफ है?"

"नहीं, यह इंसाफ नहीं है!" सब लोगों ने एक स्वर में कहा।

"रिक्शावाले को गिरफ्तार करने का तुम्हें क्या हक है?पहले दुकानदार को गिरफ्तार करो!"

पुलिस कप्तान लगातार चिल्लाता रहा, "इसे गिरफ्तार कर लो! इसे गिरफ्तार कर लो।"

भीड़ की उत्तेजना बढ़ती ही जा रही थी। दुकान के दरवाजों पर फिर से आघात होने लगा। दो सिपाहियों ने रिक्शावाले को पकड़ लिया। लेकिन उसने एक हाथ से पुलिस के सिपाही को धकेलकर जमीन पर गिरा दिया। पुलिस कप्तान ने अपनी पिस्तौल निकाल कर निशाना साध लिया। तभी बच्चा गोद में लिए वह स्त्री, जो

मेरे पास खड़ी थी, अपने हाथ की टोकरी जमीन पर फेंककर पुलिस कप्तान के सामने जा खड़ी हुई और हाथ उठाकर चिल्लाई, "इसे गोली मत मारो! यह अच्छा आदमी है!" पुलिस कप्तान ने गोली दाग दी। गोली बच्चे के सिर में लगी। बच्चे के छोटे-से, जर्द, कमजोर चेहरे से खून का फव्वारा फूट निकला, जिससे माँ की छाती और सड़क की पटरी लाल हो गई।

"ये लोग हमारी जान ले रहे हैं। हमें इनसे हिसाब चुकता करना होगा!" उत्तेजित भीड़ ने पुलिस कप्तान को घेर लिया। वह डर के मारे सिपाहियों के पीछे जा छिपा। उसने गोली चलाने वाले को गिरफ्तारी से बचाने के लिए बहुत से लोगों ने उसके चारों तरफ घेरा डाल दिया। बाकी लोग मृत बच्चे की बिलखती माँ को सांत्वना देते हुए अलग ले गए।...

तभी दुकान के किवाड़ खुले और दुकानदार शन ने पुलिस कप्तान को बुला कर जल्दी से अन्दर कर लिया।

छः

चावल की दुकान पर हंगामा खत्म हो चुका था। दुकानदार का तो सिर्फ दो बोरी चावल ही गया, लेकिन वह गरीब स्त्री अपना बच्चा गँवा बैठी। लोग इस घटना को भूले नहीं। बच्चे की हत्या का दुखद समाचार चारों तरफ फैल गया। लोगों के दिलों में और ज्यादा नफरत भर गई। पटरी पर बहे खून के धब्बे जल्दी ही मिट गए, मगर लोगों के दिलों से यह दाग मिटाया नहीं जा सका। जब भी मैं वहाँ से गुजरता, तो धँसी आँखों वाला वह भूखा, जर्द, नन्हा सा चेहरा, अपने मृत बच्चे की लाश पर रोती-बिलखती वह गरीब, भूख की मारी माँ तथा चावल के लिए संघर्ष में लोगों की रहनुमाई करने वाला वह रिक्शावाला, ये सभी मेरी आँखों के सामने नाच उठते। अब मैं चीजों को पहले से ज्यादा अच्छी तरह समझने लगा था। दुकानदार शन और पुलिस कप्तान दरअसल एक ही थैले के चट्टे-बट्टे थे। पुलिस कप्तान क्या दुकानदार शन के घर अक्सर दावत खाने और शराब पीने नहीं आता था?और क्या कभी शन के किसी मुश्किल में पड़ने पर उसकी मदद नहीं करता था?गरीब लोग भी, जिन्हें खाने को चावल तक नसीब न हो पाता, एक दूसरे का साथ देते थे और एक दूसरे की मदद करते थे। रिक्शावाले ने आगे बढ़कर लोगों की तरफ से आवाज बुलन्द की थी, ताकि उन्हें कुछ न कुछ खाने को मिल सके। और उस गरीब स्त्री ने पुलिस की गोली से रिक्शावाले को बचाने के लिए अपने बच्चे को कुर्बान कर दिया। यह बात ठीक है कि ये दो बिल्कुल अलग-अलग वर्गों के लोग थे, ठीक वैसे ही जैसे हमारे गाँव में गरीब किसान और जमींदार दो अलग-अलग वर्गों के लोग थे।

चावल लूट लिए जाने की घटना के बाद शन ने दुकान के सामने के किवाड़ पर यह नोटिस लगा दिया : "मरम्मत हो रही है। खरीद-फरोख्त कुछ समय के लिए बन्द है। अब हमें रोजाना दुकान के किवाड़ खोलने और बन्द करने की जहमत नहीं उठानी पड़ती थी। चावल के भाव चढ़ते जा रहे थे। दुकानदार शन के पौ बाहर थे। "मैंने दो बोरी चावल जरूर गँवाया, लेकिन मेरी बदकिस्मती अपने पीछे खुशकिस्मती लेकर आई है," उसने खुशी जाहिर करते हुए कहा। "चन्द रोज दुकान बन्द रखकर मैं कोई एक दर्जन बोरी चावल के बराबर मुनाफा

कमा लूँगा!" शन अपना समय पुलिस कप्तान और अन्य काउन्टी-अफसरों को खिलाने-पिलाने में बिताता रहा।

एक दिन दुकानदार शन ने बहुत दावत की तैयारी की। मैं सोच ही रहा था आज किसे निमंत्रित किया गया है कि पुलिस कप्तान आ पहुँचा। वह शन से बोला, "इस बार मैं आपके पास सचमुच धन-देवता को लाने वाला हूँ! इस आदमी के पास सैकड़ों मू जमीन है जिसमें हर साल कोई 2,000 पिकल चावल पैदा होता है! इसके अलावा वह स्थानीय शान्ति-रक्षा कोर का कमाण्डिंग अफसर भी है। उसके नीचे सौ से ज्यादा सैनिक काम करते हैं। उन्हें खिलाने के लिए वह लोगों से चावल वसूल करता है। अगर आप उससे दोस्ती गाँठ लें तो चावल का बेअन्त जखीरा आपके हाथ लग जाएगा। यही क्यों, आप मालामाल हो जाएँगे।"

यह सुनकर दुकानदार शन खुशी से फूला न समाया। पुलिस कप्तान के सामने वह बार-बार झुककर कृतज्ञता प्रकट करता रहा, यहाँ तक कि मुझे लगा वह जमीन पर लेट कर साष्टाँग प्रणाम करने जा रहा है! "यह सब आपकी मेहरबानी से हुआ है। आपकी वजह से मेरी किस्मत चमक उठी है। मैं इसका उचित पुरस्कार आपको दूँगा, एक शानदार दावत दूँगा, हा-हा-हा!..." तभी मैनेजर छ्येन अन्दर आया। उसने बताया कि मेहमान नाव से आ पहुँचे हैं। शन बहुत खुश हो गया और पुलिस कप्तान के साथ दुकान के पीछे के दरवाजे पर जा पहुँचा।

मुझे आदेश दिया गया कि पिछले आँगन में उत्तर की तरफ वाले मेहमानों के कमरे की सफाई कर दूँ। मेहमानों को आम तौर से सामने के एक कमरे में बैठाया जाता था। सिर्फ खास मेहमानों को ही अन्दर के कमरे में बैठाया जाता था, जिसका मुँह दक्षिए की तरफ था। कमरे के बीचोंबीच एक बड़ी-सी गोल मेज रखी थी, जिसे मैंने झाड़-पोंछ कर और पालिश करके शीशे की तरह चमका दिया था। मेज पर रखी चायदानी में गरम-गरम चाय भरी हुई थी। चायदानी के आसपास एक तश्तरी में तरबूज के बीज और दूसरी में मिठाइयाँ, तथा एक बड़ी तश्तरी में नारंगियाँ सजा कर रखी गई थीं। शीघ्र ही मुझे पैरों की आहट सुनाई थी। दुकानदार शन और पुलिस कप्तान किसी से बातें कर रहे थे। "इधर तशरीफ लाइए जनाब! इधर तशरीफ लाइए!" शन ने बड़ी चापलूसी के स्वर में कहा और वह आदमी कमरे में दाखिल हुआ। घुड़सवारी के काम आने वाली पीले रंग की ऊनी बिरचिस के ऊपर वह एक लम्बा चोगा, फैल्ट का टोप और चमड़े के काले जूते पहने था। आते ही उसने अपनी पैनी नजर से सारे कमरे का मुआयना किया। जब उसकी नजर मुझ पर पड़ी तो मैंने देखा उसकी आँखें भेड़िए की तरह खूँखार हैं। उन खूँखार आँखों को भला मैं कैसे भूल सकता था?वह दरअसल हमारे गाँव का निरंकुश जमींदार हू हान-सान था। "अच्छा, तो तू है। ओ कमीने कुत्ते...!" मैंने मन ही मन उसे गाली दी। लेकिन हू हान-सान का ध्यान मुझ पर नहीं गया। उसे खास मेहमान की कुर्सी पर बैठाया गया। मुझे उसकी खिदमत में चाय, सिगरेट और मिठाइयाँ पेश करनी थीं। जब मैंने उसकी सिगरेट सुलगाने के लिए दियासलाई जलाई तो उसने घूरकर मेरी तरफ देखा। मैंने पीठ फेर ली और कमरे से बाहर चला आया।

मेरा सिर चकराने लगा। आँखों के सामने एक के बाद एक दृश्य आते चले गए—मेरी माँ को पेड़ से बाँध दिया जाना, ओर लकड़ियाँ सुलगा कर आग की ज्वालाओं में भस्म कर दिया जाना, सुङ चाचा को घसीट कर ले

जाना और अन्धेरी काल-कोठरी में बन्द कर दिया जाना; श्वेत रक्षको वे जापानी सैनिकों के गिरोह का हू हान-सान की अगुवाई में हमारे छापामार अड्डे पर धावा बोल दिया जाना...। और आज वही हू हान-सान यहाँ मेहमान बना बैठा हुआ है। मेरे दिल में नफरत की आग भड़क उठी। अभी मैं सोच ही रहा था कि उसके इन अत्याचारों का बदला कैसे लूँ, इतने में हू हान-सान को मैंने यह कहते सुना, "वह लड़का कौन है जिसने अभी-अभी मेरी सिगरेट सुलगाई?उसका घर कहाँ है?"

"इसी काउन्टी में। शहर के बिल्कुल पास," शन ने उत्तर दिया।

"समझ गया। पर इसकी शक्त-सूरत तो हमारे गाँव के एक लड़के से मिलती है।"

"आपके गाँव के लड़के से?"

"खैर, अगर यह इसी जगह का बाशिन्दा है तो कोई बात नहीं।"

तभी ल्यू लाए-च मेरे पास आया और उसने चावल की बोरियाँ उतरवाने में मदद करने को कहा।

"क्या और चावल आ गया है?" मैंने ताज्जुब से पूछा।

"हाँ, जो आदमी अभी-अभी आया है, वह अपने साथ लाया है।"

"कितना है?"

"पूरी नाव भरी है। यही कोई चालीस-पचास पिकल होगा।"

"यह चावल जरूर मेरे गाँव के लोगों से लूट-खसोट कर जमा किया गया है!"

"यह कैसे?" ल्यू लाए-च ने पूछा। मैंने कोई जवाब नहीं दिया, क्योंकि मेरे मन में उस समय कोई और ही ख्यल घूम रहा था। मैं ल्यू के साथ चल दिया।

चावल उतरवाने के बाद मैं फिर से मेहमानों के कमरे में जा पहुँचा। हालाँकि मेरे दिल में उन सब लोगों के प्रति घृणा की आग सुलग रही थी, फिर भी मुझे उनके प्यालों में शराब डालनी पड़ी। जितनी बार मैं कोई पकवान परोसने कमरे में जाता, उतनी ही बार हू हान-सान पर, उसके मक्कारानाचेहरे पर, उसकी छोटी-छोटी मूँछों पर और उसकी धूर्ततापूर्ण, धोखेबाज आँखों पर एक नजर जरूर डाल लेता। इन लोगों का खाना-पीना और कहकहे लगाना क्या कभी बन्द भी होगा!

"मैं अपनी बेटी के लिए गाँव में तीस-चालीस मू जमीन लेना चाहता हूँ," शन से हू हान-सान से कहा। "उम्मीद है आप मेरी मदद करेंगे।"

"देखूँगा," हू ने जवाब दिया। "हो सका तो जरूर दिला दूँगा।"

"कमाण्डर हूँ," पुलिस कप्तान बोला, "अगर आपके पास बेचने के लिए चावल है तो दुकानदार शन से सीधे बात करें। इनसे आपको अच्छे दाम मिल सकेंगे।"

"अब हमारी एक दूसरे से अच्छी जान-पहचान हो गई है, और मुझे डर है कि कहीं मैं इन्हें जरूरत से ज्यादा परेशान न करने लग जाऊँ।" इस तरह बातों का सिलसिला चलता रहा।

मैं पहले से ज्यादा अच्छी तरह समझने लगा कि गरीब किसानों पर जुल्म ढाने वाले स्थानीय निरंकुश जमींदार, जमाखोरी व सट्टेबाजी करने वाले शहर के दुकानदार, पुलिस कप्तान, श्वेत रक्षक और जापानी सैन्यवादी, ये सभी एक ही गिरोह के लोग हैं। ये सभी हमारे गाँववासियों व नगरवासियों पर सवारी गाँठते फिरते हैं। जब मैं यह सब सोच रहा था तो बदहवासी में मेरे हाथ से एक बड़ी देगची का सारा शोरवा हूँ हान-सान के लम्बे चोगे पर गिरते-गिरते बचा। शन ने मेरी तरफ घूर कर देखा। मगर हू हान-सान ने बनावटी हँसी हँसते हुए कहा, "कोई बात नहीं।" फिर मेरी तरफ मुड़ कर उसने पूछा, "तुम्हारा कुलनाम क्या है?" मैं नहीं चाहता था कि स्थानीय बोली में जवाब देकर उसके सामने अपने को जाहिर कर दूँ। इसलिए ट्रे उठाकर कमरे के बाहर चला गया। और जब देहलीज में पहुँच गया, तब मैंने धीमे से कहा, "मेरा कुलनाम क्वो है।"

अगर कहीं हू हान-सान को यह मालूम हो गया कि मैं वही लड़का हूँ जिसकी उसे तलाश है, तो वह मुझे जान से मार डालेगा। मुझे उसके चंगुल में हरगिज नहीं फँसना है। वरना मैं बदला नहीं ले पाऊँगा। तो मुझे क्या करना चाहिए?मैं चाओ चाचा के पास जाकर उनसे भी सलाह नहीं ले सकता क्योंकि वे अपनी पुरानी जगह से चले गए हैं। मुझे कोई तरकीब सोचनी चाहिए। मैं मेहमानों के कमरे में वापस नहीं लौटा। सीधा ल्यू लाए-च के पास गया और उससे बोला कि मेहमानों को खाना खिलाने का बाकी काम वह कर दे। अपने कपड़े एक पोटली में बाँध कर मैं सामने दुकान में जा पहुँचा और काउन्टर के पीछे बैठकर विचार करने लगा। मुझे इस बार इस

दुष्ट निरंकुश जमींदार को, अपने जानी दुश्मन को, हरगिज नहीं छोड़ना चाहिए!

खाना खत्म होने पर शन ने मेहमानों के कमरे से मुझे आवाज दी। "यहाँ आओ और आराम करने के लिए मेहमान को पश्चिम के कमरे में ले जाओ।" मैं चला गया। हू हान-सान शराब के नशे में धुत था! उसका चेहरा भयानक मालूम हो रहा था। आँखें सुर्ख थीं।

"तुम्हारा नाम क्या है?" एक हाथ मेरे कन्धे पर रखते हुए उसने लड़खड़ाती जबान से पूछा।

"क्वे चन-शान।"

"क्या कहा तुमने ?क्वो?"

"हाँ क्वो," मैंने शान्त भाव से उत्तर दिया।

"घर कहाँ है?" हू हान-सान का चेहरा गम्भीर हो उठा। शराब के नशे में चूर उसकी लाल-लाल आँखों से बड़ी क्रूरता और दुष्टता टपक रही थी।

"शहर के पास ही क्वो नदी के तट पर।"

"तुम इस काउन्टी के रहने वाले तो नहीं जान पड़ते!" हू हान-सान ने अपने पंजे से कसकर मेरा कन्धा दबाया। उसके तेज नाखून मेरे शरीर में चुभने लगे।

"ये नशे में हैं," मैंने शन से कहा और हू के पंजे से निकलने की कोशिश करने लगा।

"जाओ मत। मैं नशे में हूँ। मुझे जरा कमरे में तो पहुँचा दो।" हू हान-सान ने मुस्कराते हुए कहा। उसने इस बात पर जोर दिया कि मैं ही उसे कमरे तक पहुंचाऊँ, हालाँकि शन ने उसे खुद पहुँचाना चाहा।

"आप लेट जाइए," अपने गुस्से और नफरत को दबाते हुए मैंने कहा। "मैं मुँह-हाथ धोने के लिए पानी लाता हूँ।"

एक बार कमरे से बाहर निकलने के बाद, मुझे प्रतिरोध के सिवाय और कुछ न सूझा। लेकिन कैसे ?मैंने इस पर काफी सोचा। रसोईघर में, जहाँ से मैंने गरम पानी लिया, लड़कियों के ढेर के पास कुल्हाड़ी रखी थी। "हथियार!" मेरे मन में आया क्यों न इसे कहीं छिपा दिया जाय। और मैंने उसे रसोईघर के दरवाजे के पीछे छिपा दिया। फिर मैं गरम पानी लेकर पश्चिम की तरफ के कमरे में गया।

हू हान-सान ने अपना लम्बा चोगा उतार दिया था। उसकी पिस्तौल तकिए के पास रखी थी। मैंने गरम पानी का तसला लकड़ी के स्टैण्ड पर रख दिया और कमरे से बाहर जाने लगा। "रुक जाओ!" मेरे पीछे से हू गर्राया और मैं बिना मुड़े वहीं रुक गया।

"क्या तुम्हारी माँ घर पर हैं?" उसने पूछा।

ये शब्द मेरे दिल में खंजर की तरह चुभ गए। अगर कहीं उस समय मेरे हाथ मे कुल्हाड़ी होती, तो यह निश्चित था कि मैं उसका काम तमाम कर देता। लेकिन मैंने अपने गुस्से पर काबू किया और जवाब दिया, "नहीं, घर पर नहीं हैं।"

"क्या मर चुकी हैं।"

"नहीं, जिन्दा हैं।"

"कहाँ रहती हैं?"

"दक्षिणी पहाड़ में, मेरे चाचा के पास।"

"खूब!" हू हान-सान ने मेरी तरफ कदम बढ़ाया और बोला, "पीछे मुड़ो और मेरे सामने आओ!"

"किसलिए?" मैंने पूछा और अचानक पीछे की तरफ मुड़ता हुआ उसकी आँखों में आँखें डालकर हिम्मत से खड़ा हो गया।

"और तुम्हारे पिता कहाँ हैं?" हू हान-सान ने पूछताछ जारी रखी। अब पिस्तौल उसके हाथ में थी और उँगली पिस्तौल के घोड़े पर।

"घर पर हैं।"

"वे क्या करते हैं?"

"बूचड़ हैं। सूअर मारते हैं।"

हू एक कदम और आगे बढ़ आया। "क्या वे आदमी को भी मारते हैं?" उसके प्रश्न की उपेक्षा करते हुए मैं छाती तानकर उसकी तरफ देखता रहा।

"तुम झूठ बोल रहे हो," यह कहते हुए उसने अपनी पिस्तौल मेरी तरफ तान दी।

"तुम ल्यूशी गाँव के फान शिङ-ई के बेटे हो!"

"नहीं, मैं वह नहीं हूँ," मैंने अपना सिर हिलाकर इन्कार करते हुए जवाब दिया। "मेरे पिता का नाम क्वो शान-रन है।"

"बस करो!" हू हान-सान बड़ी मक्कारी से दाँत पीसते हुए हँसा और बोला, "आज रात तुम इस कमरे से बाहर नहीं जाओगे। कल मेरे साथ ल्यूशी गाँव चलोगे। सुना कि नहीं?"

तो दुश्मन मुझे पहचान गया है। अब मुझे क्या करना चाहिए?दौड़कर उसकी पिस्तौल छीन लेनी चाहिए और उसे गोली मार देनी चाहिए! तभी ल्यू लाए-च कमरे में दाखिल हुआ। "क्वो चन-शान, तुम्हारी माँ तुमसे मिलने आई हैं," वह बोला। "बाहर इन्तजार कर रही हैं।" हू हान-सान अभी बात को समझने की कोशिश ही कर रहा था कि मैं मौके का फायदा उठाकर कमरे से बाहर चला गया।

ल्यू लाए-च मुझे दुकान के काउन्टर पर ले गया, जहाँ मैंने उसका हाथ अपने हाथ में लेकर आभार प्रकट किया। पिछले एक-डेढ़ साल में मैंने अपने परिवार के बारे में—पिताजी, माँ और अपने बारे में—सब कुछ उसे बता दिया था। उसे मेरे साथ न सिर्फ हमदर्दी थी बल्कि उसने मेरी हर तरह से मदद भी की थी। आज हू हान-सान को मुझसे पूछताछ करते देख उसने मेरी माँ के मिलने आने का बहाना गढ़ लिया था।

ल्यू लाए-च ने चारों तरफ देखा। जब आसपास कोई नजर नहीं आया तो मुझसे पूछा, "वह आदमी कौन है?वह तुम्हारी तरफ पिस्तौल क्यों तान रहा था?"

"वह मेरी माँ का हत्यारा है!" मैंने उसे बताया।

"अच्छा, तो इसीलिए खाना खाते समय तुम्हें घूर-घूर कर देख रहा था! मैंने उसे यह कहते भी सुना कि तुम्हें ल्यूशी गाँव ले जाएगा। तब मैंने अन्दाजा लगाया शायद यह वही दुष्ट है।..."

"मैं तुम्हारा एहसान कैसे भूल सकता हूँ!"

"आज तो तुम बच गए। लेकिन कल क्या होगा? अगर हू हान-सान तुम्हें साथ ले जाना चाहेगा तो मालिक भी मना नहीं करेगा।" मैंने उसकी बात का कोई जवाब नहीं दिया, इस डर से कि अगर मैंने उसे अपनी योजना बता दी तो शायद वह मुझे ऐसा करने से रोक दे।

रात काफी गहरी हो गई थी। काम सीखने वाले लड़कों में सबसे बड़ा लड़का छुट्टी पर घर गया था। ल्यू लाए-च और मैं अपने बिछौने पर लेटे हुए थे। ल्यू ने सलाह दी कि मैं रात के अन्धेरे में भाग जाऊँ। मैंने उसकी बात मान ली। लेकिन मैंने सुझाव दिया कि वह पहले सो जाए।

मुझे सिर्फ एक ही रास्ता सूझ रहा था कि इस वर्ग-दुश्मन का खात्मा कर दूँ, वरना यह मेरा ही खात्मा कर डालेगा।

मैं चुपचाप बिछौने से उठा और अपनी छोटी सी पोटली काउन्टर के ऊपर रख दी। फिर आहिस्ता-आहिस्ता रसोईघर की तरफ गया। चाँद अभी निकला नहीं था और चारों ओर घुप अन्धेरा था। मैंने देखा, रसोईघर के दरवाजे में ताला लगा है। तब मैंने खिड़की को टटोला। वह अन्दर से बन्द नहीं थी। इसलिए अन्दर जाने के लिए मैंने उसे धकेल कर खोल दिया। मेरा हाथ माचिस की डिबिया पर पड़ा। सहसा मेरे मन में आग लगा देने का ख्याल आया। मुझे लगा, माँ मेरी तरफ देख रही हैं। मैं आग लगाऊँगा! ऐ जालिम हू हान-सान! तूने मेरी माँ को जिन्दा जला दिया था, आज मैं भी तुझे आग में जिन्दा ही भस्म कर दूँगा। हाँ, ठीक तो है। हू शराब के नशे में धुत है। वह इस वक्त सुअर की तरह गहरी नींद में होगा। अगर उसका कमरा जल कर खाक हो जाए, तो उसके जिन्दा बचने की कोई सम्भावना नहीं रहेगी।

मैंने माचिस की डिबिया अपनी जेब में रख ली और मुट्ठीभर सूखे पुआल उठा लिए। पंजे के बल चलता हुआ मैं पश्चिमी कमरे में जा पहुँचा। बत्तियाँ बुझ चुकी थीं। मैंने हल्का सा धक्का दिया कि दरचवाजा खुल गया। हू हान-सान खर्राटे ले रहा था। मैंने सूखे पुआल उसकी पलँग के नीचे रख दिए और माचिस जलाई पुआल ने फौरन आग पकड़ ली। मैं झटपट कमरे से बाहर निकल आया और दरवाजा बन्द करके उसे बाहर से रस्सी के टुकड़े से बाँध दिया। ऐ दुष्ट हू हान-सान, अब तू जल्दी ही जल कर खाक हो जाएगा! मैंने मन ही मन कहा और दुकान के काउन्टर पर जा पहुँचा।

जो कुछ मैंने किया उससे मुझे बड़ी तसल्ली हुई तब मैंने ल्यू लाए-च पर, जो गहरी नींद सो रहा था, एक नजर डाली और बोला, "मैं तुमसे विदा हो रहा हूँ, ल्यू भइया!"

मैंने अपनी छोटी-सी पोटली उठाई, चुपचाप दरवाजा खोला, और एक नजर पीछे के आँगन की तरफ देखा। पश्चिमी कमरे की खिड़की से धुआँ निकल रहा था। फौरन ही आग की लपटें निकलने लगीं। मेरे दिल में भी आग के शोलों की तरह जोश भर गया। तभी मैंने किसी को उस कमरे में चिल्लाने और भीतर से दरवाजा खोलने की कोशिश करते सुना। मालिक की बीवी पूर्वी कमरे से चिल्लाई : "आग! पश्चिमी कमरे में आग लग

गई!" साथ ही मालिक भी चीख उठा, "जल्दी करो! आग बुझाओ!" पति-पत्नी दोनों अपने मेहमान को जगाने उसके कमरे की तरफ दौड़ पड़े। उन्होंने बाहर से आवाज लगाईं लेकिन कोई उत्तर नहीं मिला। दरवाजा खोलने की कोशिश की। लेकिन वह रस्सी से बंधा अब भी बन्द पड़ा था। रस्सी की गाँठ खोलकर वे झटपट अन्दर घुसे और हू को घसीट कर बाहर लाए। कुछ समय बीतने के बाद हू होश में आया और बड़बड़ाने लगा, "उस... लड़के को... पकड़ लो... गिरफ्तार कर... लो...।" इसी बीच मालिक की पत्नी ने आग के खतरे की सूचना देने के लिए एक पीपल के तसले को पीटना शुरू कर दिया।

अब मेरा वहाँ और ठहरना ठीक नहीं था। इसलिए दुकान के किवाड़ खोल कर भाग लिया।

मैं तब तक भागता रहा जब तक काउन्टी-केन्द्र के बाहर एक राजमार्ग पर नहीं पहुँच गया। तब कहीं मैंने अपनी रफ्तार धीमी की और दम लिया। मैं अपने को काफी सुरक्षित अनुभव करने लगा, क्योंकि उन लोगों का मेरे पास पहुँचना अब मुमकिन नहीं था। मैं लगातार चलता गया और तरह-तरह की बातें सोचता रहा। मैं आखिर जाऊँ कहाँ?अपने घर ल्यूशी गाँव चला जाऊँ?नहीं, वहाँ जाने का तो सवाल ही नहीं उठता। सुङ चाचा के पास भी नहीं क्योंकि वे अभी जेलखाने में ही बन्द हैं। तो छापामार दल के पास क्यों न चला जाऊँ?वे लोग आजकल मालूम नहीं कहाँ हैं?अचानक मुझे येनान का ख्याल आया! क्या ऊ भइया ने मुझे नहीं बताया था कि पिताजी अध्यक्ष माओ के साथ येनान पहुँच गए हैं?हाँ, तो मैं येनान जाऊँगा। लेकिन येनान आखिर है कहाँ?चारों ओर सन्नाटा था। नया चाँद निकल रहा था। मैंने आसमान में ध्रुवतारे को खोज लिया। मैं उसी की दिशा में चलता रहूँगा। मुझे याद आया, ऊ भइया कहा करते थे कि येनान उत्तर में है। रात की शीतल वायु का आनन्द लेता हुआ, मैं ध्रुवतारे के मार्गदर्शन में उत्तर की तरफ चल पड़ा।...

सात

पिंजरे से मुक्त पंछी की तरह मैं बिना रुके उत्तर की तरफ चलता चला गया। नया चाँद अपनी मद्धिम रोशनी से मेरा रास्ता रोशन कर रहा था। और ध्रुवतारा मेरे लिए कुतुबनुमा बन गया था। चारों ओर ऐसा सन्नाटा छाया था कि मेरे अपने ही पैरों की चाप जोर-जोर से सुनाई पड़ रही थी। पहाड़ों और सोतों-चश्मों को पार करता हुआ मैं उत्तर दिशा में बढ़ता रहा। जब थक गया तो एक छोटे से चश्मे के किनारे थकान दूर करने बैठ गया। वसन्त की बयार मन्द-मन्द चल रही थी। मैंने चुल्लू से पानी पिया। पानी की कल-कल ध्वनि कितना मधुर संगीत छेड़ रही थी! ठण्डी-ठण्डी हवा कितनी स्फूर्तिदायक मालूम हो रही थी! मैंने एक गहरी साँस ली। मेरे शरीर में एक नई ताजगी व खुशी की लहर दौड़ गई। मेरे दिल से एक बहुत बड़ा बोझ उतर चुका था। हड्डियों का ढाँचा बनी उस औरत की कर्कश आवाज अब मेरे कानों में नहीं पड़ेगी। लॉलीपाप चूसती उसकी लड़की की भद्दी सूरत अब मेरी नजरों के सामने नहीं आएगी। उस मोटी खोपड़ी वाले मालिक की चाकरी अब मुझे नहीं करनी पड़ेगी, और काउन्टर के पीछे खड़े होकर कंकड़ मिला हुआ चावल अब गरीबों को नहीं बेचना पड़ेगा।... चावल की उस दुकान में मेरी डेढ़ साल की गुलामी का अन्त हो चुका था। दूर से मुर्गों की बाँग सुनाई दी। जल्दी ही सवेरा होने वाला है। मुझे फौरन आगे निकल जाना चाहिए। मैंने पोटली उठाई और फिर से अपनी राह पकड़

ली।

कितना शानदार और खूबसूरत था सूर्योदय का वह दृश्य! चावल की दुकान पर मैं इस वक्त किवाड़ खोल रहा होता, झाड़ू दे रहा होता, मालिक और उसके परिवार की ताबेदारी कर रहा होता। सूर्योदय की छटा का आनन्द लेने का मुझे मौका ही कब मिला था। लेकिन उस दिन एक छोटे पेड़ के नीचे खड़े होकर, मैं काफी देर तक पूर्व दिशा में सुबह के आसमान को निहारता रहा। धान के खेतों पर बादलों का सिन्दूरी रंग प्रतिबिम्बित हो रहा था। पौधों पर ओस की बूँदें मोतियों की तरह झिलमिला रही थीं। एक पंछी चहचहाता हुआ पेड़ पर बने घोंसले से निकला ओर आसमान की बुलन्दियों में खो गया। हर चीज एक नई ताजगी और चमक लिए हुए थी। अब मुझे और पक्के तौर पर यकीन हो गया कि चावल की उस घुटनभरी दुकान को छोड़ना मेरे लिए बिल्कुल ठीक ही था।

चलते-चलते मैं एक गाँव में पहुँच गया। अचानक मुझे भूख महसूस होने लगी। एक कटोरा चावल के लिए मैं फूस की झोंपड़ी में बने एक ढाबे में गया। ढाबा चलाने वाली बुढ़िया ने पूछा कि मैं कहाँ से आया हूँ और कहाँ जा रहा हूँ। मैंने उसे बताया कि मैं पहाड़ पर से आया हूँ और रिश्तेदारों से मिलने जा रहा हूँ।

"लगता है तुम सारी रात चलते रहे हो," बुढ़िया ने कहा।

मैं हैरान रह गया। "लेकिन आपको कैसे मालूम?" मैंने पूछा।

"तुम्हारे कपड़े और जूते जो ओस व मिट्टी से सने हुए हैं!" यह सुनते ही मैं एकदम चौकन्ना हो गया। सोचा, अगर हू हान-सान के आदमी मेरा पीछा कर रहे हों, तो वे भी इस निशानियों को देखकर मुझे पहचान लेंगे। इसलिए मुझे देरी नहीं करनी चाहिए और एकदम आगे बढ़ जाना चाहिए। जल्दी-जल्दी चावल निगल कर मैं आगे चल दिया। रास्ते में मेरे सिवाय कोई नहीं था। लेकिन यह पूछने मैं फिर से वापस लौट आया कि वहाँ से कौन-सा शहर नजदीक है।

"यह इस बात पर निर्भर है कि तुम किस शहर में जाना चाहते हो," बुढ़िया ने जवाब दिया। "एक शहर यहाँ से 40 ली दक्षिण की तरफ है और दूसरा 50 ली उत्तर की तरफ। तुम किस ओर जाना चाहते हो?"

"उत्तर की तरफ।" यह कहते हुए मैं ढाबे को पीछे छोड़ उत्तर की तरफ बढ़ गया।

जाहिर है कि मैंने अभी सिर्फ 40 ली रास्ता ही तय किया था, क्योंकि मैं शायद दक्षिण की तरफ के शहर से ही आ रहा था और हू हान-सान के आदमी जल्दी ही मेरे पास पहुँच सकते थे। सड़क पर चलते रहना सुरक्षित नहीं है। मुझे कुछसमय के लिए कहीं छिप जाना चाहिए। मैंने सड़क छोड़ दी और वहाँ से कुछ दूर एक पहाड़ी की तरफ बढ़ गया।

पहाड़ी बड़ी सीधी और ऊँची थी, हालाँकि दूर से वह ऐसी नहीं लगती थी। उस पर मुझे लगभग रेंग कर चढ़ना पड़ा। चोटी पर पहुँचा तो दम फूलने लगा। यहाँ अपने को बिल्कुल सुरक्षित समझ कर मैं एक चट्टान पर बैठ कर सुस्ताने लगा। वहाँ हरे-भरे पेड़-पौधों और बाँस के झुरमुटों की भरमार थी। जगह बड़ी ही खूबसूरत थी। सूर्य निकल चुका था। मेरे शरीर में कुछ गरमी आने लगी। मन प्रफुल्लित हो उठा। पिछले डेढ़ साल में इतना इतमीनान मैंने कभी महसूस नहीं किया था। पोटली सिरहाने रखकर मैं लेट गया और मेरी आँख लग

गई।

सहसा कुछ आवाजें मेरे कान में पड़ी और मेरी नींद खुल गई पेड़-पौधों से ढके उस सुरक्षित स्थान से बाहर झाँककर मैंने देखा जैतूनी हरे रंग की वर्दी में "शान्ति रक्षा कोर" के दो सैनिक एक बुढ़िया को साथ लिए हुए हैं। बुढ़िया को मैंने पहचान लिया। यह वही बुढ़िया थी जिसके ढाबे में खाना खाने के लिए मैं रुका था। मैंने सुना, वे दोनों सैनिक उससे पूछ रहे हैं, "क्या तुमने किसी लड़के को इस पहाड़ी पर चढ़ते देखा है?"

"नहीं, मैंने किसी लड़के को नहीं देखा!" उसने जवाब दिया।

"लेकिन किसी ने उस लड़के को पहाड़ी पर चढ़ते जरूर देखा है," एक सैनिक बोला।

"मैंने तो किसी को पहाड़ी पर चढ़ते नहीं देखा।"

"छोड़ो भी, आओ लौट चलें," दूसरा सैनिक बोला। "क्यों परेशान होते हो?हमलोग बेकार ही अपने जूतों के तलवे घिस रहे हैं। नया जोड़ा तो हमें मिलने से रहा।"

"लेकिन अगर उस लड़के को पकड़ लिया, तो इनाम के पचास चाँदी के डालर तो कहीं गए नहीं हैं।"

"तुम लोग उस लड़के को क्यों पकड़ना चाहते हो?" बुढ़िया ने पूछा।

"वह एक कम्युनिस्ट का बेटा है। उसने आग लगा कर किसी की जान लेने की कोशिश की।"

बुढ़िया ने पहाड़ी की तरफ देखा और बोली, "मुझे तो नहीं लगता कि वहाँ छिपा होगा। उस पहाड़ी पर कोई कम्युनिस्ट नहीं है।" उसकी सलाह की उपेक्षा करते हुए दोनों सैनिक पहाड़ी पर चढ़ने लगे। मै। तुरत एक दूसरी चोटी पर जा पहुँचा।

वहाँ मैं घने पत्तों वाले एक पेड़ पर जा छिपा। थोड़ी ही देर में "शान्ति-रक्षा कोर" के दोनों सैनिक वहाँ आ पहुँचे। उन्होंने कुछ देर इधर-उधर नजर दौड़ाई और अपनी किस्मत को कोसते हुए पहाड़ी से नीचे उतर गए।

यह कैसे मुमकिन हुआ कि हू हान-सान ने इस काउन्टी की "शान्ति रक्षा-कोर" को मुझे ढूँढ़ने का आदेश दिया, मेरे मन में सवाल उठा। जाहिर है कि इन सब बदमाशें का एक दूसरे से ताल्लुक था; ये सभी लोग कम्युनिस्टों के खिलाफ थे। इनके अफसर इन्हें हुक्म देते थे और ये उस पर अमल करते थे। खास तौर पर उस सूरत में जब कि इनाम में पचास चाँदी के डालर मिलने वाले हों!

सूरज डूबने वाला था। मैं पेड़ से नीचे उतर गया। लेकिन पहाड़ी से नीचे उतरने का जोखिम नहीं उठाना चाहता था, जिससे कहीं पीली वर्दी वाले सैनिक फिर न टकरा जाएँ। भूख से मेरी आँतें कुलबुलाने लगी थीं। आसपास कोई जंगली फल भी नजर नहीं आ रहा था। मुझे पिताजी की वह बात याद आ गई जो उन्होंने मुझसे तब कही थी जब उनके पैर से गोली निकाली जा रही थी। "अगर दर्द से न घबराओ, तो दर्द गायब हो जाएगा।" उस समय मुझे बेहद भूख लगी थी, लेकिन मैंने उसे महसूस न करने की ठान ली। मैं अपने पिताजी और लाल सेना के बारे में सोचने लगा और अनुमान लगाने लगा कि वे लोग कब तक लौटेंगे। श्वेत रक्षक, लोगों का शोषण कर रहे हैं और उन्हें डरा-धमका रहे हैं; जमींदारों ने वह जमीन, जिसका बँटवारा कर दिया गया था, फिर से छीन ली है; गरीबों को खाने के लिए चावल नसीब नहीं और आज हू हान-सान के आदमी मेरी तलाश में

फिर रहे हैं। ये लोग लाल सेना और लाल सैनिकों की सन्तान से कितनी नफरत करते हैं। यहाँ के सभी लोग उस दिन का इन्तजार कर रहे हैं जब लाल सेना वापस आ जाएगी। अचानक जंगली बत्तखों का एक झुण्ड अंग्रेजी अक्षर 'वी' के आकार में मेरे ऊपर से उड़ता हुआ निकल गया। काश, झुण्ड का एक पक्षी ही नीचे उतर आता और मेरा सन्देश येनान पहुँचा देता!

जब सूरज डूब चुका और चारों ओर कुहरा छा गया, तो मैं जल्दी-जल्दी पहाड़ी से नीचे उतर आया। और जब मुझे यकीन हो गया कि उत्तर की तरफ जाने वाली सड़क पर पहुँच गया हूँ, तो तेज कदमों से आगे बढ़ने लगा।

हालाँकि भूख और थकान मुझे बेहद सता रही थी, फिर भी मैं आगे बढ़ता गया। येनान पहुँचने, पिताजी से मिलने, अध्यक्ष माओ के साथ क्रान्ति करने और लाल सेना के साथ वापस लौट कर माँ का बदला लेने के विचार ने मेरे अन्दर एक नया जोश भर दिया। मेरी टाँगें दुखने लगीं और पाँवों में छाले पड़ गए, लेकिन पौ फटने से पहले ही मैं दूसरे काउन्टी-केन्द्र के उपनगर में जा पहुँचा।

वहाँ एक खाने की दुकान दिखाई दी। मैं बेहद भूखा था, लेकिन मेरे पास सिर्फ इतने ही पैसे बचे थे कि मैं एक कटोरा दलिया और आटे की टिकिया ही खरीद सकता था। तो आज से मुझे भीख भी माँगनी पड़ेगी! ठीक है। येनान तो मुझे पहुंचना ही है, चाहे रास्ते में भीख ही क्यों न माँगनी पड़े!

भीख माँग कर जैसे-तैसे पेट भरता हुआ, मैं एक दिन और चलता रहा। अगले दिन सुबह से ही बारिश होने लगी। मेरे लिए आगे बढ़ना मुश्किल हो गया। एक गाँव में पहुँच कर मैं एक गौशाला के अन्दर बैठ गया। कितनी ठण्ड थी! मैंने अपनी पोटली खोली और माँ का दिया कोट निकाल कर पहन लिया। मुझे माँ की याद सताने लगी और उस रात की याद आ गई जब पिताजी लाल सेना में भरती होने के लिए जाने वाले थे। उन्होंने माँ से मेरे बारे में कहा था, "अगर हमारी मजदूर-किसानों की जनवादी सरकार यहाँ बनी रहे, तो इसे लेनिन प्राइमरी स्कूल में दाखिल करा देना।" मुझे लेनिन प्राइमरी स्कूल में दाखिल होने का मौका तो मिला नहीं, लेकिन इन वर्षों में जिन्दगी ने मुझे कई सबक जरूर सिखा दिए थे। मुझे इन पहाड़ों में भटकने के लिए आखिर किसने मजबूर किया था?हू हान-सांन, दुकानदार वाले ये सब लोग एक ही वर्ग के थे। मैं पिताजी से मिलने के लिए कितना आतुर था! अध्यक्ष माओ के नेतृत्व में पिताजी के साथ मिलकर क्रान्ति करने के लिए कितना आतुर था, ताकि हम पर जुल्म ढाने वाले वर्ग का तख्ता पलट दिया जाए! मैंने अपने कोट की सीयन में उस लाल सितारे को टटोला जिसे पिताजी ने दिया था और माँ ने मेरे कपड़े में सी दिया था। इससे मुझे अपना अभियान जारी रखने के लिए एक नई शक्ति मिली।

जब बारिश कुछ थमी, तो मैं खाने की कोई चीज खोजने गाँव में गया। दो परिवारों ने, जो खुशहाल नजर नहीं आ रहे थे, मुझे कुछ बचा-खुचा चावल दिया। तब मैं एक ऊँचे फाटक वाले मकान के सामने से गुजरा। एक काला कुत्ता भौंकता हुआ मेरे ऊपर झपटा, और मेरे भागने से पहले ही उस दुष्ट ने मेरी टाँग पर काट खाया। घाव से खून बहने लगा। मैंने एक पत्थर उठाया और कुत्ते के सिर पर दे मारा। वह चीखता हुआ वहाँ से भाग गया। इतने में एक आदमी मकान से बाहर निकला। वह अधेड़ उम्र का था। शरीर मोटा और चेहरा पीला था;

भौंहें लगभग नहीं के बराबर थीं, आँखें चूहे की तरह, नाक चपटी, मुँह बड़ा-सा और मूँछें पतली-पतली थीं। यह साटिन की गोल टोपी पहने था। यह जानने के लिए कि यह अच्छा आदमी नहीं, मुझे उसकी तरफ एक बार से ज्यादा देखने की जरूरत नहीं पड़ी। "क्या तुम भिखमंगे हो?" उसने पूछा। मुझे चुप देखकर उसने एक बार फिर पूछा, "तुम भीख क्यों माँग रहे हो?"

"पैदल चलते-चलते मुझे भूख लग आई है। मेरे पास खाने को कुछ भी नहीं," मैंने जवाब दिया। उसने जब मुझसे पूछा कि मैं कहाँ से आ रहा हूँ, तो शक हो गया और मैंने सिर्फ गोल-मोल जवाब दिया, "पहाड़ी इलाके से।"

"और तुम्हारे घर वाले कहाँ हैं?" उसने पूछा।

"मेरा अपना कोई नहीं।"

"अकेले हो?"

"हाँ अकेला हूँ।"

"जा कहाँ रहे हो?"

"कहीं नहीं।"

"मैं एक ऐसी जगह तुम्हें काम दिला सकता हूँ जहाँ पर तुम्हें खाना मिलेगा।" ओर तब उसने आगे कहा, "तुम यहीं काम करोगे, मेरे यहाँ?"

"क्या काम करना पड़ेगा?" मैंने पूछा। अब तक मैं सावधान हो चुका था।

"मेरे गाय-बैल चराने होंगे। साथ ही कुछ और छोटे-मोटे काम भी करने होंगे। मैं तुम्हें खाना दूँगा।"

अब मुझे यकीन हो गया कि यह एक जमींदार है और मुझे अपना खेत-मजदूर बनाने की कोशिश में है। "नहीं!" मैंने साफ-साफ कह दिया और वहाँ से चल दिया। वह आदमी मेरे पीछे से चिल्लाया, "ओ भिखमंगे! अगर मैंने तुझे अपने गाँव में फिर देखा, तो तेरी टाँगें तोड़ दूँगा!"

मैं भला इस तरह डरने वाला कहाँ था! सो सीधा गाँव की तरफ जाने लगा। उस आदमी ने एक छड़ी उठाई और मुझ पर दे मारी। "निकल जा!" वह चिल्लाया। "मैं तुझे अपने गाँव में पैर नहीं रखने दूँगा।" गुस्से से पागल होकर मैंने मुट्ठी से मिट्टी उठाई और उसकी आँखों में झोंक दी। साथ ही उसके हाथ से छड़ी छीन कर उसी छड़ी से उस पर दो बार कस कर प्रहार किया और दौड़ता हुआ गाँव से बाहर निकल गया।

गाँव के पास ही पहाड़ की चोटी पर एक छोटा सा मन्दिर था। मैं वहाँ चला गया। मन्दिर में कोई नहीं था और उसका दरवाजा खुला था। आँगन में गिङको का एक ऊँचा पेड़ खड़ा था। पूरब और पश्चिम की तरफ के कमरों में ताले बन्द थे। लेकिन उत्तर की तरफ का कमरा बिल्कुल खुला था। मैं अन्दर चला गया। वहाँ धूल की मोटी पर्तें जमी थीं। सुनहरे चेहरे वाली एक मूर्ति चौकी पर खड़ी थी। लेकिन उसके सामने न कोई धूपबत्ती थी और न मोमबत्ती। लगता था काफी समय से यहाँ पूजा करने कोई नहीं आया। मैंने एक पत्थर की लम्बी बेंच की गर्द साफ कर उस पर अपना पतला-सा सूती बिछौना बिछा दिया। अपने गीले कपड़े उतार डाले और लेट गया।

बेहद थका होने के कारण मुझे जल्दी ही नींद आ गई।

आधी रात में अचानक मेरी आँख खुल गई चारों ओर घुप अन्धेरा था। साँय-साँय करती हवा इतनी तेज चल रही थी कि लगता था गिङको के पेड़ को और उस छोटे से मन्दिर को उड़ा ले जाएगी। मेरे कपड़े अभी सूखे नहीं थे। भूख व ठण्ड से मैं बेहाल था। पोटली से निकालकर मैंने अपने सारे कपड़े पहन लिए। ऊपर से अपनी पतली सूती चादर भी ओढ़ ली। मैंने फिर से सोने की कोशिश की। लेकिन नींद नहीं आई जागते रहने की वजह से भूख व ठण्ड और ज्यादा सताने लगी, रात और ज्यादा खौफनाक, अन्धेरी और लम्बी लगने लगी।

अन्त में हवा रुक गई लेकिन सुबह होने में अभी देर थी। जब बाहर प्रकाश की पहली किरण आई तो मैं पत्थर की ऊँची बेंच से कूद पड़ा और मन्दिर के बाहर निकल गया।

सूरज उग चुका था और मन्दिर की दीवार पर अपनी सुनहरी किरणें बिखेर रहा था। उसकी रोशनी दीवार पर अंकित इन नारों पर भी पड़ रही थी, जो वर्षा के कई मौसम बीतने के कारण काफी धुँधले पड़ गए थे : "स्थानीय निरंकुश जमींदारों का तख्ता पलट दो। उनकी जमीन का बँटवारा कर डालो!" इन शब्दों से बड़ा हौसला मिला। अच्छा, तो यहाँ के लोग भी क्रान्ति में हिस्सा ले चुके हैं! ओर आज हालाँकि ये लोग श्वेत शासन के जुए के नीचे कराह रहे हैं, एक न एक दिन लाल सेना जरूर लौटेगी, जमीन का जरूर फिर से बँटवारा किया जाएगा और क्रान्ति जरूर सफल होगी।

मन्दिर के भीतर जाकर मैंने अपनी पोटली बाँध ली और पहाड़ से नीचे उतर कर गाँव की तरफ बढ़ गया, इस उम्मीद से कि वहाँ कुछ न कुछ खाने को मिल ही जाएगा ताकि मैं आगे का सफर तय कर सकूँ।

जब गाँव में पहुँचा तो लोगों के खाने का वक्त हो चुका था। एक ऐसे परिवार जो बिल्कुल ही खुशहाल मालूम नहीं होता था, मुझे दो कटोरा दलिया खाने को दिया। मुझे लगा कि ऐसे ही लोगों में गरीबों के लिए हमदर्दी होती है। गाँव छोड़ कर आगे जाने ही वाला था कि मुझे स्कूल में पढ़ने वाला एक लड़का मिला। उम्र कोई तेरह-चौदह साल रही होगी। वह बढ़िया कपड़े पहने था और कन्धे पर बस्ता लटकाए था। बालों को उसने बड़े करीने से सँवारा हुआ था और चावल का एक मीठा केक खाता जा रहा था। लड़का तेजी से मेरी तरफ आया और रुक कर बोला, "ऐ भिखारी के बच्चे! मुझे अपना बाप कह कर पुकार। मैं तुझे केक का टुकड़ा दूँगा!" यह अपमान मेरे लिए बर्दाश्त के बाहर था। फिर भी भिड़न्त से बचने के लिए मैं कुछ न बोला और अपनी राह चलता रहा। लेकिन वह छोकरा पीछे मुड़कर मेरी तरफ बढ़ा और केक का टुकड़ा जमीन पर फेंक कर बोला, "ले खा, कुत्ते, इसे खा!" मैं अब और ज्यादा बर्दाश्त न कर सका। केक के टुकड़े का मैंने जोर से ठोकर मारी और वह लगभग दस फुट दूर जा गिरा! इस पर वह चिल्लाया "वापस दे, मेरा केक वापस दे!"

"जरूर दूँगा, मैं तुझे केक जरूर वापस दूँगा!" गुस्से से यह कहते हुए मैंने तड़ाक से दो थप्पड़ उसके गाल पर जड़ दिए। मेरी उँगलियों के निशान उसके गाल पर उभर आए।

"बचाओ, जल्दी बचाओ। इस भिखारी के बच्चे ने मुझे थप्पड़ मारा है," वह लड़का एक जंगली जानवार की तरह चिल्लााया और मुझसे चिपट गया। मैंने उसे उठाकर जमीन पर पटक दिया। लेकिन उस मक्कार छोकरे ने मेरी टाँग कस कर पकड़ ली और काफी कोशिश करने पर भी मैं उसे छुड़ा नहीं पाया।

शोरगुल सुनकर लोग घरों से बाहर निकल आए, यह पता लगाने कि क्या हो रहा है। उनमें एक बुढ़िया भी थी जो पास आकर हमदर्दी के साथ चुपके से मेरे कान में बोली, "यह क्या किया तुमने, बेटा! अपने लिए एक मुसीबत मोल ले ली। जल्दी करो, यहाँ से भाग जाओ! अगर इस लड़के का बाप आ गया तो तुम्हारी जान की खैर नहीं।"

अधेड़ उम्र के एक आदमी ने कहा, "यह टैक्स-वसूली विभाग के मुखिया ऊ का बेटा है। वह तुम्हारा बहुत कुछ बिगाड़ सकता है। तुमने इसे थप्पड़ क्यों मारा?" और उसने मेरा पैर इस लड़के से छुड़ाने की कोशिश की ताकि मैं भाग सकूँ। इतने ही में एक आदमी चीखता-चिल्लाता और गालियाँ बकता मेरी तरफ आता दिखाई दिया। नजर उठाई तो देखा यह वही आदमी है जिसकी आँखों में मैंने मिट्टी झोंकी थी! ज्योंही लड़के ने उस आदमी को देखा, वह जोर से चिल्लाया, "पिताजी, जल्दी आइए!"

उस आदमी ने आते ही मेरी गर्दन दबोच ली और घसीटता हुआ मुझे अपने साथ ले गया। मैं जानता था कि ऐसे आदमी से बहस करना बेकार है। इसलिए मैंने अपना मुँह बन्द रखा। लोगों की भीड़ जमा हो गई। मेरे साथ हमदर्दी दिखाने वाली बुढ़िया ने मेरी तरफ से सफाई पेश करने की कोशिश की। लेकिन बुढ़िया की तरफ घूर कर देखते हुए वह जोर से बोला, "इस बार मैं इसे हरगिज नहीं छोड़ूँगा। मैं इसकी खाल खींच लूँगा!" तभी जमींदार के दो पिट्ठू भी आ गए। उन्होंने मेरे दोनों हाथ पीठ की तरफ बाँध दिए और मुझे ऊँचे फाटक वाले मकान की ओर ले गए। वहाँ उन्होंने मुझे एक दालचीनी के पेड़ से बाँध दिया और सामान ढोने वाले डण्डे से पीटा। उस छोकरे ने भी कस के दो-चार चाबुक लगाए। शुरू में मुझे बड़ा दर्द हुआ, लेकिन धीरे-धीरे मेरा शरीर सुन्न पड़ता गया और अन्त में मैं पूरी तरह बेहोश हो गया।

होश में आने पर मैंने करवट बदलने की कोशिश की। लेकिन टस से मस न हो सका। लगता था हड्डियाँ चूर-चूर हो गई हैं। बड़ी कोशिश से मैंने अपनी आँखें खोलीं। आखिर मैं हूँ कहाँ?मैं एक नदी के किनारे पड़ा था। कोई पचास वर्ष के एक बुजुर्ग मेरे पास बैठे थे।

"आप..." मेरी जीभ फूलकर मोटी हो गई थी और बिल्कुल हिल-डुल नहीं पाती थी।

"मैं तो सिर्फ यहाँ से गुजर रहा था। मेरा कुलनाम याओ है। मैंने टैक्स-वसूली विभाग के ऊ को तुम्हारी पिटाई करते और तुम्हें बेहोशी की हालत में यहाँ लाकर फेंकते देखा। मुझे डर था कि तुम्हें जंगली जानवर न उठा ले जाएँ। इसलिए काफी देर से यहाँ बैठा तुम्हारी रखवाली कर रहा हूँ।"

"शुक्रिया।.:" और तब अचानक मुझे अपनी छोटी-सी पोटली की याद आ गई

"क्या खोज रहे हो?" मेरे बुजुर्ग शुभचिन्तक ने पूछा।

"अपनी पोटली।"

"उसे तो ऊ ले गया।"

अब मेरे पास सिर्फ वही कपड़े रह गये थे जिन्हें मैं पहने हुए था। माँ का कोट, जिसे मैं पहने हुए था, उन बदमाशों ने चिथड़े-चिथड़े कर डाला था। लेकिन जब मैंने उसकी सीवन टटोली तो लाल सितारे को सुरक्षित पाया। मैं बेहद खुश हुआ। इससे मुझे फिर से येनान का, अपनी मंजिल का ध्यान हो आया।

मैंने उठने की कोशिश की। लेकिन उन दयालु बुजुर्ग की मदद से भी उठ न सका। "तुम अभी लेटे रहो। तुम्हें काफी चोट लगी है।"

"लेकिन मुझे तो जाना है।"

"कहाँ?"

अब तक मुझे यकीन हो चुका था कि ये बुजुर्ग एक अच्छ आदमी हैं। इसलिए मैंने बता दिया, "येनान।"

एक क्षण के लिए उन्होंने चारों तरफ देखा और फिर पूछा,

"किसलिए?"

"पिताजी से मिलने।"

"अच्छा, लेकिन येनान तो यहाँ से बहुत दूर है," एक लम्बी साँस भरते हुए उन्होंने कहा।

"चाहे कितनी दूर क्यों न हो, मुझे वहाँ जरूर जाना है।"

"तुम इतना लम्बा सफर कैसे तय कर सकोगे?जरा अपनी टाँगों की हालत तो देखो!" उन्होंने मुझसे कहा।

मैंने अपनी एक टाँग उठाने की कोशिश की, लेकिन वह लकड़ी की तरह सख्त हो गई थी। दूसरी टाँग का भी कुछ ऐसा ही हाल था। जोड़ इतने सख्त थे कि मुड़ने का नाम ही नहीं लेते थे। लेकिन मुझे तो अपने पिताजी

के पास अवश्य जाना था, येनान अवश्य जाना था, लाल सेना के पास अवश्य जाना था! मैं रेंगते हुए किसी तरह चलने की कोशिश करने लगा।

"चलो, कुछ देर के लिए मेरे साथ घर चलो," बुजुर्ग ने सहानुभूति के साथ कहा।

"आप कहाँ रहते हैं?मैंने पूछा।

"याओछ गाँव में। यहाँ से कोई दस ली होगा।"

फासला काफी मालूम पड़ा। तभी बुजुर्ग ने कहा, "मैं तुम्हें अपनी पीठ पर लाद कर ले चलूँगा।"

उनकी इस बात का मेरे दिल पर इतना गहरा असर हुआ कि मेरी आँखें छलछला आईं। "मैं आपका एहसान कैसे भूल सकता हूँ!" मैंने बार-बार दोहराया।

"मेरा अपना भी कोई येनान में है, मेरे बच्चे," उन्होंने गम्भीरता से कहा। "मेरा अपना बेटा हाए-छ्वान

लम्बे अभियान में अध्यक्ष माओ के साथ वहाँ गया है। हम दोनों एक ही दरख्त की दो शाखें हैं।''

आठ

जब हम बुजुर्ग के घर पहुँचे तो रात हो चुकी थी। उन्होंने मुझे अपने कमरे में लिटा दिया। ''यहाँ आओ, श्याओ-हुङ की माँ, जल्दी आओ,'' उन्होंने पुकारा और दूसरे ही क्षण एक स्त्री कमरे में आ गई ''यह लड़का कौन है?'' स्त्री ने आश्चर्य से पूछा।

''मेरा कुलनाम फान है—मेरा नाम फान चन-शान है,'' मैंने अपना परिचय दिया। स्त्री ने मुझसे पूछा कि मैं कहाँ से आ रहा हूँ।

''मैंने इसे नदी के किनारे से उठाया है,'' बुजुर्ग ने बताया और कहा, ''टैक्स-वसूली विभाग के मुखिया ऊ ने तो मारते-मारते इसकी जान ही ले ली थी। जल्दी करो, इसके घाव धोने के लिए कुछ गरम पानी ले आओ।''

स्त्री के आवाज लगाने पर कोई बारह साल की एक लड़की कमरे में आई ''श्याओ-हुङ बेटी, जल्दी से कुछ पानी तो गरम करने रख दो,'' स्त्री ने कहा।

बुजुर्ग ने हम तीनों को अपनी योजना बताई ''अब से चन-शान हमारे यहाँ रहेगा। अगर कोई तुमसे पूछे तो कहना मेरा भतीजा है,'' अपनी पत्नी की ओर देखते हुए उन्होंने कहा। फिर उन्होंने मेरी ओर देखा और बोले, ''आज से तुम इन्हें चाची कहोगे और मुझे चाचा।'' अपनी बेटी की तरफ देखकर उन्होंने बात जारी रखते हुए कहा, ''यह मेरी बेटी श्याओ-हुङ है। तुम दोनों आज से भाई-बहन हो।''

लड़की चूल्हे पर रखी केतली को देख रही थी। वह मेरी तरफ मुँह करके मुस्कराई इस पूरे इन्तजाम के लिए मैं याओ चाचा के एहसान से लद गया। लेकिन मैं वहाँ ज्यादा दिन नहीं ठहर सकता था। मुझे तो येनान जाना था। ''शुक्रिया चाचाजी,'' मैंने कहा, ''जैसे ही कुछ ठीक हो जाऊँगा, मुझे यहाँ से आगे जाना है।''

''इस तरह अन्धाधुन्ध तुम कहाँ जाओगे?'' याओ चाचा बोले। ''तुम्हें पार्टी-संगठन से सम्पर्क कायम करना होगा।'' घर पहुँचने से पहले मैंने याओ चाचा का सुङ चाचा के घर से विदा होने से लेकर चावल की दुकान में काम सीखने तक की अपनी सारी आपबीती कह सुनाई थी। ''अब तुम्हें चाओ चाचा या सेक्रेटरी ऊ का पता लगाना है,'' याओ चाचा ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा।

"लेकिन मैं उनका पता कैसे लगा सकता हूँ?" मैंने पूछा।

"कुछ दिन यहीं रहो। मैं उनका पता लगाने में तुम्हारी मदद करूँगा।"

"ठीक है, तुम यहीं रहो और इसे अपना ही घर समझो," याओ चाची ने सलाह दी। इस तरह मुझे एक नया घर मिल गया! मैं वहीं रहने लगा।

याओ चाची के घर की जिन्दगी चावल की दुकान की जिन्दगी से कितनी भिन्न थी! चावल की दुकान में मेरे दिल पर हमेशा कोई न कोई बोझ बना ही रहता था, जबकि यहाँ मुझे अपने ही घर का सा स्नेह और सद्भाव मिलता था। याओ चाचा, चाची, बहन श्याओ-हुङ और मैं, हम सब समान आकांक्षाएँ लिए हुए थे, समान भावनाएँ सँजोए हुए थे। मैं अपने को उनके ही परिवार का सदस्य समझने लगा।

मेरी दायीं टाँग का घाव कुछ बिगड़ गया था और ढाई महीने तक इलाज कराने पर भी भरा नहीं। मैं चिन्ता में पड़ गया। येनान जाने के लिए 25,000 ली की यात्रा मैं कैसे पूरी कर पाऊँगा?एक दिन जब वर्षा हो रही थी और हम चारों घर पर ही बातचीत कर रहे थे, तो मैंने अपनी टाँग का घाव दिखाते हुए कहा, "ल्यूशी गाँव में हू हान-सान ने मेरी पिटाई की; चावल की दुकान में दुकानदार शन ने मेरी पिटाई की और छाहो गाँव में उस ऊ के बच्चे ने मेरी यह हालत कर दी। उन सबको आखिर मुझे पीटने का क्या हक था?..."

"उनके पास धन-दौलत और सत्ता है।" याओ चाची बोलीं।

"उनके पास बन्दूकें हैं, 'शान्ति रक्षा कोर' है, पुलिस ब्यूरो है..." याओ चाचा ने कहा।

"वे सब लोग भी प्रतिक्रियावादी सरकारी अफसरों की ही बिरादरी के हैं," याओ चाची ने गहरी साँस लेते हुए कहा।

"अगर हमारी मजदूर-किसानों की जनवादी सरकार यहाँ कायम रहती और लाल सेना चली न जाती तो ऐसे बदमाशों को हू हान-सान की ही तरह बाँध कर और कागज की ऊँची नुकीली टोपी पहना कर घुमाया

जाता,'' मैंने कहा। ''लेकिन आज हालत यह है कि ये लोग निरंकुश जमींदारों की तरह हमारे ऊपर सवारी गाँठ रहे हैं।''

''लाल सेना जरूर वापस लौटेगी और वह दिन जरूर आएगा जब गरीबों की बेड़ियाँ टूट जाएँगी,'' याओ चाचा ने बड़े आत्मविश्वास के साथ कहा। याओ चाचा को क्रान्ति के बारे में काफी जानकारी थी। वे हमें बहुत सी क्रान्तिकारी कहानियाँ सुनाते रहते थे।

उस वर्ष शरद में, शहर से आने वाले लोगों से हमने सुना कि जापानियों ने हथियार डाल दिए हैं और हमने जापान के खिलाफ लड़ाई में जीत हासिल कर ली है। हम सबको बड़ी खुशी हुई मैंने खुश होकर याओ चाचा से कहा, ''पिताजी और हाए-छ्वान भइया जल्दी ही लौट आएँगे और लाल सेना भी जल्दी ही लौट आएगी।''

''हमें कुछ और इन्तजार करना पड़ेगा। देखें, आगे क्या होता है,'' याओ चाचा ने बड़े शान्त भाव ने कहा।

लेकिन यह क्यों?मैंने सोचा। क्या लाल सेना जापानियों से लड़ने उत्तर में नहीं गई थी?आज जबकि जापानियों ने हथियार डाल दिए हैं, क्या लाल सेना को वापस नहीं लौट आना चाहिए?

कुछ दिनों बाद चाओ चाचा को खोजने याओ चाचा काउन्टी-केन्द्र गए। लेकिन इस बार भी उनका पता नहीं लगा पाए। वहाँ उन्होंने यह सुना कि जापानियों का आत्मसर्पण स्वीकार करने के लिए क्वोमिन्ताङ प्रतिक्रियावादी, लड़ाई के पृष्ठभाग से फुर्ती से आगे की तरफ आ रहे हैं, और आठवीं राह सेना, जिसने जापान-विरोधी युद्ध में लड़ाई का मुख्य बोझ उठाया था, क्वोमिन्ताङ को विजय के फल नहीं हथियाने दे रही, क्योंकि क्वोमिन्ताङ ने वास्तव में प्रतिरोध युद्ध की जड़ काटने की कोशिश की थी। उन्होंने यह भी सुना कि लड़ाई फिर से भड़क सकती है।

परिस्थिति का ठीक वैसे ही विकास हुआ जैसा कि लोगों ने सोचा था। तनाव बढ़ गया। ''केन्द्रीय सरकारी सेना'' और क्वोमिन्ताङ के शासक गुट ने जनता को खूब लूटा, और जो कुछ भी हाथ लगा उसे हड़प लिया। चूँकि क्वोमिन्ताङ सेना आ चुकी थी और वह लोगों से अनाज, खुराक, टैक्स और लगभग हर चीज वसूल कर रही थी, इसलिए जनता की जिन्दगी दूभर हो गई थी और उसे बेहद मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा था।

एक दिन श्याओ-हुङ और मैं ईंधन के लिए लकड़ी बटोर कर लौट रहे थे कि हमने देखा दो हथियारबन्दर क्वोमिन्ताङ सैनिक हमारे मकान के दरवाजे पर खड़े हैं। उनके साथ वसूली विभाग का एक अफसर भी था। अन्दर एक और सैनिक था जिसके हाथ में पिस्तौल थी। मैंने याओ चाचा को उनसे यह कहते सुना, ''अभी कल ही तो आप लोग यहाँ थे और जो थोड़ा-बहुत पैसा मेरे पास था उसे ले गए थे। आज आप फिर चले आए हैं!''

''कल हम 'स्वागत' कोष के लिए पैसा लेने आए थे और आज 'सुख-सुविधा' कोष के लिए!''

''हाँ, हाँ,'' वसूली अफसर बोला, ''क्वोमिन्ताङ सेना ने दुश्मन के दाँत खट्टे कर दिए हैं और बड़ा यश कमाया है। इसलिए वह इनाम की हकदार है।''

''क्या यश कमाया?'' याओ चाचा ने वसूली अफसर की आँखों में आँखें डाल कर पूछा। वह इसका कोई जवाब नहीं दे पाया और सैनिक की तरफ सिर्फ खिसियाई नजरों से देखता रहा। ''वक्त खराब न करो,'' सैनिक ने फटकार लगाई, ''पैसा निकालो।''

"मेरे पास एक दमड़ी भी नहीं है। जो कुछ था, आप लोग ले गए।"

"कोई पैसा नहीं है?" सैनिक ने फिर एक बार चिल्लाकर कहा। "तो उसके बदले हमें चावल दो।"

"मेरे पास चावल नहीं है। अपने बच्चों को खिलाने के लिए भी चावल नहीं है।"

"ओ बदमाश बूढ़े, तू अपना हिस्सा देने से इनकार करता है...?" सैनिक ने याओ चाचा की तरफ पिस्तौल तान कर उन्हें धमकी दी। उसी समय वसूली अफसर बाहर चला गया और वहाँ खड़े एक सैनिक के कान में कुछ फुसफुसाया। सैनिक घर में घुस कर जोर से बोला, "प्लाटून-नायक, इस बूढ़े आदमी का बेटा कम्युनिस्ट है!"

"अच्छा, तो यह बात है," प्लाटून-नायक ने याओ चाचा की तरफ त्यौरियाँ चढ़ाकर देखते हुए कहा। "यही वजह है कि तू मेरी बात मानने से इनकार कर रहा है। अच्छा, तो मेरा बेटा आठवीं राह सेना में है! तुझे मालूम होना चाहिए कि तू किस परिस्थिति में है। अगर तूने पैसा न दिया तो मैं तुझे गिरफ्तार कर लूँगा।"

"जो जी में आए करो। मेरे पास पैसा नहीं है। और न मेरे पास चावल ही है," याओ चाचा ने बड़े धीरज से कहा।

उस दुष्ट प्लाटून-नायक ने याओ चाचा के गाल पर तड़ाक से एक तमाचा जड़ दिया और पीछे मुड़कर दोनों सैनिकों से चिल्लाकर कहा : "घर की तलाशी लो!" सैनिकों ने घर की हर चीज को उलट-पलट दिया।

"कैसी फौज है तुम्हारी?क्या तुम्हारा काम सिर्फ लोगों को लूटना ही है?" याओ चाचा ने सैनिकों को एक तरफ धकेलते हुए बड़े आक्रोश के साथ कहा। उनमें एक ने याओ चाचा पर अपनी बन्दूक का कुन्दा दे मारा। वे जमीन पर गिर पड़े।

जब मैंने यह देखा तो गुस्से से पागल हो गया। लकड़ी काटने की कुल्हाड़ी हाथ में उठा कर मैं अन्दर जाने ही वाला था कि श्याओ-हुङ ने मुझे पीछे खींच लिया, इस डर से कि कहीं मेरी वजह से हालत और ज्यादा बिगड़ न जाए। इस बीच याओ चाचा ने मुझे देख लिया था। वे बोले, "इन्हें जी भर कर लूट लेने दो!"

एक सैनिक के हाथ एक टोकरी लगी जो चावल से आधी भरी थी। इसे पाते ही वह खुशी से चिल्ला पड़ा। और जैसा कि आशंका थी, टोकरी समेत चावल ले गया।

हम लोग यह सब कैसे बर्दाश्त कर सकते थे! छोटी बहन श्याओ-हुङ भी गुस्से से तमतमा उठी। "ये वहशी दरिन्दे!" याओ चचा ने अपने दाँत पीसते हुए कहा। "जब तक इनका सफाया नहीं कर दिया जाएगा, हमारी जिन्दगी दोजख बनी रहेगी!"

उनकी बात ठीक थी। क्वोमिन्ताङ सैनिकों के आने के बाद हमारी जिन्दगी की मुसीबतें और ज्यादा बढ़ गई थीं। वे हमें लाल सैनिकों का रिश्तेदार समझते थे, हम से घृणा करते थे। वे हमें हर तरह से सताते रहते थे।

याओ चाचा ने गुप्त रूप से कम्युनिस्ट पार्टी और लाल सेना के बारे में मालूम कर लिया। हमें पता चल गया कि लाल सेना का नाम बदल कर आठवीं राह सेना और नई चौथी सेना रख दिया गया था और अब इन दोनों को जन-मुक्ति सेना का नाम दे दिया गया है। हमें यह भी पता चल गया कि सिर्फ दसियों हजार सैनिकों

वाली इस सेना में अब पूरे देश में एक लाख से ज्यादा सैनिक हो गए हैं और यह अब उत्तर में क्वोमिन्ताङ सेनाओं के खिलाफ लड़ रही है। यह जानकर हमें खुशी हुई कि लाल सेना के सैनिकों की संख्या बढ़ गई है और उनके पास पहले से ज्यादा हथियार हैं; आधार-क्षेत्रों का इलाका बढ़ गया है। ये सब अच्दी खबरें थीं। लेकिन हम लोग इतनी दूर हैं। मैं मुक्ति सेना को ढूँढ़ने उत्तर की तरफ अपनी यात्रा फिर शुरू करना चाहता था। लेकिन याओ चाचा ने मेरी एक न सुनी। उन्होंने कहा, मैं सिर्फ तभी जा सकूँगा जब पार्टी-संगठन का पता लग जाए।

हमने बहुत कोशिश की, बहुत इन्तजार किया। एक साल और निकल गया।

एक दिन याओ चाचा को वसूली विभाग में बुलाया गया। वहाँ से वे काफी देर बाद लौटे। वे बहुत गम्भीर नजर आ रहे थे। जब चाची ने पूछा बात क्या है, तो उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया, सिर्फ पाइप से धुआँ फेंकते रहे। "आखिर बात क्या है, चाचाजी?" मैंने साहस करके पूछा।

"वे लोग तुम्हें क्वोमिन्ताङ फौज में जबरन भरती करना चाहते हैं!" याओ चाचा अपना मौन भंग करते हुए बोले।

"हम इसे नहीं जाने देंगे!" चाची ने जोर से कहा।

"अगर यह नहीं गया, तो इसके बदले हमें दो पिकल चावल देना होगा। वसूली विभाग में बुलाकर मुझसे यही कहा गया है।"

"दो पिकल चावल?" मैं चकित रह गया। आखिर दो पिकल चावल हम कहाँ से लाएँगे!

"वे लोग अच्छी तरह जानते हैं कि हमारे पास दो पिकल चावल नहीं है। यह महज हमें परेशान करने की बात है," याओ चाचा ने स्पष्ट किया।

"तो फिर क्या करना चाहिए?" चाची ने चिन्ता प्रकट की।

"मैं उत्तर की तरफ मुक्ति सेना को ढूँढ़ने जाऊँगा," मैं बोला।

"और मैं कल पहाड़ पर जाकर कुछ जड़ी-बूटियाँ जमा करूँगा, ताकि उन्हें बेचकर तुम्हारे लिए राहखर्च जुटा सकूँ," याओ चाचा ने कहा।

यह सुनकर मेरा दिल भर आया और बिना कुछ कहे मैं याओ चाचा की ओर देखता रहा।

उस रात हमने जड़ी-बूटियाँ जमा करने में काम आने वाले औजार तैयार किए। श्याओ-हुङ और मैं याओ चाचा के साथ जाने वाले थे।

अगले दिन सुबह का नाश्ता करने के बाद जब हम लोग पहाड़ की तरफ जाने लगे तो याओ चाचा बोले, "न हो तो तुम दोनों दो कुल्हाड़ियाँ और दो बहंगियाँ भी साथ ले लो।"

"चाचाजी, क्या हम इतनी ज्यादा जड़ी-बूटियाँ जमा करने वाले हैं?" मैंने पूछा।

"इतनी ज्यादा जड़ी-बूटियाँ कैसे मिल सकती हैं?" याओ चाचा बोले। "ये चीजें तो लकड़ियाँ इकट्ठा करने के लिए हैं।" मैं अब भी याओ चाचा की बात नहीं समझ पाया था। इसलिए उन्होंने स्पष्ट किया, "यह महज एक आवरण है। अगर हम दो गट्ठर लकड़ी भी साथ लेते आएँ, तो हम पर कोई शक नहीं करेगा। हमें

अपने को क्वोमिन्ताङ सेना की नजरों से बचाना चाहिए।" याओ चाचा सचमुच बड़ी चौकसी बरत रहे थे।

चूँकि मैं अपने पिताजी और मुक्ति सेना को खोजने के लिए रवाना होने वाला था, मुझे अपनी माँ का कोट और उसकी सीवन के अन्दर सिला हुआ लाल सितारा याद आ गया। इन्हें मैं अपने साथ ले जाना चाहता था। चाची से कहकर मैंने कोट निकलवा लिया। और उसे बाकी सामान के साथ लपेट कर एक छोटी-सी पोटली बना ली। चाची ने चार उबले हुए अण्डे हँडिया से निकाले और बोलीं, "लो, इन्हें भी साथ रख लो।" मैंने चाची की तरफ देखा और भारी मन से उनसे विदा ली।

उन्होंने मेरे दोनों हाथ अपने हाथों में लेकर कहा, "बेटा, अगर हो सके तो हाए-छ्वान का भी पता लगाना।"

"जरूर पता लगाऊँगा," मैंने जवाब दिया। "और जब पता चला जाएगा, तो उन्हें अपने साथ लेकर वापस आऊँगा।"

चाची ने दरवाजे तक आकर हमें विदा किया। जब हम कुछ दूर निकल गए तो मैंने पीछे मुड़कर देखा। चाची अब भी दरवाजे पर खड़ी थी।

हम लोग एक पहाड़ी दर्रे पर पहुँच गए। सामने बादल और कुहरे से ढके ऊँचे-ऊँचे पहाड़ खड़े थे। पहाड़ी रास्ते बड़े ऊबड़-खाबड़ थे और अक्सर ऊँची-ऊँची पहाड़ियों और घाटियों से गुजरते थे। दोपहर के वक्त हम लोग एक खड़ी चट्टान के नीचे रुक गए। मैंने ऊपर की तरफ देखा। वह स्थान बाँस के झुरमुटों और बेलों से ढका हुआ था। दो चीलें आसमान में मण्डरा रही थीं। चट्टान इतनी सीधी थी कि कुछ स्थानों पर बाहर की तरफ झुकी मालूम होती थी। याओ चाचा ने चट्टान पर चढ़ने की तैयारी कर ली। उन्होंने टोकरी पीठ पर बाँध ली और कमर में पेटी पहन ली जिस पर धातु का एक हुक लगा हुआ था। इसके बाद वे जूते उतार कर ऊपर चढ़ने लगे।

याओ चाचा ने खड़ी चट्टान पर चढ़कर जड़ी-बूटियाँ जमा कीं और श्याओ-हुङ व मैं नीचे लकड़ियाँ बटोरते रहे। चट्टान के बीच में लटक कर याओ चाचा कैसे मेरे लिए जड़ी-बूटियाँ जमा कर रहे हैं, यह देख कर मैं उनके एहसान से दब गया। चूँकि मैं एक लाल सैनिक का बेटा था, इसलिए उन्होंने मुझे पहले कभी देखा तक न था। और अब मुझे क्वोमिन्ताङ सेना में जबरन भरती किए जाने से बचाने के लिए, मेरे यह बुजुर्ग चाचा अपनी जान खतरे में डाल कर मेरे लिए राहखर्च जुटाने का इन्तजाम कर रहे थे, ताकि मैं अपनी जन-सेना का पता लगाने के लिए यात्रा कर सकूँ। "यह वर्ग-भावना नहीं तो और क्या है?" मैंने मन ही मन सोचा।

श्याओ-हुङ ने देखा, मैंने लकड़ी काटना बन्द कर दिया है। उसने मुझसे पूछा कि मैं क्या सोच रहा हूँ।

"छापामारों को ढूँढ़ लेने के बाद क्या तुम यहाँ वापस लौटोगे?" उसने सवाल किया।

"नहीं," मैंने जवाब दिया। "तब तक नहीं जब तक कि हम क्वोमिन्ताङ प्रतिक्रियावादियों और उनके श्वेत रक्षकों का सफाया नहीं कर देते," मैंने अपनी बात स्पष्ट करते हुए कहा।

"अगर इसमें ज्यादा समय लगा तो?"

"तो मैं जिन्दगीभर उनके खिलाफ लड़ता रहूँगा।"

श्याहो-हुङ ने मेरी तरफ देखा और मुस्करा दी।

"क्या तुम्हें कभी अपने भाई हाए-छ्यान की भी याद आती है?" मैंने पूछा।

"क्यों नहीं आती?लेकिन उनकी शक्ल-सूरत मुझे याद नहीं। जब मैं सिर्फ तीन साल की थी तो वे चले गये थे," उसने जवाब दिया।

"तुम्हें मालूम है, मैं भी तुम्हारे भाई की ही तरह बनना चाहता हूँ—मुक्ति सेना में भरती होकर अनेक वर्षों तक युद्ध करना चाहता हूँ, श्वेत रक्षकों का सफाया करना चाहता हूँ और समाजवाद का निर्माण करना चाहता हूँ।"

"तब तो तुम दोनों एक साथ ही वापस लौट सकोगे।"

सहसा एक चील हमारे सिर से ऊपर आसमान में मँडराने लगी

। श्याओ-हुङ ने ऊपर सिर उठाकर देखा। "काश मैं भी तुम्हारे साथ जा सकती," वह बोली। "तुम और मेरे भाई आसमान की बुलन्दियों में उड़ने वाली इस चील की तरह हो!" हमने चील को अपने पंख पसारते और आसमान में ऊँची से ऊँची उड़ान भरते देखा। अन्त में वह हमारी आँखों से ओझल हो गई।

श्याओ-हुङ और मैं चार गट्ठर लकड़ी इकट्ठी कर चुके थे। याओ चाचा जड़ी-बूटियाँ जमा करके नीचे उतर आए। हमने कुछ देर आराम किया। तब याओ चाचा श्याओ-हुङ से बोले, "तुम पहले घर लौट जाओ। माँ से कहना कि मैं चन-शान को कुछ दूर तक पहुँचा कर लौटूँगा।" श्याओ-हुङ ने सिर हिलाकर हामी भरी। "अगर कोई तुमसे कुछ पूछे, वह चाहे कोई भी क्यों न हो," याओ चाचा ने अपनी बात जारी रखी, "तो कह देना कि हम रिश्तेदारों से मिलने गए हैं।" श्याओ-हुङ ने फिर एक बार सिर हिलाकर हामी भरी। "और अगर वसूली अफसर चावल लेने आए, तो उससे कह देना कि मैं कुछ चावल उधार माँगने गया हूँ।" श्याओ-हुङ ने फिर एक बार सिर हिलाकर हामी भरी। वह एक भी शब्द न बोली और एक चट्टान पर खड़ी होकर हमें पहाड़ से उतरते

देखती रही। हम दोनों ने बहँगी के सहारे लकड़ी के दो-दो गट्ठर उठा लिए और आगे बढ़ गए।

काउन्टी-केन्द्र में पहुँच कर हम अपनी जड़ी-बूटियों को बेचने दवा की एक बड़ी दुकान में जा पहुँचे। लकड़ी के गट्ठर हमने दुकान के बाहर ही रख दिए। जब दुकान के एक कर्मचारी ने उन जड़ी-बूटियों को देखा जिन्हें याओ चाचा ने काउन्टर पर रख दिया था, तो वह बड़ी हैरानी व खुशी के साथ बोला, "आखिर हमें वह दवा मिल ही गई!" और तब पीछे मुड़कर उसने पुकारा, "हान साहब, यह आदमी वह दवा लेकर आया हुआ है जिसे पाने के लिए रेजिमेन्ट कमाण्डर हू इतना बचैन है।"

काउन्टर ने पीछे से एक लम्बा, पतला आदमी निकला, जो आँखों पर चश्मा लगाऐ हुए था। दवा पर नजर डालते हुए वह जल्दी से बोला, "ले लो! इसे ले लो!" और याओ चाचा से मुखातिब होकर उसने कहा, "यह दवा अगर और ला सको तो ले आना।" इसके बाद उसने जड़ी-बूटियों के पैसे चुका दिए।

जब याओ चाचा और मैं दुकान से बाहर निकले तो तीन क्वोमिन्ताङ सैनिक जैतूनी हरे रंग की वर्दी पहने हमारे गट्ठरों के पास खड़े थे। "ये किसके हैं?" लकड़ी के गट्ठरों की ओर इशारा करते हुए उन्होंने पूछा।

"मेरे हैं," याओ चाचा ने जवाब दिया।

"इन्हें हमें बेच दो।" उनमें से एक सैनिक बोला।

लकड़ी के ये चार गट्ठर तो एक आवरण थे और बिकाऊ नहीं थे। लेकिन चूँकि ये सैनिक उन्हें खरीदना चाहते थे, इसलिए याओ चाचा ने जरा ऊँची कीमत लगाई 'दो गट्ठरों के पाँच य्वान होंगे," वे बोले।

"ठीक है। हमारे साथ आओ। पैसा वहीं चलकर देंगे।"

याओ चाचा और मेरे सामने सिवाय इसके और कोई चारा नहीं रह गया कि लकड़ी के गट्ठर उठाकर हम उनके पीछे-पीछे चल दें। कुछ दूर चलने के बाद हम एक बड़े से अहाते में पहुँचे जहाँ बहुत से क्वोमिन्ताङ सैनिक टिके हुए थे। हमें लकड़ी रसोईघर में पहुँचाने को कहा गया। जब याओ चाचा ने पैसे माँगे, तो सैनिक ने जवाब दिया, "आज हमारे पास पैसा नहीं है। एक पखवाड़े बाद आना।"

"लेकिन हमें तो पैसे की सख्त जरूतर है। हम सिर्फ नकद ही बेचते हैं।"

"बड़े बेवकूफ हो!" सैनिक ने फटकार लगाते हुए कहा। "आखिर एक पखवाड़े मे कौन-सा फर्क पड़ने जा रहा है?वैसे, अगर हम तुम्हें एक दमड़ी भी न दें तो तुम हमारा क्या बिगाड़ लोगे?"

उनसे बहस करना बेकार था। इसलिए मैंने अपने दोनों गट्ठर उठा लिए और चलने लगा। लेकिन उनमें से एक सैनिक ने मुझे पकड़ लिया और मेरी टाँग में लात मारते हुए बोला, "इसे लेकर कहाँ जा रहे हो?रख दो यहीं।"

मैं क्रोध से पागल हो उठा और लकड़ी का गट्ठर जमीन पर पटकते हुए गुस्से से बोला, "आखिर आप चाहते क्या हैं?एक तो बिना दाम चुकाए सामान खरीद रहे हैं और ऊपर से मारपीट भी कर रहे हैं।"

झगड़ा बढ़ता देखकर एक क्वोमिन्ताङ अफसर ऊँची दीवारों वाले एक मकान से निकल कर वहाँ आ पहुँचा। सामने आकर वह बोला, "क्या हो रहा है?"

"इन्होंने दो गट्ठर लकड़ी मोल ली है," याओ चाचा ने सैनिक की तरफ इशारा करके कहा, "लेकिन कहते हैं आज पैसा नहीं देंगे। हमें पैसे की सख्त जरूरत है।

"ओह, तो यह बात है..." अफसर बोला। "दो गट्ठर लकड़ी के कितने पैसे हुए?यह सब हल्ला-गुल्ला क्यों?हम तुम्हें धोखा थोड़े ही देंगे।"

तभी एक सैनिक उस अफसर के पास जा पहुँचा और धीरे से उसके कान में फुसफुसाया, "जनाब, हमें दो महीने से तनख्वाह नहीं मिली। हमारे पास फूटी कौड़ी भी नहीं है।..."

अफसर ने आँखें नीची कर लीं और पीछे मुड़कर मकान की तरफ वापस चला गया।

मुझे मालूम था कि अफसर सिर्फ दिखावा कर रहा है। दरअसल क्वोमिन्ताङ अफसर का ओहदा बड़ा होता, वह लोगों का उतना ही ज्यादा शोषण करता था। ऐसी हालत में हम यह उम्मीद कैसे कर सकते थे कि सैनिक हमें लकड़ी के दाम देंगे?यह सौदा सरासर एक डकैती के सिवाय और कुछ न था।

इतने ही में चश्मा पहने, वह लम्बा, पतला आदमी वहाँ आ पहुँचा जिसे मैंने दवा की दुकान में देखा था। उसके हाथ में एक लाल रंग का गत्ते का डिब्बा था। वह सीधा अफसर के पास गया और बोला, "रेजिमेन्ट कमाण्डर हू साहब, मैं आपकी दवा ले आया हूँ। पहाड़ से आज ही ताजा-ताजा मँगवाई है।"

"आखिर तुम्हें यह मिल गई बहुत अच्छा!" अफसर ने खुश होकर कहा। "इसे मँगवाने में तुम्हें काफी परेशानी उठानी पड़ी होगी।

"परेशानी तो उठानी पड़ी, लेकिन ज्यादा नहीं," चश्मे वाले आदमी ने बड़े अदब से झुक कर कहा। "वैसे इन दुर्लभ जड़ी-बूटियों का मिलना और खास तौर से ताजा जड़ी-बूटियों का मिलना बहुत मुश्किल है। हमने पहाड़ों पर एक आदमी भेजकर यह दवा मंगवाई है।"

"जलने से जो निशान पड़ जाते हैं उन्हें दूर करने के लिए क्या यह दवा सचमुच अच्छी है?" अफसर ने लाल डिब्बे को अपने हाथ में लेते हुए पूछा।

"जी हाँ," चश्मे वाले आदमी ने सीधे खड़े होकर बड़ी लच्छेदार भाषा में कहा, "कमाण्डर हू साहब, इस दवा के सेवन से नसों का तनाव कम हो जाता है, खून का दौरा तेज हो जाता है, रगों के विकास में मदद मिलती और जवानी फिर लौट आती है!" यह कहते हुए उसने कागज का एक टुकड़ा निकाल लिया और बोला, "दवा का सेवन कैसे किया जाना चाहिए, इसके बारे में सारी हिदायतें इस कागज पर लिखी हुई हैं।"

"हम सचमुच आपके बड़े आभारी हैं," अफसर ने जवाब दिया। और तब मकान की तरफ मुड़कर उसने आवाज लगाई, "एडजुटेन्ट मा!"

"आया हुजूर!" कहता हुआ एक आदमी मकान से बाहर निकला। जाहिर है, वह एडजुटेन्ट मा ही था।

"यह दवा फौरन ल्यूशी गाँव ले जाओ। वहाँ पिताजी से कहना कि थाएहोथाङ औषधालय के श्री हान ने यह दवा आपके लिए खास तौर पर मंगवाई है। जलने से जो निशान पड़ जाते हैं, उन्हें यह दूर करती है। जाओ, साइकिल से चले जाओ।"

"वहाँ ले जाने की जरूरत नहीं हुजूर," एडजुटेन्ट ने जवाब दिया। "हमें अभी-अभी आपक पिताजी का पत्र मिला है। लिखा है, आज तीसरे पहर वे खुद ही यहाँ तशरीफ ला रहे हैं।"

तो यह रेजिमेन्ट कमाण्डर हू है। इसका पिता ल्यूशी गाँव में रहता है! उसे जलने के दाग दूर करने वाली दवा चाहिए! वह आज तीसरे पहर यहाँ पहुँच रहा है! सूरज पश्चिमी आकाश में पहुँच चुका। मेरा जानी दुश्मन अब किसी भी समय आ सकता था। याओ चाचा और मैंने एक दूसरे को आँखों से इशारा किया और तुरत वहाँ से चलते बने।

अभी हम अहाते के बाहर कुछ ही कदम आगे गए होंगे कि मैंने एक रिक्शे की घण्टी सुनी। देखा, भूरे रंग का चोगा और फैल्ट का टोप पहने एक अधेड़ उम्र का आदमी रिक्शे में बैठा हुआ है। उसके चेहरे पर जलने के दाग हैं, लेकिन आँखें अब भी भेड़िए की तरह खूँखार हैं। तो निरंकुश जमींदार हू हान-फान आग से भी बच गया! उसे देखते ही मेरा खून खौल उठा। जब हू ने मेरी तरफ नजर उठाई तो याओ चाचा मेरे सामने आ गए और जब हू रिक्शे से उतर रहा था तो हम लोग मुड़ कर दूसरी सड़क पर जा पहुँचे।

बिना रुके हम लोग लगातार चलते गए और जल्दी ही काउन्टी-केन्द्र से बाहर पहुँच गए।

नौ

याओ चाचा और मैं बीस ली और चल चुके थे। अन्धेरा हो चला था। हमने एक गाँव में रात गुजारने के लिए जगह तलाश कर ली। अगले दिन जब याओ चाचा ने मेरे साथ और आगे जाने की इच्छा जाहिर की तो मैंने उनसे अनुरोध किया, "अब रहने दीजिए, चाचाजी। आपकी उम्र को देखते हुए इतनी कठिन यात्रा की तकलीफ उठाना आपके लिए उचित नहीं।" वे कुछ दूर और जाना चाहते थे। लेकिन मैं कब सुनने वाला था। "कठिनाइयों से भरपूर इन वर्षों में मुझे बहुत कुछ सीखने का मौका मिला है। अब मैं जान गया हूँ कि इन बदमाशों से कैसे निपटा जाय," मैंने जोर देते हुए कहा।

याओ चाचा ने अपनी जेब से पैसे निकाले, जो उन्हें जड़ी-बूटियाँ बेच कर मिले थे, और बोले, "इन्हें रख लो।" जब मैंने सिर्फ दो नोट ही उठाऐ तो उन्होंने पूरी रकम मुझे थमाते हुए आग्रह किया, "यह सब ही रख लो!"

याओ चाचा ने इस सारी अवधि में मेरे लिए जो कुछ भी किया था उसके कारण मैं उनके एहसान के बोझ से बेहद दब गया था। इसलिए मैंने इच्छा न होते हुए भी पैसा रख लिया और फिर एक बार अकेला ही अपने रास्ते चल पड़ा।

अगले दिन शाम होते-होते मैं एक छोटे से कस्बे में पहुँच गया, जहाँ मण्डी लगती थी। वहाँ मैं एक सराय में ठहर गया। सराय में कोई मुसाफिर नहीं था; सिर्फ सराय का मालिक ही था, जिसकी उम्र कोई पचास से ऊपर रही होगी। मैंने अपनी पोटली कन्धे से उतार दी और लेट गया। चूँकि मैं बहुत थक गया था, इसलिए लेटते ही आँख लग गई

आधी रात में अचानक जोर-जोर से दरवाजा खटखटाने की आवाजा से मेरी नींद खुल गई "खोलो!

दरवाजा खोलो! बाहर से बड़ी कर्कश आवाजें सुनाई पड़ीं। आसपास के मकानों से भी उसी तरह जोर-जोर से दरवाजा खटखटाने की आवाजें आईं। मैं फुर्ती से बिस्तर से कूद पड़ा, पोटली उठाई और खिड़की के रास्ते बाहर निकल गया। बाहर अँधेरे में पहुँचकर मैंने खिड़की से झाँककर अन्दर देखा। सराय का मालिक दरवाजे पर पहुँचा और बोला, "कौन है?क्या चाहते हो?"

"जल्दी करो, दरवाजा खोलो!" किसी आदमी ने जोर से जवाब दिया और दरवाजे पर ठोकरें मारता रहा।

सराय के मालिक ने दरवाजा खोल दिया। एक अच्छी खासी भीड़ अन्दर घुस आई उनमें से एक आदमी अंधकार में टार्च से रोशनी फेंक रहा था। यक क्वोमिन्ताङ सैनिकों का एक गिरोह था! मैं पावस ही में एक नीली दीवाल पर चढ़ गया और वहाँ से कूद कर छत पर जा पहुँचा, जहाँ से मैं अच्छी तरह देख सकता था कि नीचे क्या हो रहा है।

"तुम लोग आखिर चाहते क्या हो?" सराय के मालिक ने घबरा कर पूछा।

"हमें कुछ आदमी चाहिए, जो हमारा सामान उठा सकें।"

"हर दूसरे-तीसरे दिन तुम लोग कुलियों की तलाश में आ धमकते हो। डर के मारे सराय में कोई टिकता ही नहीं।" टार्च की रोशनी सराय के मालिक पर पड़ी। "तो क्या तुम्हारा मतलब है मैं खुद सामान उठाऊँ?मैं लगभग साठ साल का हो चुका। बूढ़ा और बीमार हूँ। मैं कोई चीज उठा नहीं सकता।" टार्च की रोशनी अचानक उस चारपाई पर पड़ी जहाँ मैं कुछ देर पहले सो रहा था। "इस बिस्तर का आदमी कहाँ गया?"

"चला गया। वह भाग गया।"

"अच्छा तो वह भाग गया! मगर तुम तो हो। चलो हमारे साथ। बीमार-बीमार हम कुछ नहीं जानते।" और दो बन्दूकधारी सैनिक सराय के मालिक को घसीटने के लिए आगे बढ़े। उसने बड़ी मिन्नत-खुशामद की, मगर उन पर कोई असर न हुआ। उन्होंने उसे खूब पीटा और फिर अपने साथ ले गए।

मैं छत पर लेटा-लेटा आसपास के मकानों से औरतों और बच्चों की चीख-पुकार सुनता रहा। गुस्से से मेरा खून खौल रहा था! रात का अन्धेरा गहरा था, लेकिन पुराने समाज का अन्धेरा उससे कहीं ज्यादा गहरा था। ऐसे समाज को चकनाचूर कर देना होगा!

जब आवाजें आनी बन्द हो गईं, तो मैं रेंगता हुआ छत से नीचे उतर आया। सराय छोड़कर मैं लम्बे-लम्बे डग बढ़ाता फिर से उत्तर की तरफ चल पड़ा।

बारिश हो या धूप, दिन हो या रात, मैं लगातार उत्तर की तरफ बढ़ता ही गया। मेरे मन में सिर्फ एक ही विचार था—जितनी जल्दी हो सके, पार्टी संगठन और मुक्ति सेना का पता लगा लूँ। तब मैं क्रान्तिकारी पाँतों में शामिल हो सकूँगा और अध्यक्ष माओ के नेतृत्व में, मुक्ति सेना के साथ मिलकर उस अन्धेरे, पुराने समाज का तख्ता पलट सकूँगा जिसमें हू हान-सान जैसे भेड़ियों के गिरोह पनप रहे थे।

मैं आगे की तरफ लगातार बढ़ता चला गया और समय-समय पर लोगों से परिस्थिति के बारे में भी पूछताछ करता रहा। लोगों ने बताया कि मुक्ति सेना याङत्सी नदी के उत्तर में क्वोमिन्ताङ सेना के खिलाफ लड़ रही है और उसने बहुत सी जगहों को मुक्त करा लिया है। यह सुनकर मेरी खुशी का ठिकाना न रहा। मैं

याङत्सी नदी की तरफ बढ़ता गया और अन्त में एक दिन तीसरे पहर वहाँ पहुँच गया।

कितनी विशाल थी उमड़ती-घुमड़ती धाराओं वाली यह नदी! इससे पहले भी मैंने कई नदियाँ देखी थीं और उनमें तैर भी चुका था। लेकिन इतनी बड़ी नदी मैंने पहले कभी नहीं देखी थी। किनारे खड़े होकर मैंने देखा, दूर तक पानी ही पानी था और कुछ छोटी-छोटी नौकाएँ उमड़ती लहरों के बीच हिचकोले ले रही थीं। दूर, नदी का दूसरा किनारा कुहरे से ढका हुआ था।

मैं नदी के किनारे-किनारे चलता रहा, यह सोचकर कि कहीं कोई नौका-घाट जरूर आएगा। लोगों ने बताया, याङच्याओ नौका-घाट कोई तीन ली दूर है। जब मैं वहाँ पहुँचा तो मैंने देखा, लोगों की भीड़ जमा है। नौका-घाट के फाटक पर दो क्वोमिन्ताङ सैनिक नदी पार करने के लिए आने वाले लोगों से चिल्ला-चिल्ला कर रहे थे, "अपना पास दिखाओ! पास दिखाओ!"

"मैं "पास" कहाँ से लाता?यहाँ से नदी पार करने की कोई सूरत नजर नहीं आती थी। इसलिए झंझट से बचने के लिए मैं दूसरी तरफ चल दिया। नदी-तट पर चलते हुए मैंने याङत्सी पर एक नजर डाली और मन ही मन सोचने लगा : याङत्सी नदी, तेरा पाट चाहे कितना ही चौड़ा क्यों न हो, तेरा पानी चाहे कितना ही गहरा क्यों न हो और तेरी लहरें चाहे कितनी ही ऊँची क्यों न हों, मैं किसी न किसी तरह उस पार अवश्य पहुँच जाऊँगा!

लेकिन याङत्सी को तैर कर पार करने से लोगों का ध्यान आकर्षित हो सकता था, उन्हें शक पैदा हो सकता था। इसलिए मैं तट पर बैठा रात होने का इंतजार करने लगा। सूरज डूबने ही वाला था। नदी के पानी में उसकी किरणों ने गुलाबी रंग घोल दिया। लहरों की तरह मेरे मन में एक के बाद एक विचार आते गए। काश, मैं नदी पार करके उत्तर की तरफ जा पाता! वहाँ मुक्ति सेना मुझे अवश्य मिल जाएगी। मैं उसमें शामिल हो जाऊँगा। हम लोग लड़ते हुए दक्षिण की तरफ बढ़ जाएँगे, याङत्सी नदी को फिर पार करेंगे, दक्षिण चीन को मुक्त कराएँगे, अपने गाँव को मुक्त कराएँगे।...

मैंने अपना बचा-खुचा खाना निकाल लिया और उसे खाने लगा। अचानक नदी-तट पर कुछ लोगों के तेज दौड़ने और चिल्लाने की आवाजें मेरे कानों में पड़ी। ये लोग किसी आदमी का पीछा कर रहे थे। मैं खड़ा होकर देखने लगा। एक नौजवान मेरी तरफ दौड़ा आ रहा था। चार क्वोमिन्ताङ सैनिक उसका पीछा कर रहे थे। सैनिक चिल्ला रहे थे, "रोको, रोको इसे!" जब वह नौजवान मेरे करीब पहुँचा तो उसने बड़ी याचनाभरी दृष्टि से मेरी ओर देखा। मैं एक तरफ हट गया और उसे आगे जाने दिया। लेकिन सैनिक उसका पीछा करते रहे! जब वे उसके बिल्कुल करीब जा पहुँचे, तो मैंने छप्प की आवाज सुनी। नौजवान नदी में कूद पड़ा। कुछ क्षणों के लिए वह उमड़ती लहरों के साथ-साथ ऊपर नीचे आता-जाता दिखाई दिया। फिर सैनिकों ने दो-चार फायर किए और वह नौजवान पूरी तरह अदृश्य हो गया।

इस घटना से मेरे मन में गुस्से की आग भड़क उठी। क्या ये लोग मेरा भी इसी तरह पीछा करेंगे?मैं वहाँ से जाने ही वाला था कि पीछे से किसी को यह कहते सुना, "पकड़ लो इसे!" यह सोचकर कि यह मेरे लिए ही कहा गया है, मैं सिर पर पाँव रख कर भागा। लेकिन कोई एक दर्जन या इससे भी ज्यादा क्वोमिन्ताङ सैनिक दूसरी तरफ से आ रहे थे। मैं उनसे जा टकराया। उन्होंने मुझे पकड़ लिया और याङच्याओ नौका-घाट पर ले

गए।

नदी पार कराने वाली एक नाव में छः नौजवानों को एक साथ रस्सी से बाँध दिया गया था। मुझे भी उसी नाव में ले जाया गया। मेरे हाथ पीछे की तरफ बाँध दिए गए। मैं उन नौजवानों में शामिल होने वाला सातवां आदमी था। दो सैनिक हम पर पहरा देने के लिए तैयार कर दिए गए और बाकी खाना खाने चले गये। जिन दो सैनिकों को वहाँ छोड़ दिया गया था वे इस बात से खुश नहीं थे और बड़े उदास होकर नाव के एक कोने में खड़े थे।

मुझे उन छः नौजवानों से मालूम हुआ कि उन सब को क्वोमिन्ताङ सैनिकों ने जबरन भरती कर लिया है। उनका एक साथी और था जो भाग गया था। यह वहीं था जो नदी में कूद पड़ा था और जिसे गोली मार दी गई थी।

मैं याओछ गाँव से इसलिए भागा कि बलि का बकरा बनाने के लिए मुझे जबरन भरती न किया जाय। और आज उसी जबरन भरती के लिए मुझे बन्दी बना लिया गया था। याङ्त्सी नदी, पूरब की तरफ बहता हुआ तेरा पानी कितना दर्द, कितनी नफरत लिए हुए है! क्या मैं इतनी आसानी से उनकी पकड़ में आ जाऊँगा?नहीं, हरगिज नहीं। मैंने बाकी छः बन्दियों की तरफ देखा। उनके चेहरे से नफरत और गुस्सा साफ झलक रहा था। और तब मैंने उन दोनों सैनिकों की तरफ देखा जिन्हें हमारे ऊपर पहरा देने के लिए तैनात किया गया था। उनमें से एक तो नाव के अगवाड़े के पास खड़ा था और दूसरा उससे कुछ ही दूर बैठा था। दोनों बड़े उदास मालूम हो रहे थे। रात गहरी होती जा रही थी और घाट पर बहुत कम लोग रह गए थे। मैं भाग निकलने का उपाय खोजने लगा। नाव के अगवाड़े पर खड़े सन्तरी को सम्बोधित करते हुए मैंने कहा, "सुनिए, क्या आप हमें उस पार ले जाएँगे?"

"जरूर।" सैनिक ने नपा-तुला उत्तर दिया।

"कब?"

"मुझे नहीं मालूम।"

"जरा मुझे पानी तो पिला दीजिए," मैं बोला।

"क्या मुसीबत है!" कहते हुए सैनिक ने एक कटोरा उठाया, उसे पानी से आधा भरा और मेरी ओर बढ़ाते हुए बोला, "लो पियो!"

दो-चार घूंट पानी पीने के बाद मैंने जानबूझकर कटोरे में अपना सिर मार कर उसे उसके हाथ से नीचे गिरा दिया। कटोर के टुकड़े-टुकड़े हो गए। सैनिक ने बड़बड़ाकर कुछ गालियाँ बकीं और फिर नाव के अगवाड़े अपनी जगह लौट गया।

मैंने दूसरे सन्तरी की तरफ देखा। वह ऊँघता हुआ दिखाई दिया। मैंने अपने बगल में बंधे नौजवान को कुहनी मारी और उसे आँख से इशारा किया। वह समझ गया। हम दोनों एक साथ नीचे झुके और दोनों ने कटोरे के टूटे टुकड़े उठा लिए। मैं फुसफसाया, "रस्सी काट दो!" उसने मेरी रस्सी काटनी शुरू कर दी। और जब मेरे हाथ मुक्त हो गए तो मैंने उसकी रस्सी काट डाली। बाकी पाँचों ने जब देखा कि हम क्या कर रहे हैं, तो वे भी

हमारे करीब आ गए। अँधेरा होने और हम लोगों के चुपचाप रहने की वजह से सैनिकों का ध्यान हमारी तरफ नहीं गया। अपने दोनों हाथ पीठ की तरफ रखते हुए, मैंने अपने पास वाले नौजवान को इशारे से बताया कि वह ऊँघने वाले सन्तरी पर पिल पड़े और मैं दूसरे सन्तरी से निपट लूँगा। हम दोनों उनके करीब जा पहुँचे। ऊँघने वाले सन्तरी को तो हमने शीघ्र ही नदी में धकेल दिया और दूसरे सन्तरी की बन्दूक छीन ली। जब वह भागने लगा, तो मैंने हुक्म दिया, "हिलो मत! अगर भागे तो गोली मार दूँगा!" जब उसने देखा कि उसकी अपनी ही बन्दूक उस पर तनी हुई है, तो वह हुक्म मानकर रुक गया।

बाकी पाँचों नौजवान आजाद होते ही दौड़कर नदी-तट पर जा पहुँचे और रफूचक्कर हो गए। "अब तुम जा सकते हो," मैंने सैनिक से कहा, जो अब भी बुत की तरह खड़ा था। वह सिर पर पाँव रखकर तट की तरफ भागा।

मैंने अपनी छोटी-सी पोटली उठा ली और उसे कसकर कमर से बाँध लिया। तैर कर नदी पार करते वक्त बन्दूक साथ ले जाना मुश्किल था। साथ ही उत्तर की तरफ जाते समय बन्दूक हाथ में ले जाने से लोगों का ध्यान आकर्षित हो सकता था और शक पैदा हो सकता था। इसलिए मैंने न चाहते हुए भी बन्दूक नदी में फेंक दी। अब मैं तैर कर याङत्सी नदी पार करने के लिए तैयार हो गया। मैं नदी की उमड़ती लहरों में कूद पड़ा और शीघ्र ही उसकी चढ़ती-उतरती तरंगों के बीच तैरने लगा। मेरे मन में सिर्फ एक ही विचार था : मुझे उस पार जाना है!

जब मैं काफी दूर निकल गया तो नदी-तट से कुछ आवाजें मेरे कानों में पड़ीं और साथ ही किसी ने दो फायर भी किए। मैं हँस पड़ा। अब मैं उनकी गोली की मार से बाहर हो चुका था।

मैं लगातार तैरता गया, तैरता गया। लेकिन किनारा नहीं नजर नहीं आ रहा था। वसन्त का मौसम था। पानी काफी ठण्डा था। शुरू में नदी पार करने के जोश में मुझे ठण्ड महसूस नहीं हुई लेकिन अब मेरे हाथ-पाँव ठण्डे पड़ रहे थे। अचानक हवा का झोंका आया और लहरें मुझे नीचे की तरफ बहा ले गईं तैरना अब मुश्किल होता जा रहा था। मैं थक कर चूर हो गया था। हवा के झोंके, लहरों के थपेड़े, भूख और थकान सभी मुझ पर चारों तरफ से प्रहार करने लगे। चारों तरफ अँधेरा ही अँधेरा था। किनारे से कितनी दूर रह गया हूँ, इसकी मुझे कोई जानकारी नहीं थी। फिर भी मेरे मन में भय और निराशा का नाम तक न था। मुझे पक्का यकीन था कि उस पार अवश्य पहुँच जाऊँगा। और जहाँ एक बार मैं नदी के उत्तर में पहुँच गया, तो मुक्ति सेना को अवश्य खोज लूँगा और गरीबों पर किए जाने वाले अत्याचारों की उसकी सहायता से बदला लूँगा। उस रात आसमान में ध्रुवतारा बड़ा चमकदार मालूम हो रहा था। वह यात्रा में मेरा मार्गदर्शन करता रहेगा। एक बार फिर मेरे अन्दर नई शक्ति और नई आशा जाग उठी।

तैरना अब मुझे भारी मालूम होने लगा था। कभी-कभी शरीर को ढीला छोड़कर मैं लहरों के साथ बहने लगता और थोड़ी देर बाद फिर हाथ-पाँव मारने लगता। मालूम नहीं पानी में तैरते-तैरते कितना समय बीत गया। अन्त में कुत्तों के भोंकने की आवाज मेरे कानों में पड़ी। तब मुझे मालूम हो गया कि नदी के उत्तरी किनारे पर पहुँच गया हूँ!

पानी से बाहर निकल कर मैं किनारे पर चला गया। मैं थक कर चूर हो गया था। बालू पर चित लेट गया।

लेकिन गीले कपड़े पहने ठण्ड से ठिठुरते हुए वहाँ लेटना मेरे लिए ठीक नहीं था। मुझे बीमार नहीं पड़ना था, वरना मुक्ति सेना को खोजने आगे कैसे जा पाता! अरे, यह क्या है?आग है क्या?हाँ, आग ही तो है। पास ही शायद कहीं अलाव जल रहा है। मैं किसी तरह कोशिश करके खड़ा हो गया और अलाव की तरफ चल पड़ा।

दो बुजुर्ग मछुवे नदी-तट पर खाना पका रहे थे। मुझे देखकर वे अचम्भे में पड़ गए। "मैं नदी में गिर पड़ा था," सफाई पेश करते हुए मैंने कहा, "जरा आग के सामने मुझे अपने कपड़े सुखा लेने दीजिए। बड़ी मेहरबानी होगी।" उन दोनों बुजुर्ग मछुवों ने मुझे सिर से पाँव तक देखा और इजाजत दे दी। मैं आग के पास बैठकर अपने कपड़े सुखाने लगा।

"तुम यहाँ के बाशिन्दे नहीं जान पड़ते, है न?" शायद मेरी बोली से अन्दाजा लगाकर एक मछुवे ने पूछा।

"नहीं," मैंने उत्तर दिया, "मैं नदी के दक्षिण की तरफ का रहने वाला हूँ।"

"क्या तुमने तैर कर नदी पार की है?" दूसरा मछुवा बोला। "ऐसा जोखिम तुमने क्यों उठाया?"

ये दोनों बुजुर्ग गरीबों की ही तरह बात कर रहे थे, इसलिए मैंने साफ-साफ बता दिया, "मैं जरबन भरती से पिण्ड छुड़ाकर भाग आया हूँ।"

"तुमने ठीक किया। ऐसी फौज में भरती होने से तो नदी में डूब मरना कहीं ज्यादा अच्छा है।" बुजुर्ग मछुवे ने मुझसे हमदर्दी जताते हुए कहा।

हम लोग बातचीत करते रहे। और जब मुझे मालूम हो गया कि इन लोगों के दिल में क्वोमिन्ताङ सेना के लिए नफरत के सिवाय और कुछ नहीं है, तो मैंने साहस के साथ पूछ लिया, "मुक्ति सेना मुझे कहाँ मिल सकेगी?"

"उत्तर की तरफ चलते जाओ। मिल जाएगी।" मालूम होता था दोनों बुजुर्ग मुझे अच्छी तरह समझ गए थे। "जहाँ युद्ध चल रहा है, वहाँ मुक्ति सेना तुम्हें अवश्य मिल जाएगी।" उन्होंने कहा।

उनकी बात ठीक थी। अगले दिन तड़के ही मैंने उन दोनों बुजुर्ग मछुवों की बात गाँठ बाँधते हुए उनसे विदा ली और उस इलाके की तरफ बढ़ गया "जहाँ युद्ध चल रहा है"।

रास्ते में पूछता-पूछता मैं अन्त में ताछिङ पहाड़ की तलहटी पर पहुँच गया। वहाँ गोलाबारी की आवाज साफ-साफ सुनाई दे रही थी। इतने में टोकरी उठाए एक बुजुर्ग स्त्री सामने की तरफ से आती दिखाई दी। "आगे मत जाना। वहाँ लड़ाई चल रही है!" यह बताकर उसने मेरे ऊपर बड़ी मेहरबानी की, क्योंकि यही वह जगह थी जिसकी मुझे तलाश थी। मैंने उसका शुक्रिया अदा किया। क्वोमिन्ताङ सैनिक तितर-बितर होकर पीछे हट रहे थे और भटक कर वहाँ पहुँच रहे थे। मैं चक्कर काटता हुआ ऊपर की तरफ चला गया और एक गुफा में जा छिपा।

जल्दी ही मैंने सैनिकों व गाड़ियों का शोरगुल सुना। गुफा छोड़कर मैं एक पहाड़ पर चढ़ गया। वहाँ से नीचे मैदान में और सड़कों पर मुझे क्वोमिन्ताङ सैनिकों के कई झुण्ड दिखाई दिए। ये लोग पीछे हट कर वहाँ पहुँचे थे और खाइयाँ खोद रहे थे। मैंने गिना, कोई तीस से ज्यादा सैनिक पहाड़ पर चढ़ रहे थे। गुफा में वापस लौटना अब मेरे लिए नामुमकिन था। इसलिए मैं पहाड़ पर और ऊपर की तरफ चढ़ता गया। और चोटी पर

जाकर एक गड्ढे में छिप गया। मुझसे कोई सौ मीटर दूर उन लोगों ने तीन मशीनगनें लगा दीं, एक तो ठीक मेरे नीचे ही थी। मैंने निश्चय कर लिया—अगर कोई क्वोमिन्ताङ सैनिक ऊपर आया और उसे मेरा पता चल गया, तो मै उससे भिड़ जाऊँगा। अगर कुछ और न बन पड़ा तो उसे लेकर कगार से नीचे लुढ़क जाऊँगा!

दूर कहीं से भीषण गोलाबारी की आवाज आ रही थी। मेरी दिली तमन्ना थी कि मैं मुक्ति सेना के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर दुश्मन से लड़ूँ! जल्दी ही गोली बारी की आवाज और नजदीक आ गईं गोलियाँ मेरे सिर के ऊपर से निकलने लगीं। कुछ गोलियाँ चट्टानों से टकरा गईं। साँझ होती जा रही थी। अन्धेरे में तोप-बन्दूकों का आग उगलना साफ नजर आ रहा था। लगता था, हमारी अपनी सेना अब ज्यादा दूर नहीं!

"धावा बोल दो! धावा बोल दो!" आवाज उत्तर की तरफ से आईं पहाड़ की तलहटी में दुश्मन का पूरी तरह सफाया कर दिया गया। ऊपर पहाड़ पर लगी तीन मशीनगनें अन्धाधुन्ध गोलियाँ बरसाने लगीं। मैं गड्ढे से बाहर निकल आया और कुछ बड़े-बड़े पत्थर उठाकर ठीक अपने नीचे लगी मशीनगन पर फेंके। मैंने कुछ और पत्थर उठाकर बाकी मशीनगनों पर भी फेंके। फायरिंग बन्द हो गई और दुश्मन के जो सैनिक उन मशीनगनों पर तैनात थे, बिना इस बात का पता लगाए कि हुआ क्या है, भाग खड़े हुए।

मशीनगनें शान्त हो चुकी थीं। मैंने देखा कि मुक्ति सेना के बहुत से सैनिक अपनी संगीनें ताने दुश्मन की पाँतों में धँस गए हैं। मैं दुश्मन द्वारा छोड़ी गई एक मशीनगन की तरफ लपका। इसे लेकर मैं भी दौड़ कर दुश्मन की पाँतों में धँस जाना चाहता था। लेकिन मशीनगन कैसे इस्तेमाल करते हैं, यह तो मैं जानता ही न था। इतने ही में मुक्ति सेना के सैनिक काफी तादाद में पहाड़ पर चढ़ आए। उनमें से एक ने मुझसे पूछा, "क्या तुमने ही दुश्मन की मशीनगनों को नाकारा कर दिया था?"

"जी हाँ," मैंने जवाब दिया। "और यह रही उनमें से एक मशीनगन," सैनिक की तरफ मशीनगन बढ़ाते हुए मैं बोला।

उसने मशीनगन को अपने हाथ में ले लिया और बड़ी आत्मीयता के साथ मुझसे हाथ मिलाया। "तुम कहाँ से आए हो?" सैनिक ने पूछा।

"च्याङशी से। मुक्ति सेना की खोज में।"

दो और मुक्ति सैनिक आगे आ गए। जो सैनिक मुझसे बात कर रहा था उसने इन दोनों में से उम्र में बड़े सैनिक को बताया कि मैंने ही दुश्मन की मशीनगनों को नाकारा किया है और यह कि मैं मुक्ति सेना की खोज में च्याङशी प्रान्त से आया हूँ बाद में मुझे पता चला कि वे राजनीतिक कमिसार थे।

"च्याङशी से?" कमिसार मेरे करीब आ गए और उन्होंने बड़े गौर से मेरी तरफ देखा। सिर्फ तभी मेरा ध्यान उस लाल सितारे की तरफ गया जिसे वे खुद और मुक्ति सेना के अन्य सैनिक अपनी टोपियों पर लगाए हुए थे! तो यही वह सेना है जिससे मिलने के लिए मैं हर दिन, हर घड़ी तड़पता रहा हूँ! मैंने राजनीतिक कमिसार का हाथ अपने हाथों में ले लिया और भावविभोर होकर बोला, "मैं च्याङशी से इतनी दूर चलकर आप लोगों की ही तलाश में आया हूँ। मेरे पिताजी लाल सेना में भरती होकर 1934 में लम्बे अभियान में शामिल हो गए थे।...
"

"तुम हमारे अपने ही भाई हो!" राजनीतिक कमिसार ने बड़े स्नेह से कहा। "तुम्हें यहाँ पहुँचने में बड़ा लम्बा रास्ता तय करना पड़ा होगा और बड़ी मुसीबतें झेलनी पड़ी होंगी।"

"जी हाँ, मैं पैदल चलता हुआ और तैर कर नदी पार करता हुआ यहाँ पहुँचा हूँ।..." मैं वास्तव में उन्हें बता नहीं सका कि यहाँ पहुँचने में मुझे कितना वक्त लगा और कितनी मुश्किलों का सामना करना पड़ा।

राजनीतिक कमिसार ने मशीनगन पर नजर डाली। "तुम सचमुच बड़े बहादुर हो," मेरी पीठ थपथपाते हुए वे बोले। "तुम्हारा नाम क्या है?"

"फान चा-शान।"

"अच्छा, कामरेड फान चन-शान।" यह पहला मौका था जबकि मुझे "कामरेड" कहा गया था। यह शब्द सुनते ही मेरा दिल खुशी से फूला न समाया! और तब पास खड़े साथी की तरफ मुड़कर राजनीतिक कमिसार ने अपनी बात जारी रखी, "वाङ भाई, कामरेड फान चन-शान को आराम करने के लिए बटालियन-हेडक्वार्टर में ले जाओ।"

"अरे नहीं," मैंने कहा, "मैं आराम नहीं करना चाहता। मुझे तो एक बन्दूक दे दीजिए, ताकि में बाकी साथियों के साथ मिलकर दुश्मन का सफाया कर सकूँ।"

"लेकिन तुम्हें कुछ समय आराम करना चाहिए," राजनीतिक कमिसार ने सलाह दी। "बाद में तुम्हें बहुत-सी लड़ाइयों में हिस्सा लेने का मौका मिलेगा। अभी चल रही यह लड़ाई जब खत्म हो जाएगी तो हम विस्तार से बातें करेंगे।" यह कहते हुए वे तेजी से दूसरी तरफ चले गए।

"चलो, बटालियन-हेडक्वार्टर चलें," वाङ ने बड़ी आत्मीयता के साथ कहा।

वह लड़ाई अगले दिन सुबह खत्म हो गई हमारे साथी, दुश्मन द्वारा छोड़े गए हथियारों व साज-सामान को जमा करने में लग गए। मैं भी उनके साथ घूमता रहा और उनकी भरसक सहायता करता रहा। मैं बड़े जोश में था और बड़ा प्रसन्न था कि उनके साथ मिलकर विजय की खुशी मना रहा हूँ!

उस दिन शाम के वक्त राजनीतिक कमिसार बटालियन-हेडक्वार्टर में आए और मुझसे बोले, "कामरेड फान चन-शान, हमारे डिवीजन कमाण्डर तुमसे मिलना चाहते हैं।"

"डिवीजर कमाण्डर मुझसे मिलना चाहते हैं?" मैंने जल्दी-जल्दी अपनी माँ का कोट और पिताजी का दिया हुआ लाल सितारा अपनी पोटली से निकाल लिया।

"चलो, मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगा।" गाँव से गुजरते समय राजनीतिक कमिसार ने मुझ बताया कि उन्होंने मेरे बारे में रेजिमेन्ट में बता दिया है और रेजिमेन्ट ने डिवीजन में रिपोर्ट भेज दी है। और अब डिवीजन कमाण्डर मुझसे मिलना चाहते हैं। शीघ्र ही राजनीतिक कमिसार मुझे एक बड़े से अहाते में ले गए, जहाँ सभी कमरों में मुक्ति सेना के सैनिक दिखाई दिए। हर कमरे में टेलीफोन लगा था और सभी कामरेड बड़े व्यस्त जान पड़ते थे। हम लोग उत्तर की तरफ के एक कमरे में गए। राजनीतिक कमिसार ने कमरे में मौजूद नेतृत्वकारी कामरेड को, जो पेंसिल से नक्शे में निशान लगा रहे थे, सलामी दी और बोले, "डिवीजन कमाण्डर, कामरेड फान चन-शान आ गया है।" तब मेरी ओर मुड़ कर उन्होंने कहा, "आप हैं हमारे डिवीजन कमाण्डर।"

मैंने झुककर अभिवादन किया।

"बैठ जाओ," डिवीजन कमाण्डर ने कहा। और अपनी पेंसिल मेज पर रख कर उन्होंने एक गिलास में मुझे पिलाने के लिए पानी उंडेला।

राजनीतिक कमिसार ने डिवीजन कमाण्डर को सलामी दी और बाहर चले गए।

"तुम्हारा घर कहाँ है कामरेड फान?" डिवीजन कमाण्डर ने बड़े स्नेह के साथ मुझसे पूछा।

"च्याङशी के ल्यूशी गाँव में।"

"अच्छा," डिवीजन कमाण्डर ने सिर हिलाकर कहा। "मैंने सुना है तुम अपने पिताजी की तलाश में यहाँ आए हो?"

"जी हाँ, मेरे पिताजी 1934 में लम्बे अभियान में शामिल हो गए थे। मैं पिछले अनेक वर्षों से उनकी तलाश में हूँ। लेकिन अभी तक उनसे मिल नहीं पाया। जब मैंने सुना कि यहाँ लड़ाई चल रही है, तो मैं इस तरफ आ गया।"

"और यहाँ पहुँचते ही तुम लड़ाई में कूद पड़े?तुम सचमुच बड़े बहादुर हो," डिवीजन कमाण्डर ने मेरी तारीफ करते हुए कहा। "तुम्हारे परिवार में और कौन-कौन हैं?"

"मेरे परिवार में..." मेरा गला रुँध गया। "मेरी माँ मौजूद थीं जब मेरे पिताजी घर से गए। बाद में माँ शहीद हो गईं" मैंने माँ का कोट निकाल लिया। "यह है वह कोट जिसे माँ मुझे दे गई थीं और यह है वह लाल सितारा जिसे पिताजी ने मुझे सम्भाल कर रखने के लिए दिया था," मैं बोला।

डिवीजन कमाण्डर ने मेरी दोनों सौगातों को ले लिया और उनकी कुछ इस तरह देखते रहे मानो ये खुद उनकी ही सौगात हों। उन्होंने कोट को मेज पर रख दिया ओर लाल सितारे को अपने हाथ में लेकर बोले, "हाँ, यही लाल सितारा हम लोग उन दिनों लगाया करते थे। जनता ने इसे सम्भाल कर रखा है और अपना संघर्ष जारी रखा है।" वे दक्षिण की तरफ वाली खिड़की के पास चले गए और उसे खोलकर बाहर देखने लगे। जब वे पीछे मुड़े तो उनकी आँखों से आत्मविश्वास झलक रहा था।

"डिवीजन कमाण्डर, आप...?"

"मेरा कुलनाम चुङ है। मैं हुनान का रहने वाला हूँ। मैं भी 1934 में लाल सेना में था और लम्बे अभियान में शामिल हुआ था।" लाल सितारे को कोट के ऊपर रखते हुए उन्होंने अपनी बात जारी रखी, "तुम से मिलकर मुझे बेहद खुशी हुई है। मुझे लम्बा अभियान करने वाली लाल सेना पर गर्व है, और उसमें शाामिल होने वाले लोगों के कुटुम्बी-जनों पर गर्व है। अध्यक्ष माओ ने हमें सिखाया है : जहाँ कहीं भी संघर्ष होता है, वहाँ कुर्बानी देनी पड़ती है। हमारी लाल सेना में लाखों सैनिक थे। उन सबने अपने कुटुम्बी-जनों को अपने-अपने गाँव में ही छोड़ दिया था। उनके परिवार के सदस्यों ने क्रान्ति के लिए कुर्बानियाँ की हैं। लेकिन उनकी कुर्बानियाँ व्यर्थ नहीं गईं। क्या तुम नहीं देखते कि आज आधा मुल्क मुक्त हो चुका है?" डिवीजन कमाण्डर की आवाज में गर्व की छाप थी। उन्होंने अपनी बात जारी रखी, "और हम लोग पूरे देश को मुक्त कराने के लिए कटिबद्ध हैं! अब जरा सुनो, अध्यक्ष माओ ने हमें क्या शिक्ष दी है : चीनी जनता मुसीबतें झेल रही है; उसे बचाना हमार फर्ज है और

हमें प्रयत्नपूर्वक संघर्ष करना चाहिए।"

मैं उनकी बात से बड़ा प्रभावित हुआ और इस बात को महसूस करने लगा कि अब भी बहुत से लोग उत्पीड़न सह रहे हैं और मेरी अब तक की जिन्दगी की ही तरह वे भी बड़ी दर्दनाक जिन्दगी बसर कर रहे हैं। ".. .उसे बचाना हमारा फर्ज है, और हमें प्रयत्नपूर्वक संघर्ष करना चाहिए।" अध्यक्ष माओ की शिक्षा मेरे दिमाग में कितने स्पष्ट रूप से अंकित हो गई थी। "कमाण्डर साहब," मैंने अनुरोध किया, "मुझे एक बन्दूक दे दीजिए। मैं श्वेत रक्षकों के खिलाफ लड़ना चाहता हूँ!"

"शाबाश! तुम्हें एक योद्धा बन जाना चाहिए और बन्दूक से दुश्मन के दाँत खट्टे कर देने चाहिए।" डिवीजन कमाण्डर ने टेलीफोन का चोंगा उठाया और बोले, "जरा पहली बटालियन से मिलाइए। हलो! क्या राजनीतिक कमिसार ली बोल रहे हैं?आप यहाँ आ जाइए और कामरेड फान चन-शान को अपनी बटालियन में ले जाइए। इन्हें अपनी किसी कम्पनी में भरती कर लीजिए।" चोंगा नीचे रख कर वे मेरी तरफ मुड़े और बोले, "कामरेड फान चन-शान, तुम लाल सेना की सन्तान हो; तुम्हें एक अच्छा योद्धा बनने की भरपूर कोशिश करनी चाहिए। हम तुम्हारे पिताजी और कामरेड याओ हाए-छ्वान का पता लगाने की कोशिश करेंगे।"

मेरी खुशी का ठिकाना न रहा। जिस दिन का मुझे इतने लम्बे अरसे से इन्तजार था, आखिर वह दिन आज आ ही गया। मैंने फौजी वर्दी पहन ली, बन्दूक कन्धे पर लटका ली और चमक-दार लाल सितारे वाली टोपी पहन ली। यह मेरे लिए कितने फखर की बात थी। आज से मैं एक सशस्त्र क्रान्तिकारी योद्धा बन गया हूँ और अपने साथियों के साथ मिलकर फौजी कार्यवाहियों में हिस्सा लेने जा रहा हूँ।

युद्ध के वर्ष तेजी से बीतते गए... जीवन बड़ा ही व्यस्त, बड़ा ही घटनापूर्ण था। मुक्ति सेना में युद्ध के दो वर्ष पलक मारते ही बीत गए। हम लोग लड़ते हुए याङ्त्सी नदी पार कर चुके थे। बिजली की सी फुर्ती के साथ हमारी सेना ने क्वोमिन्ताङ की तमाम बची-खुची सेना को पीछे खदेड़ दिया।

मेरा पालन-पोषण युद्ध भूमि में हुआ; मुझे शिक्षा-दीक्षा फौजी कमाण्डरों व कामरेडों से मिली। लाल झण्डे के नीचे खड़े होकर मैंने शपथ ली और गौरवशाली चीनी कम्युनिस्ट पार्टी का सदस्य बन गया। और जब हमारी यूनिट च्याङशी की तरफ बढ़ी, तो मुझे एक स्काउट-दस्ते का नायक नियुक्त कर दिया गया।

जब मेरे गाँव के आसपास की काउन्टियों को मुक्त करा लिया गया, तो हमारी डिवीजन ने एक कस्बे के नजदीक पड़ाव डाल दिया। वहाँ डिवीजन कमाण्डर चुङ ने मुझे बुला भेजा।

"कामरेड फान चन-शान," उन्होंने कहा, "हम लोग लड़ाई में इतने व्यस्त रहे कि तुम्हारे पिताजी की खोज-खबर अभी तक नहीं ले पाए। अब हम लड़ते-लड़ते तुम्हारे जन्म-स्थान तक पहुँच गए हैं। तुम्हारा गाँव मुक्त हो चुका है। जाओ, अपने गाँव की हालत देख आओ।"

"लेकिन मैं तो अपनी यूनिट के साथ दक्षिण की तरफ जाना चाहता हूँ, और समूचे चीन को मुक्त कराना चाहता हूँ।"

"घर जाकर एक बार देख तो आओ," डिवीजन कमाण्डर ने जोर देकर कहा, "हम लोग विश्राम और पुनर्गठन के लिए कुछ समय तक यहीं रहेंगे। जाओ और पता लगाओ कि गाँव में तुम्हारे पिताजी की कोई खबर

मिली या नहीं।''

''मैं इस वक्त घर जाकर एक भी फौजी कार्यवाही को छोड़ना नहीं चाहता।''

''तुम्हारी एक खास परिस्थिति है,'' डिवीजन कमाण्डर ने समझाया।

''राजनीतिक कमिसार, मैं और तुम्हारी कम्पनी के दूसरे कार्यकर्ता सबके सब तुम्हारे जाने पर सहमत हैं।''

यह सुनकर मेरा दिल भर आया। मैंने डिवीजन कमाण्डर को सलामी दी और कहा, ''मैं पार्टी द्वारा की गई देखरेख के लिए आभार प्रकट करता हूँ। सिर्फ एक नजर डालने के लिए घर जाऊँगा, और तुरत वापस लौट आऊँगा।''

दस

पिताजी 1934 में लम्बे अभियान में शामिल हुए थे। तब से अब तक पन्द्रह वर्ष बीत चुके हैं। उन दिनों मैं सिर्फ सात वर्ष का बालक था। आज मैं बाईस वर्ष का हो चुका हूँ और मुक्ति सेना का एक योद्धा बन गया हूँ। इन पन्द्रह वर्षों में, मैं कई बार दुश्मन के चंगुल से निकल भागा। जो मुश्किलें मैंने बर्दाश्त कीं, उन्होंने मेरे अन्दर बड़े से बड़े तूफान और कठिन से कठिन परिस्थिति का मुकाबला करने की शक्ति पैदा कर दी।

पार्टी और अध्यक्ष माओ ने मुझे नेतृत्व और जुझारू शक्ति प्रदान की; क्रान्तिकारी जनता ने मेरा पालन-पोषण किया। पार्टी के आत्मीयतापूर्ण मार्गदर्शन के बिना, सुङ चाचा और याओ चाचा की स्नेहपूर्ण देखभाल के बिना, यह दिन मेरी जिन्दगी में कभी नही आ सकता था जिसकी बरसों से मुझे तमन्ना थी। आज मैं छुट्टी पर घर लौट रहा था। मगर पहले याओछ गाँव में रुककर याओ चाचा और उनके परिवार के लोगों से मिलना चाहता था।

सूरज अस्ताचल के निकट पहुँच चुका था। साँझ के गुलाबी बादलों से ढकी पर्वतश्रृंखलाएँ एक आनोखी छटा बिखेर रही थीं। याओछ गाँव उस समय के मुकाबले जब मैंने उसे छोड़ा था, कहीं ज्यादा खूबसूरत मालूम हो रहा था।... अब मैं मुक्ति सेना की वर्दी पहने हुए था जिससे गाँववासियों का ध्यान मेरी ओर आकर्षित हो रहा था। और जब उन्होंने पहचान लिया कि मैं कौन हूँ तो वे सब मेरा अभिवादन करने आ पहुँचे। बच्चे यह खबर देने के लिए याओ चाचा के घर की ओर दौड़ पड़े। ''चन-शान वापस लौट आया है। वह जन-मुक्ति सेना में भरती हो गया है!'' वे चिल्लाते जा रहे थे।

मैं याओ चाचा और चाची से मिला। वे दोनों मुझसे मिलने घर से बाहर निकल आए थे। जब मैंने उन्हें सलामी दी, तो याओ चाचा ने ऐसे देखा मानो उन्हें अपनी आँखों पर यकीन ही न हो रहा हो। लेकिन दूसरे ही क्षण वे खुशी से चिल्ला पड़े, ''तो यह तुम हो, चन-शान! अब तो तुम जन-मुक्ति सेना के योद्धा बन गए हो।'' उन्होंने मेरे हाथ मजबूती से अपने हाथ में थाम लिए। याओ चाची भी खुशी से फूली न समाई।

''तुमने चिट्ठी क्यों नहीं भेजी?'' याओ चाचा ने पूछा।

"हम लोगों को लड़ाई से फुरसत ही कहाँ मिलती थी!" मैंने जवाब दिया। "इसके अलावा चिट्ठियाँ शायद आप तक पहुँच भी न पातीं।"

"अपने पिताजी से मिले?"

"नहीं," मैंने सिर हिलाते हुए कहा। "क्या हाए-छ्वान भइया ने चिट्ठी भेजी है?"

"हाँ," याओ चाची बीच में बोल पड़ी, "और श्याओ-हुङ उससे मिलने भी गई है।"

यह खबर सुनकर मैं बहुत खुश हुआ।

"चलो भीतर चलें। वहीं बातें करेंगे," चाचा ने मुझे खींचते हुए कहा। मैंने अपने चारों ओर खड़े गाँववासियों से इजाजत ली और याओ चाचा के साथ घर के भीतर चला गया। चाची खाना पकाने में लग गईं।

हम लोग जब खाना खा चुके, तो रात में देर तक बातें करते रहे। मैंने उन्हें बताया कि कैसे गोलाबारी की आवाज सुनकर मैंने मुक्ति सेना को खोज लिया, कैसे मैं युद्ध में शरीक हो गया और कैसे सैनिक कमाण्डरों ने मेरे पिताजी और हाए-छ्यान की खोज-खबर लेने की कोशिश की।

"अब तुम वापस आए हो तो कुछ दिन यहीं रहो।" चाची बोलीं।

"ऐसा नहीं हो सकता। लड़ाई अभी जारी है। क्वोमिन्ताङ प्रतिक्रियावादियों का अभी पूरी तरह सफाया नहीं हुआ है। कल मैं ल्यूशी गाँव जाऊँगा और फिर अपनी यूनिट में लौट जाऊँगा।"

"ठीक है। तुम्हें लड़ाई के मोर्चे से गैरहाजिर नहीं रहना चाहिए।"

अगले दिन सुबह नाश्ता करने के बाद, याओ चाचा और चाची मुझे गाँव के छोर तक छोड़ने आए। वहाँ से जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाता हुआ मैं ल्यूशी गाँव की तरफ चल पड़ा।

ल्यूशी गाँव का रास्ता काउन्टी-केन्द्र से होकर गुजरता था। वहाँ मैं ल्यू लाए-च से मिलने चावल की उस दुकान में गया जहाँ मैं शागिर्द के तौर पर काम कर चुका थां हम दोनों एक दूसरे से मिलकर बहुत ही खुश हुए। उसने मुझे छाती से लगा कर उठा लिया और गौर से मेरी तरफ देखता हुआ बोला, "अच्छा, तो तुम अब एक जन-मुक्ति सैनिक बन गए हो! जरा बताओ तो, उस दिन तुम कैसे भाग निकले थे?चलो, मेरे कमरे में चलें। वहीं अपनी पूरी कहानी सुनाना।"

मैंने उससे पूछा कि अब जबकि सारी काउन्टी मुक्त हो चुकी है, तुम यहीं क्यों पड़े हुए हो?उसने जवाब दिया, "मैं यहाँ रुकना नहीं चाहता था। लेकिन उद्योग-व्यापार संघ और मजदूर संघ ने मुझसे यहीं शहर में रहने का अनुरोध किया है, ताकि यहाँ आगे आने वाले संघर्षों में हिस्सा ले सकूँ।"

"ठीक है। संघर्ष अवश्य जारी रहने चाहिए। ये खून चूसने वाले दरिन्दे, जो कल तक मालिक बने बैठे थे, क्या अपनी हरकतों से बाज आएँगे?भविष्य ने अनेक तूफानी संघर्ष होंगे।" मैंने कहा।

दोपहर के भोजन के समय तक हम दोनों बहुत सी बातें करते रहे। तब ल्यू लाए-च मुझे एक छोटे से रेस्तराँ में ले गया। जब हम खाना खा चुके, तो वह मुझे राजमार्ग तक पहुँचाने आया। मैंने उसका हाथ मजबूती से अपने हाथ में लेकर कहा, "इस बात को हरगिज न भूलना कि हम गरीबों को पहले कितनी मुसीबतें झेलनी

पड़ती थीं, मालिक हमें कितना सताते थे। हमें उनके खिलाफ कठोर संघर्ष चलाने होंगे।''

''मैं यह हरगिज नहीं भूलूँगा,'' ल्यू ने आश्वासन दिया। और तब हमने एक दूसरे से विदा ली। चावल की दुकान पर काम सीखने वाले इस गरीब लड़के को देखकर मुझे पक्का यकीन हो गया कि वह उत्पीड़न करने वालों के खिलाफ, जिन्होंने अभी हार नहीं मानी है, साहस के साथ संघर्ष करेगा।

मैं ल्यूशी गाँव की तरफ चल पड़ा और सूर्यास्त के समय तक वहाँ पहुँच गया। यह था मेरा प्यारा ल्यूशी गाँव! मैं पन्द्रह साल तक अपने गाँव से बाहर रहा था। जैसे-जैसे मैं गाँव के नजदीक पहुँचता गया, मेरे दिल की धड़कन तेज होती गई और चाल अनायास ही धीमी हो गई

पहले मैं गाँव के छोर पर खड़े उस विशाल पेड़ के पास गया जहाँ मेरी माँ शहीद हुई थीं। अन्धेरा हो चुका था। लेकिन मुझे लगा, माँ खड़ी हुई हैं और मुझे आवाज दे रही हैं। मैं उनसे कहना चाहता हूँ, ''माँ, आपका बेटा लौट आया है!''

काफी देर तक मैं उस पेड़ के नीचे खड़ा रहा। मेरे दिल में हू हान-सान के लिए नफरत भरी थी। उसके अपराधों का बदला लेने के लिए मैं बेचैन था। गाँव में बहुत कम लोग दिखाई दे रहे थे। मुझे ताज्जुब हो रहा था कि आज रात यहाँ इतनी शान्ति क्यों है?कहीं हू हान-सान पकड़ा तो नहीं गया! यह पूछने के लिए मैं गाँव की तरफ मुड़ा।

जिस झोंपड़ी में मैं रहता था, वहाँ एक चिराग जल रहा था। दरवाजा थोड़ा-सा खुला हुआ था। मैं अन्दर चला गया और इधर-उधर देखने लगा। जिस घर को मैंने पन्द्रह वर्ष पहले छोड़ा था उसकी बहुत कम निशानियाँ बाकी रह गई थीं। मैं बाहर निकलने ही वाला था कि एक नौजवान वहाँ आ पहुँचा।

''आप किसे ढूँढ़ रहे हैं, कामरेड?'' उसने पूछा।

''मैं इसी गाँव का रहने वाला हूँ,'' मैं बोला, ''मेरा नाम फान चन-शान है।''

''तुङ-च भइया!'' यह कहते हुए वह मेरी बाँह थामने के लिए तेजी से आगे बढ़ा। ''अरे भाई, मैं या-च हूँ।''

मैंने उसका हाथ मजबूती से थाम लिया और बोला, ''हम दोनों कितने बदल गए हैं''

''हाँ, यह सच है,'' या-च ने कहा, ''हम अगर कहीं और मिलते तो एक दूसरे को पहचान भी न पाते। तुम इतने साल कहाँ रहे?और सेना में कब भरती हुए?''

''यह एक लम्बी दास्तान है। फिर कभी बताऊँगा,'' मैंने जवाब दिया, ''पहले मुझे यह बताओ कि तुम लोगों ने हू हान-फान को गिरफ्तार किया या नहीं?''

''अभी नहीं। वह बुड्ढा एक लोमड़ी की तरह मक्कार है। जन-मुक्ति सेना के यहाँ कदम रखते ही वह अपने बेटे के साथ हओशन पहाड़ पर भाग गया। हमने कई बार उन्हें तलाश किया। लेकिन अभी तक पता नहीं लगा पाए।''

हमें किसी भी सूरत में हू को भागने नहीं देना चाहिए।'' मैंने फौरन कहा।

"नहीं, हम उसे हरगिज नहीं भागने देंगे," या-च ने विश्वास के साथ कहा। "उसे पकड़ने में मदद करने जन-मुक्ति सेना की एक यूनिट आज तीसरे पहर यहाँ आ गई है। गाँव के तमाम लोग अपने-अपने घरों से बाहर निकल कर पहाड़ पर से आने वाले हर रास्ते पर पहरा दे रहे हैं। इस बार वह बच कर नहीं जा सकता!

अच्छा तो यह बात है। इसीलिए सारा गाँव खाली पड़ा है!

अभी हम बातें ही कर रहे थे कि हओशान पहाड़ से गोली चलने की आवाज सुनाई दी। "यह गोली की आवाज है!" मैं बोला। "अच्छा, मैं चला!"

"लो, मेरी तलवार लेते जाओ," या-च ने सुझाव दिया। और मैं तलवार लेकर हओशान पहाड़ की तरफ दौड़ पड़ा।

अब तक काफी अन्धेरा हो चुका था। लेकिन हओशान पहाड़ पर जगह-जगह मशालें जल रही थीं जिनकी रोशनी से वह जगह जगमगा रही थी। जैसे ही मैंने पहाड़ पर जाने वाली एक तंग घाटी में प्रवेश किया, एक गम्भीर आवाज ने मुझे ललकारा, "कौन है वहाँ?"

"मैं हूँ," मैंने कहा।

"तुम कौन हो?आवाज एक बड़ी चट्टान के पीछे से आई थी।

"मैं हूँ, तुङ-च," मैंने जवाब दिया।

"कौन?" वह व्यक्ति मेरे करीब आ गया। "क्या सचमुच तुम हो, तुङ-च?"

सुङ चाचा ने मेरा हाथ अपने हाथ में ले लिया और बोले, "तो तुम अभी जीवित हो, सकुशल हो, मेरे बच्चे! और जन-मुक्ति सेना के सैनिक बन गए हो!"

"आप जेल से कब छूटे, चाचाजी?" मैंने पूछा।

"मैं कई महीने तक जेल में बन्द रहा। लेकिन उस लाल शरद में सेक्रेटरी ऊ और उनके छापामार दस्ते ने जेलखाने पर धावा बोल कर हमें छुड़ा लिया। तब से मैं छापामार दस्ते के साथ मिलकर लड़ाई में हिस्सा ले रहा हूँ।"

"सेक्रेटरी ऊ यहीं हैं क्या?"

"वे प्रान्तीय राजधानी गए हुए हैं। कल लौटेंगे।"

मैं और कुछ कहने जा रहा था कि अचानक पास ही कहीं से एक बार फिर गोली चलने की आवाज आई "चट्टान की ओट में हो जाओ," सुङ चाचा ने सुझाव दिय और हम दोनों चट्टान के पीछे चले गए।

एक बार फिर किसी ने फायर किया। और तब एक आकृति दिखाई दी।

"कौन है वहाँ?" सुङ चाचा ने ललकारते हुए पूछा।

उस व्यक्ति ने उत्तर नहीं दिया बल्कि बाँस के झुरमुट में जा घुसा।

मैं उस काली आकृति की खोज में चल पड़ा। पीछे-पीछे सुङ चाचा और कुछ नौजवान लड़के भी थे। हमने बाँस के झुरमुट को छान मारा लेकिन हमारा शिकार लापता हो गया था। तभी मैंने सुङ चाचा की टार्च की

रोशनी में कुछ रौंदी हुई घास और पाँव के निशान देखे, जो एक टूटी-फूटी दीवार की तरफ जा रहे थे। हम लोग दीवार फाँदकर अहाते में जा पहुँचे। मैंने एक पत्थर मारा लेकिन कोई हरकत नहीं दिखाई दी। मैं दीवार पर चढ़ गया। उसी क्षण मैंने किसी को पश्चिम की तरफ़ से दीवार फाँद कर भागते देखा।

"ठहरो!" मैं चिल्लाया।

लेकिन वह व्यक्ति भाग गया।

जब मैं दीवार से नीचे कूदा तो एक गोली सनसनाती हुई मेरे कान के पास से निकल गई गोली की चमक में मैंने देखा बन्दूक चलाने वाला मेरे करीब ही खड़ा है। "तुम बचकर कहाँ जाओगे?" मैंने ललकारा और तलवार लेकर उस पर झपट पड़ा। मेरा पहला वार खाली गया और एक गोली मेरी बाँह को छीलती हुई निकल गई टार्च की रोशनी अचानक मेरे प्रतिद्वन्द्वी के चेहरे पर पड़ी। उसने चकमा देकर निकल भागना चाहा। लेकिन मैं उस पर टूट पड़ा। बन्दूक वाले हाथ पर मैंने कस कर प्रहार किया। उसके मुँह से एक चीख निकली और बन्दूक हाथ से छूट कर जमीन पर गिर पड़ी।

एक पाँव से बन्दूक को दबाते हुए, मैंने टार्च की रोशनी में उसकी घिघियाती सूरत देखी। वह एक किसान के लिवास में था और सिर पर एक फटा-पुराना फैल्ट का टोप पहने था।

"सिर ऊपर उठाओ।" सुङ चाचा ने हुक्म दिया।

उस आदमी ने सिर ऊपर नहीं उठाया। इसलिए मैं उसके पास जा पहुँचा। लेकिन इससे पहले कि मैं यह देख पाता वह कौन है, वह मेरे ऊपर झपट पड़ा। उसने तलवार मेरे हाथ से छीनने की कोशिश की। मगर पलक मारते ही मैंने अपनी तलवार छुड़ा ली।

मैंने फैल्ट का टोप उसके सिर से नीचे गिरा दिया। उसने सिर उठा कर ऊपर देखा। चेहरे पर नजर पड़ते ही मैंने उसे पहचान लिया। वह हू हान-सान था।

अपने पुराने दुश्मन को सामने देखकर मेरे दिल में बेइन्तहा नफरत भड़क उठी। मैंने गरजते हुए कहा, "आँखें उठाकर देख, हू हान-फान मैं कौन हूँ!"

हू ने आँखें उठाकर मेरी तरफ देखा और काँपने लगा। दूसरे ही क्षण वह मिट्टी के कच्चे ढाँचे की तरह जमीन पर गिर पड़ा।

इतने में किसी की आवाज सुनाई दी, "वह देखो हू हान-सान का बेटा भी पकड़ा जा चुका है।" जमीन पर पड़े हुए हू हान-सान के चारों ओर लोगों की भीड़ जमा हो गई मशालों की रोशनी से रात भी दिन जैसी दीखने लगी। मैंने हू हान-सान को जमीन से उठाते हुए कड़क कर कहा, "ओ शैतान के बच्चे, तुझे लोगों के खून का कर्जा चुकाना है। तुझे जनता की अदालत में पेश होना पड़ेगा।"

हू हान-सान के पकड़े जाने से लोगों में खुशी की लहर दौड़ गई उस पर सार्वजनिक रूप से जनता की अदालत में मुकदमा चलाए जाने की माँग ऊपर से अधिकारियों ने एकदम मंजूर कर ली।

जिस दिन हू पर सार्वजनिक रूप से जनता की अदालत में मुकदमा चलाया जाने वाला था, उस दिन हमने

उसी पेड़ के नीचे एक अस्थायी मंच बना लिया जहाँ मेरी माँ की हू हान-सान ने हत्या की थी। बहुत से क्रान्तिकारी योद्धओं के इस हत्यारे पर आज यहाँ जनता मुकदमा चलाने वाली थी।

जनता की अदालत में मुकदमा शुरू होने से ठीक पहले, सुङ चाचा से सड़क पर कुछ लोगों के समूह की ओर इशारा किया और मुझसे पूछा, "क्या तुम उनमें से किसी को पहचानते हो?"

उनमें सेक्रेटरी ऊ भी थे। उन्हें देख कर मेरी खुशी का ठिकाना न रहा। मैं लपक कर उनके पास जा पहुँचा और बोला, "ऊ भइया! आपने मुझे पहचाना?"

सेक्रेटरी ऊ ने मुझे ऊपर से नीचे तक गौर से देखा। "अच्छा तो तुम हो, तुङ-च! तुम तो जन-मुक्ति सेना के सिपाही बन कर लौटे हो!" मुझसे मिलकर वे भी बेहद खुश हुए।

"पिछले कई वर्षों से मैं आपका पता लगाने की कोशिश कर रहा था," मैंने कहा।

"और हम लोगों ने भी चावल की दुकान से तुम्हारे भाग निकलने के बाद हर जगह तुम्हारी तलाश की," सेक्रेटरी ऊ बोले।

"अगर याओ चाचा की मदद न मिलती, तो पता नहीं दुश्मन के शिकंजे से मैं कैसे निकलता।"

"क्रान्ति का पौधा तो कहीं भी जड़ पकड़ लेगा।" ऊ भइया बोले। "दुश्मन कभी भी हमारा सफाया नहीं कर सकता। इस नमूने को नहीं देखते?" सेक्रेटरी ऊ ने अस्थायी मंच पर मौजूद हू हान-सान की तरफ इशारा करते हुए कहा। "यह और इसके जैसे दूसरे लोग शरद काल की टिड्डियों की तरह हैं—दो-चार बार उछल-कूद की और फिर खत्म!"

"जनता के सभी दुश्मनों का ऐसा ही अन्त होता है," मैंने कहा।

"अच्छा, मैं तुम्हें एक खुशखबरी सुना दूँ," सेक्रेटरी ऊ बोले, "हमारे पास तुम्हारे पिताजी का पत्र आया है।"

"तो क्या आपने मेरे पिताजी का पता लगा लिया?" मुझे अपने कानों पर यकीन न हुआ। "वे इस समय कहाँ हैं?"

"चीनान में," यह कहते हुए सेक्रेटरी ऊ ने अपनी जेब से एक पत्र निकाल लिया। "अब वे एक डिप्टी डिवीजन कमाण्डर हैं।"

मेरी आँखों के सामने पिताजी का चित्र उभर आया—दरमियाना कद, गठा हुआ बदन, लाल सितारे वाली अठकोनी टोपी के हुड के नीचे चमकती बड़ी-बड़ी आँखें, पीठ पर लाल रेशमी झालर वाली तलवार और कमर पर बीस राउण्ड वाली माऊजर पिस्तौल। मेरे पिताजी एक मामूली से किसान थे, जिन्हें उत्पीड़न से मजबूर होकर क्रान्तिकारी संघर्ष में कूदना पड़ा था। और अब उन्हें क्रान्तिकारी फौजों की एक समूची डिवीजन की कमान सम्भालने की जिम्मेदारी सौंप दी गई थी।

"उन्होंने तुम्हारी माँ और तुम्हारे बारे में खबर भेजने को लिखा है। उन्होंने तुम्हें चीनान बुलाया है," सेक्रेटरी ऊ ने आगे कहा।

"माँ!" मैंने उस विशाल पेड़ की तरफ देखा। काश, मेरी माँ हमारे मुक्त गाँव में फहराते लाल झण्डों को देख पातीं! काश, वे उस पेड़ के पास फहराती लाल पताकाओं को देख पातीं जहाँ उन्होंने प्राणोत्सर्ग किया था। काश, वे वायुमण्डल में गूँजते विजय-गीतों का जुझारू संगीत सुन पातीं!

जनता की अदालत में मुकदमा सुबह शुरू हुआ और दोपहर तक चलता रहा। हू हान-सान को अदालत ने मौत की सजा सुनाई और ऐलान किया कि इस फैसले पर फौरन अमल किया जाय।

विजय की इस बेला में मित्रों और कुटुम्बी-जनों का पुनर्मिलन कितनी खुशी की बात थी। लोगों को एक दूसरे से न मालुम कितनी बातें करनी थीं। ऊ भइया, सुङ चाचा, या-च और कुछ अन्य मित्र मेरे पुराने घर में इकट्ठे हो गए। हम लोग आधी रात तक बातें करते रहे।

जब वे चले गए, तो मैं चिराग के पास बैठा सोचने लगा कि पिताजी से मिलने चीनान जाऊँगा या नहीं। मैंने अपनी पोटली खोली जिसे मैं अपने साथ लाया था, और माँ का कोट व लाल सितारा बाहर निकाल कर उसे फिर एक बार गौर से देखने लगा। अचानक मुझे वह गोली याद आ गई जो मुझे पिताजी ने दी थी। पता नहीं वह अब भी अनार के पेड़ के नीचे, जहाँ उसे माँ ने गाड़ दिया था, दबी पड़ी है या नहीं।

मैंने एक कुदाली ली और लालटेन उठाकर अनार के पेड़ के पास जा पहुँचा। पेड़ के नीचे जमीन खोद कर मैंने गोली की खोज शुरू कर दी। आखिर गोली मुझे मिल गई गोली पन्द्रह वर्ष तक वहाँ दबी पड़ी रही! बचपन में कितना भोला था मैं। सोचता था, पिताजी आज श्वेत रक्षकों के खिलाफ लड़ने गए हैं तो कल जीत कर लौट आएँगे। उस समय मैं बिल्कुल नहीं समझ सकता था कि यह एक भूकम्पकारी संघर्ष है जिसमें शोषित वर्ग सत्तारूढ़ प्रतिक्रियावादी शासकों का तख्ता पलट देंगे, और यह कि ऐसा संघर्ष न तो अल्पकालीन होता है ओर न निर्विघ्न। गोली को हाथ में लेते ही मुझे पिताजी की बात स्मरण हो आई : "याद रखो, जब तुम बड़े हो जाओ और अगर श्वेत रक्षक तब भी बचे रहें, तो तुम्हें उनके खिलाफ लड़ाई लगातार जारी रखनी चाहिए।" अब मैं बड़ा हो गया हूँ। लेकिन सभी श्वेत रक्षकों का सफाया नहीं किया जा सकता। मुझे मोर्चे पर जाकर लड़ाई जारी रखनी चाहिए। बेशक, मैं अपने पिताजी से मिलने के लिए बेचैन हूँ। लेकिन अगर उन्हें मालूम हो जाए कि अब मैं जन-मुक्ति सेना का सिपाही हूँ, तो यह निश्चित है कि वे मुझे मोर्चे पर जाने का आदेश देने में बिल्कुल नहीं हिचकिचाएँगे। यह सोचकर मैं अन्दर गया, अपने सामान में से कागज और कलम निकाला और चिराग की रोशनी में चमकते लाल सितारे को मेज पर रख कर पिताजी को पत्र लिखने बैठ गया :

मेरे प्यारे पिताजी,

माँ और मेरे नाम आपका पत्र मिला। लेकिन माँ उसे शायद कभी नहीं पढ़ पाएँगी क्योंकि आज से चौदह वर्ष पहले वे क्रान्ति के लिए अपना जीवन न्यौछावर कर चुकी हैं! माँ एक श्रेष्ठ कम्युनिस्ट थीं, हालाँकि पार्टी में शामिल होने के दो दिन बाद ही वे शहीद हो गई थीं उनकी वीर-गाथा इन तमाम वर्षों में हमें प्रेरणा देती रही है।

आपके जाने के बाद, माँ ने दुश्मन के खिलाफ संघर्ष करना कभी नहीं छोड़ा। वे संघर्ष की आग में तपकर फौलाद बन गईं! जन-समुदाय को गोलबन्द करने के लिए वे गाँव वापस लौट गईं, जहाँ एक कामरेड को दुश्मन

के हाथ में पड़ने से बचाते समय उन्हें पकड़ लिया गया। दुश्मन उनसे कुछ भी नहीं निकाल पाया। इसलिए उसने गाँव के पूर्वी छोर पर ले जाकर उन्हें एक बड़े पेड़ से बाँध दिया और नीचे से आग लगा दी।... इस प्रकार उन्होंने वीरगति पाई।

बचपन की घटनाओं की याद अब भी मेरे दिमाग में ताजा है। प्यारे पिताजी! आँख बन्द करते ही आपकी शक्ल मेरी आँखों के सामने उभर आती है। मैं उस बात को कभी नहीं भूल सकता जो आपने खून से सनी हुई गोली मेरे हाथ में देते हुए मुझसे कही थी : जब तुम बड़े हो जाओ, तो इन घृणित श्वेत रक्षकों के खिलाफ लड़ाई जारी रखना। मैं यह कभी नहीं भूल सकता कि दर्द दूर करने वाली दवा का आखिरी एम्प्यूल आपने एक अन्य घायल लाल सैनिक को दे दिया था, जबकि आपको खुद उसकी सख्त जरूरत थी। आपने मुझे शिक्षा दी है कि मैं अपने कामरेडों और अपने वर्ग-बन्धुओं को प्यार करूँ। प्यारे पिताजी, लेनिन प्राइमरी स्कूल की जो किताब आपने मुझे दी थी वह मैंने पढ़ डाली। मैंने उसे लेनिन प्राइमरी स्कूल में नहीं बल्कि एक ऐसे क्रान्तिकारी बुजुर्ग के घर पर पढ़ा जो एक झोंपड़ी में रहते थे। जिस संघर्ष में हम लोग उस समय जूझे हुए थे, उससे मुझे इस किताब के पाठ ज्यादा अच्दी तरह समझने में मदद मिली। प्यारे पिताजी, वह लाल सितारा, जिसे आपने मुझे दिया था, आज भी मेरे पास सुरक्षित है। न मालूम कितनी बार मैंने उसे निकाल-निकाल कर देखा है! जब भी मैं उसे देखता हूँ, अपने को आपके बहुत करीब पाता हूँ। जब मैं रात में येनान की तरफ कूच करते समय ध्रुवतारे का अनुसरण कर रहा था, जब मैं मुक्ति सेना को खोजते हुए तूफानी याङत्सी नदी को तैर कर पार कर रहा था, तो यह लाल सितारा बराबर मेरे पास मौजूद था। पिछले पन्द्रह वर्षों से मैंने इस लाल सितारे को अपने पास सम्भाल कर रखा है। इसने मेरे अन्दर आत्मविश्वास, आशा और साहस का संचार किया है; इसने मुझे आपके नक्शेकदम पर चलते हुए संघर्ष के बीच जिन्दा रहने और अविचल बने रहने का प्रेरणा दी है। आपको अपनी याद दिलाने के लिए, अब मैं यह लाल सितारा आपके पास वापस भेज रहा हूँ। पन्द्रह वर्ष बीत गए! लेकिन यह लाल सितारा आज भी उसी तरह चमक रहा है।

माँ की मृत्यु के बाद, मैं कुछ समय तक ऊ भ़इया और छापामार दल के साथ रहा। उसके बाद सुङ चाचा ने और बाद में याओ चाचा ने मुझे अपने पास रखा। इन अनेक वर्षों में जन-समुदाय ने ही मेरी परवरिश की है।

माँ-बाप ने मुझे जन्म दिया; जन-समुदाय ने मेरी परवरिश की; पार्टी मुझे शिक्षित करती रहती है और आगे बढ़ने के लिए मेरा मार्गदर्शन करती रहती है। मैंने लाल झण्डे के नीचे शपथ ग्रहण की है और अब चीनी कम्युनिस्ट पार्टी का सदस्य बन गया हूँ। पुरानी दुनिया की जंजीरें तोड़ने के लिए, मैं शोषित-पीड़ित जनता के हित मे संघर्ष करता रहूँगा! मैं एक सच्चा कम्युनिस्ट बनने की कोशिश करूँगा!

माँ ने एक बार कहा था, "अध्यक्ष माओ हमारे अनन्य नेता हैं!" उन्होंने यह बात उस समय कही जब बहुत पहले 1935 में चुनई सम्मेलन में अध्यक्ष माओ का नेतृत्व स्थापित हो गया था। उनके शब्द कितने सही साबित हुए हैं। आज हमें जो जीतें हासिल हुई हैं वे सब अध्यक्ष माओ के नेतृत्व का ही परिणाम हैं। प्यारे पिताजी, अगर आपको अध्यक्ष माओ से मुलाकात करने का अवसर मिले, तो माँ की और मेरी असीम सर्वहारा प्रेम की भावना उन तक अवश्य पहुँचा दें!

जन-मुक्ति सेना में शामिल हुए मुझे अब दो वर्ष हो चुके हैं। आपने मुझे चीनान आकर मिलने की सलाह दी है। लेकिन अभी मेरी योजना वहाँ आने की नहीं है, क्योंकि मैं यहाँ से फौरन ही मोर्चे पर जाना चाहता हूँ। जब समूचा देश मुक्त हा जाएगा, तभी मैं आपसे मिलने आऊँगा। मैं नहीं समझता कि वह दिन अब ज्यादा दूर है।

माँ मेरे लिए अपना कोट छोड़ गई हैं, जिसे मैंने इन पन्द्रह वर्षों में बड़े जतन से रखा है। लाल सितारे के साथ ही मैं इसे भी आपके पास भेज रहा हूँ। यह कोट आपके दिल में मेरी उस बहादुर माँ की याद हमेशा संजोये रखेगा जो शहीद होने के दिन तक एक फौलादी योद्धा बनी रहीं।

पौ फट चुकी है और मैं अपनी यूनिट में वापस जा रहा हूँ। वहाँ से आपको फिर पत्र लिखूँगा।

क्रान्तिकारी अभिवादन सहित,

आपका बेटा,

चन-शान (तुङ-च)

मैंने चिराग बुझा दिया और चिट्ठी मोड़ कर लिफाफे में बन्द कर दी। इसके बाद माँ का कोट और लाल सितारे को लपेट कर एक पैकेट बनाया और सुई-धागे से उसे सी दिया। तभी सेक्रेटरी ऊ और सुङ चाचा दरवाजे पर आ पहुँचे।

"मैं फिलहाल चीनान नहीं जाऊँगा," मैंने उन्हें बताया। मैं अपनी यूनिट में वापस जा रहा हूँ जब पूरा देश मुक्त हो जाएगा..."

"तभी बाप-बेटे का पुनर्मिलन होगा," सेक्रेटरी ऊ ने वाक्य पूरा करते हुए कहा।

मैंने हँसते हुए सिर हिला कर सहमति प्रकट की और सेक्रेटरी ऊ से अनुरोध किया कि मेरी चिट्ठी और पैकेट डाक से चीनान भिजवा दें। बड़ी भावना में आकर उन्होंने मेरा अनुरोध स्वीकार कर लिया।

सुबह नाश्ता करने के बाद, मैंने गाँववासियों और अपने पुराने घर से विदा ली और नई लड़ाइयों में हिस्सा लेने फिर एक बार मोर्चे की तरफ चल पड़ा।

■

अनुराग ट्रस्ट